● वर्ष-3
● अंक-167
रायपुर, बुधवार
21 फरवरी 2024
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगछध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› हर साल इस दिन सूर्यदेव खुद ....

पूरे प्रदेश में होगी डायल 112 सेवा

रायपुर। विधानसभा में आज गृह, जेल, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की अनुदान मांगे पारित की गई। उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने पूरे प्रदेश में डायल 112 की सेवाएं शुरू करने, प्रदेश के सभी 11 हजार से अधिक पंचायतों को महिला सदन और अमृत सरोवर (तालाब) निर्माण की घोषणा की। उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने अनुदान मांगों की चर्चा में कहा कि पिछले पांच वर्षों में पुलिस विभाग का मनोबल गिरा हुआ था, हमारी सरकार ने पुलिस और आम जनता के बीच संवाद को बढ़ाने की पहल की। साथ ही अपराधियों में पुलिस का खौफ कायम करने की दिशा में भी काम किया है। उप मुख्यमंत्री उन्होंने बालोद जिले के ग्राम चीचा के मृतक श्री तोरण साहू के परिजन को 5 लाख रूपए देने के साथ ही बिलासपुर में नये फायर स्टेशन की स्थापना की घोषणा की।

उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि नई पीढ़ी को मजबूत करने से ही समाज मजबूत होगा। पिछली सरकार की गलत नीतियों के कारण युवाओं और समाज में नशा का कारोबार बढ़ा था। हमारी सरकार नशे के विरूद्ध प्रबलता के साथ कार्रवाई कर रही है। नशे के चैनल को तोड़ने के लिए दिल्ली, मुम्बई तक जाकर नशे के खिलाफ सख्ती से कार्रवाई की गई है। उन्होंने गृह एवं जेल विभागों के अनुदान मांगों पर चर्चा करते कहा कि हमारी सरकार ने बजट में ऐसा प्रावधान किया है कि जेल सिर्फ बंदी गृह ना रहे बल्कि सुधार गृह के रूप में आगे बढ़े। इसीलिए कैदियों को उनके रूचि के अनुरूप विभिन्न ट्रेडों में कौशल उन्नयन किया जा रहा है। ताकि वे जब जेल से बाहर निकलने तो उनके हाथ में कुछ पैसे हो, उनके पास हुनर हो और स्व-रोजगार की दिशा में आगे बढ़ सके। इससे जेल से निकलने के बाद कैदी सभ्य समाज में अच्छी जिंदगी जी सकेंगे।

उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने सदन में माओवादी आंतकवाद की समस्या पर कहा कि हमारे जवान विषम परिस्थितियों में भी बहादुरी से माओवादी-आतंक का सामना कर रहे है। इस समस्या के उन्मूलन के लिए राज्य सरकार द्वारा ऑपरेशन में जाने वाले राज्य पुलिस बल के लिए उच्च गुणवत्तायुक्त रेडी-टू-ईट फूड प्रदाय करने के लिए 01 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। उन्होंने कहा कि माओवादी द्वारा जंगलों में लगाए गए स्पाईक एवं आईईडी से हमारे जवानों को पिछले कई वर्षों से नुकसान हो रहा है। इसके निजात के लिए जवानों के गश्त के दौरान स्पाईक रेजिस्टेंस बूट उपलब्ध कराने के लिए 02 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। इसके साथ ही विशेष अधोसंरचना योजना के लिए 60 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है, जिसके तहत अधोसंरचना निर्माण के साथ-साथ नवीन हथियार गोला-बारूद उपकरण, ड्रोन एवं अन्य हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर क्रय किया जा सके। इसी तरह प्रतिपूर्ति योग्य सुरक्षा संबंधी व्यय के लिए 321 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। सर्चिंग के दौरान पुलिस पार्टी घने जंगलों में गश्त करती है, जहां सामान्य रूप से उपलब्ध संचार के उपकरण कार्य नहीं करते इसको ध्यान में रखते हुए जवानों के लिए आईसेट फोन खरीदी हेतु 01 करोड़ 52 लाख रूपए का प्रावधान किया गया है।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के लिए हमारी सरकार प्रतिबद्ध है। महिला संबंधी अपराधों के प्रति गंभीरता को देखते हुए अपराधों को देखते हुए राजनांदगांव, कबीरधाम, रायगढ़, जशपुर और जगदलपुर जिलों में नवीन महिला थाना स्थापना के लिए 300 नवीन पदों का प्रावधान किया गया है।

300 रीपा में हुए व्यय की जांच होगी

उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने कहा कि पूरे प्रदेश में स्थापित किए गए 300 रीपा की स्थापना में हुए व्यय की जांच मुख्य सचिव की अध्यक्षता में समिति का गठन करके जांच की जाएगी, लेकिन रीपा से जुड़े स्व सहायता समूह का लंबित भुगतान नहीं रोका जाएगा। उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार प्रदेश के गरीबों को पक्का आवास उपलब्ध कराने के लिए तत्परता के साथ कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत प्रदेश के 18 लाख से अधिक परिवारों के लिए पीएम आवास की स्वीकृति प्रदान की है। इसके लिए इस वित्तीय वर्ष में 8,369 करोड़ रूपए की बजट के साथ कुल 12,206 करोड़ रूपए का प्रावधान अब तक किया गया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाभियान (पीएम जनमन योजना) के अंतर्गत

देश का चौथा साईंस सेंटर खुलेगा रायपुर में

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की चर्चा करते हुए कहा कि देश में तीन साईंस सेंटर है, चौथा साईंस सिटी छत्तीसगढ़ के राजधानी रायपुर में बनाया जाएगा। इसके लिए 34 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ के सूरजपुर जहां से कर्क रेखा गुजरती है वहां एस्ट्रोपार्क की स्थापना करने के लिए 02 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। इसके साथ ही बड़े निर्माण कार्यों में सेटेलाईट फोटो खिचने की व्यवस्था की गई है। सेटेलाईट व्यवस्था के तहत 5 दिन के अंदर बड़े निर्माण कार्यों की प्रगति की जानकारी प्राप्त की जा सकेगी। इसके साथ ही बजट में यह भी प्रावधान किया गया है कि ऐसे कोई व्यक्ति या विद्यार्थी अपने उत्पाद अथवा प्रक्रिया को पेटेंट कराना चाहते हैं तो सीजी रिजनल साईंस सेंटर में सम्पर्क कर सकते हैं, इसके लिए पृथक से मोबाइल नंबर जारी किया जाएगा।

तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार विभाग

उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार विभाग के अनुदान मांगों पर चर्चा करते हुए कहा कि प्रदेश में 310 आईटीआई संचालित हैं। इसमें 197 शासकीय आईटीआई है, इन शासकीय आईटीआई केन्द्रों के उन्नयन हेतु 52.59 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। उन्होंने बताया कि हमारी सरकार 105 आईटीआई जो एससीव्हीटी स्तर के है, उसे एनसीव्हीटी के रूप में उन्नयन करने का भी प्रावधान इस बजट में किया गया है। उन्होंने बताया कि इससे प्रदेश के प्रशिक्षण प्राप्त विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर पर रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

भिलाई आईआईटी का स्थाई परिसर राष्ट्र को समर्पित

प्रधानमंत्री ने कवर्धा और कुरुद केन्द्रीय विद्यालय के नवनिर्मित भवनों का किया ऑनलाइन लोकार्पण

रायपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भिलाई स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) के स्थाई परिसर को राष्ट्र को समर्पित किया। उन्होंने जम्मू में आयोजित वर्चुअल कार्यक्रम में आईआईटी भिलाई के साथ ही कुरुद और कवर्धा में केन्द्रीय विद्यालय के नए बने भवनों का भी लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय भिलाई आईआईटी से ऑनलाइन लोकार्पण कार्यक्रम में जुड़े। उन्होंने भिलाई के उच्च तकनीकी राष्ट्रीय संस्थान आईआईटी के स्थाई परिसर को राष्ट्र को समर्पित करने के लिए प्रधानमंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया। करीब 400 एकड़ में संस्थान का कैंपस विकसित किया जा रहा है। सांसद श्री विजय बघेल, विधायक श्री डोमन लाल कोर्सेवाड़ा और श्री ललित चन्द्राकर, पूर्व मंत्री श्री प्रेमप्रकाश पाण्डेय, श्रीमती रमशीला साहू, भिलाई आईआईटी के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के चेयरमैन श्री के. वेंकटरमनन और निदेशक प्रो. राजीव प्रकाश भी लोकार्पण कार्यक्रम से वर्चुअली जुड़े। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने भिलाई आईआईटी में आयोजित लोकार्पण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ के लिए आज गौरव का दिन है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज जम्मू से देश के लिए 32 हजार करोड़ रुपए की 220 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण, शिलान्यास और उद्घाटन किया है। इनमें छत्तीसगढ़ की भी तीन शैक्षणिक संस्थाएं शामिल हैं। मैं प्रधानमंत्री को इसके लिए धन्यवाद देता हूं और उनके प्रति आभार प्रकट करता हूं।

कांग्रेस देश की परंपराओं का सम्मान नहीं कर सकती-अमित शाह

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री और भाजपा नेता अमित शाह ने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा है। जयपुर में प्रबुद्ध जन सम्मेलन को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि कांग्रेस हमेशा देश की परंपराओं और गौरव का अपमान करती है। हम भाषाओं का सम्मान करते हैं तो... वो विरोध करते हैं, हम अपनी संस्कृति का सम्मान करते हैं और उसे आगे बढ़ाते हैं तो... वो विरोध करते हैं। उन्होंने कहा कि हम परंपराओं का सम्मान कर सेंगोल को स्थापित करते हैं तो... वो विरोध करते हैं। क्योंकि जिनके मूल ही इटली में हो, वो देश की परंपराओं का सम्मान नहीं कर सकता है। अपना हमला जारी रखते हुए शाह ने कहा कि जो राहुल गांधी एक साल में 3 महीने विदेश में जाकर छुट्टी मनाते हैं, वो देश का क्या भला कर सकते हैं। उन्होंने ककहा कि एक तरफ एक साल में 3 महीने विदेश में छुट्टी मनाने वाला नेतृत्व है और दूसरी तरफ 23 साल तक एक भी दिन छुट्टी न लेने वाला कर्मयोगी...नरेन्द्र मोदी हैं, जो सिर्फ देश की जनता की भलाई के बारे में सोचते हैं। उन्होंने कहा कि देश के लोकतंत्र का चार नासूरों ने ग्रसित किया- परिवारवाद, तुष्टिकरण, भ्रष्टाचार और जातिवाद। उन्होंने कहा कि मोदी जी ने 10 के अंदर परिवारवाद को समाप्त किया, तुष्टिकरण को समाप्त किया, जातिवाद को समाप्त किया, भ्रष्टाचार को समाप्त किया। भाजपा नेता ने कहा कि मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा का एकमात्र उद्देश्य है- दुनिया में भारत पहले हो। भारत विश्वगुरु बने। वहीं इंडी अलायंस है- सोनिया गांधी का लक्ष्य है- राहुल गांधी को प्रधानमंत्री बनाना। लालू जी का लक्ष्य है- अपने बेटे को मुख्यमंत्री बनाना। उद्धव जी और स्टालिन जी का है- अपने बेटे को मुख्यमंत्री बनाना। ममता बनर्जी का लक्ष्य है अपने भतीजे को मुख्यमंत्री बनाना। मुलायम सिंह अपने बेटे को मुख्यमंत्री बनाकर गए, लेकिन वो संभाल नहीं पाए। लेकिन फिर से अखिलेश जी मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं। शाह ने कहा कि आप सब प्रबुद्धजनों के माध्यम से राजस्थान की जनता का धन्यवाद भी करने आया हूं और आशीर्वाद भी मांगने आया हूं। 2014 में आपने कमल से मेरी झोली भर दी, 25 की 25 सीटों पर आपने विजयी दिलाई। उन्होंने कहा कि 2019 में भी आपने सभी सीटों पर जीत दिलाई। हाल ही में आपने विधानसभा में भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई। इसके लिए धन्यवाद देता हूं। आशीर्वाद इसलिए मांगने आया हूं कि 10 साल के अंदर भारत को पाताल से आसमान तक पहुंचाने का काम श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया है।

रायपुर। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने छत्तीसगढ़ के जिला कबीरधाम जिले के महराजपुर और धमतरी जिले के कुरूद विकासखंड के ग्राम चर्रा में नवनिर्मित केन्द्रीय विद्यालय भवन और नारायणपुर के ग्राम सुपगाँव में नवनिर्मित नवोदय विद्यालय भवन का वर्चुअल उद्घाटन किया। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री मोदी ने जम्मू-कश्मीर में आयोजित कार्यक्रम में देश के विभिन्न स्थानों में निर्मित 25 केंद्रीय विद्यालयों का वर्चुअल उद्घाटन किया।

प्रमुख समाचार

राज्यसभा के लिए निर्विरोध चुने गए जेपी नड्डा - सोनिया गांधी

नई दिल्ली। राज्यसभा में अपना पहला कार्यकाल चिह्नित करते हुए, वरिष्ठ कांग्रेस नेता सोनिया गांधी मंगलवार को राजस्थान से राज्यसभा के लिए निर्विरोध चुनी गईं। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा गुजरात से राज्यसभा के लिए निर्विरोध चुने गए हैं। 77 वर्षीय कांग्रेस नेता ने स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के कारण आगामी लोकसभा चुनाव नहीं लड़ने की घोषणा के बाद 14 फरवरी को जयपुर में अपना राज्यसभा नामांकन दाखिल किया। लोकसभा में रायबरेली का प्रतिनिधित्व करने वाली सोनिया गांधी सांसद के रूप में पांच कार्यकाल पूरा करने के बाद अगला आम चुनाव नहीं लड़ेंगी। उस समय कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभालने के बाद वह पहली बार 1999 में चुनी गईं। उधर, राजस्थान में बीजेपी के चुन्नीलाल गडासिया और मदन राठौड़ भी निर्विरोध चुने गए। बिहार के सभी 6 उम्मीदवार राज्यसभा के लिए निर्विरोध निर्वाचित हो गए हैं। विधानसभा में भारी बहुमत के कारण गुजरात से भाजपा के ही चारों नेता राज्यसभा पहुंचे हैं।

वन नेशन-वन इलेक्शन पर भाजपा ने साफ किया अपना रुख

नई दिल्ली। वन नेशन, वन इलेक्शन को लेकर भाजपा ने अपना रुख साफ किया है। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने आज पार्टी का नजरिया उच्च स्तरीय समिति के सामने रखा। इसके बाद उन्होंने कहा कि आज हमने एक राष्ट्र एक चुनाव पर पार्टी का नजरिया उच्च स्तरीय समिति के सामने रखा। हमने बहुत स्पष्ट रूप से कहा कि आदर्श आचार संहिता विभिन्न स्तरों पर और अलग-अलग समय पर होने वाले चुनावों के कारण लागू होती है। इसका असर प्रशासन और सुशासन पर पड़ता है, साथ ही लोगों के विकास की गति भी धीमी हो जाती है। पार्टियों पर आर्थिक बोझ भी पड़ता है और भ्रष्टाचार का कारण भी बनता है। नड्डा ने आगे कहा कि सीमा पर आंतरिक और बाहरी सुरक्षा के लिए तैनात किए जाने वाले सुरक्षा बल बार-बार चुनावों के लिए राज्यों में तैनात किए जाते हैं। उन्होंने कहा कि बीजेपी ने यह बात रखी है कि जन प्रतिनिधि कानून में आम सहमति से बदलाव किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची में एक फोटो पहचान पत्र, जो लोकसभा, विधानसभा एवं पंचायत के लिए मान्य हो। एक मतदाता सूची होनी चाहिए। चुनाव एक ही समय में होने चाहिए। आखिरकार, ये तीन चुनाव एक ही समय में होने चाहिए।

इंड गठबंधन में सीट बंटवारे पर बातचीत जारी: वेणुगोपाल

नई दिल्ली। कांग्रेस ने आज (20 फरवरी) कहा कि इंडिया ब्लॉक की अन्य पार्टियों के साथ सीट बंटवारे पर बातचीत जारी है और किसी भी समय चीजों को अंतिम रूप दिया जाएगा। कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने कहा कि हम प्रक्रिया पर हैं। हमारी गठबंधन टीम वहां मौजूद है और कांग्रेस अध्यक्ष ने गठबंधन के लिए नेताओं की एक टीम नियुक्त की है।% उन्होंने कहा कि वे दिन-प्रतिदिन सभी के साथ चर्चा कर रहे हैं। उन्होंने मंगलवार को राष्ट्रीय राजधानी में पार्टी मुख्यालय में मीडिया से कहा, चर्चा चल रही है। इसे किसी भी समय अंतिम रूप दिया जाएगा। कुछ समय इंतजार करें। इस चर्चा के बीच कि समाजवादी पार्टी (सपा) उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को लगभग 17 लोकसभा सीटों की पेशकश कर रही है, उन्होंने कहा, हमें बहुत उम्मीद है, कोई समाधान निकलेगा। सूत्रों ने कहा कि कांग्रेस और सपा के नेताओं के बीच चर्चा जारी है और आखिरी दौर की बातचीत कल रात हुई। सपा ने सोमवार को आगामी आम चुनाव के लिए उत्तर प्रदेश से 11 और उम्मीदवारों की घोषणा की थी.

चंडीगढ़ के मेयर होंगे आप के प्रत्याशी कुलदीप कुमार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने भाजपा को बड़ा झटका देते हुए आप के कुलदीप कुमार को चंडीगढ़ का मेयर निर्वाचित घोषित किया। सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया कि जिन 8 वोटों को अवैध माना गया था, उन्हें आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार कुलदीप कुमार के पक्ष में वैध रूप से पारित कर दिया गया और कहा गया कि उनके लिए आठ वोटों की गिनती करने पर उनके पास 20 वोट हो जाएंगे। सुप्रीम कोर्ट का कहना है, हम निर्देश देते हैं कि पीठासीन अधिकारी द्वारा चुनाव परिणाम को रद्द किया जाए। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली तीन-न्यायाधीशों की पीठ ने कहा कि रिटर्निंग ऑफिसर अनिल मसीह द्वारा अमान्य किए गए आठ मतपत्र वैध थे और वे आप के मेयर पद के उम्मीदवार कुलदीप कुमार के पक्ष में डाले गए थे। पीठ ने कहा कि अनिल मसीह ने जानबूझकर याचिकाकर्ता के पक्ष में डाले गए आठ मतपत्रों को विकृत करने का प्रयास किया। बेंच ने कहा कि कल इस अदालत में अधिकारी ने बयान दिया कि उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसने पाया कि मतपत्र विरूपित हो गए थे।

संदेशखाली का संदेश, बंगाल में महिलाएं सुरक्षित नहीं-अनुराग

नई दिल्ली। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण और युवा एवं खेल मामलों के मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने आज पश्चिम बंगाल के संदेशखाली मामले में प्रतिक्रिया दी। अनुराग ठाकुर ने कहा कि पश्चिम बंगाल के संदेशखाली में घटने वाले मामले पूरे देश और मानवता को शर्मसार करने वाली हैं और ममता राज में यहाँ मीडिया और महिलाओं की आवाज़ दबाई जा रही है। एक महिला मुख्यमंत्री के राज्य में महिलाओं के साथ बलात्कार और अत्याचार की वीभत्स कर देने वाली घटनाओं का सामने आना और उन पर कोई कारवाई ना होना बेहद चिंताजनक है। आज पश्चिम बंगाल में गुंडों और अपराधियों को पुलिस का संरक्षण है और पुलिस को मुख्यमंत्री और सरकार का संरक्षण है। पश्चिम बंगाल की महिलाओं को कब तक यह अत्याचार सहना होगा? उन्हें न्याय कब मिलेगा?संदेशखाली का संदेश आज पश्चिम बंगाल के गली-गली जा रहा है कि पश्चिम बंगाल में महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। केंद्रीय मंत्री ने आगे पश्चिम बंगाल में मीडिया को पुलिस व सरकार द्वारा दबाए जाने की खबरों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, ममता दीदी की सरकार पश्चिम बंगाल में स्वतंत्र मीडिया की आवाज को दबाने की कोशिश कर रही है।

कांग्रेस में नेताओं के पलायन का संकट

रशीद किदवई

जिस प्रकार से कांग्रेस से नेताओं का पलायन हो रहा है, उससे कांग्रेस और समूचे विपक्ष पर एक गंभीर मनोवैज्ञानिक दबाव पड़ रहा है। वैसे पिछले कुछ वर्षों से यह सिलसिला चल रहा है, पर अभी आम चुनाव के ठीक पहले बड़े नेताओं और उनके समर्थकों द्वारा पार्टी छोड़ना कांग्रेस के लिए बड़ा झटका है। अगर हम सत्तर-अस्सी के दशक और उसके बाद के लोकसभा चुनाव देखें, तो इस बार पहली दफा ऐसा हो रहा है, जब विपक्षी खेमा पूरी तरह से बिखरा हुआ और हताश है। न तो उसमें एका है और न ही प्रधानमंत्री पद के लिए उनकी ओर से कोई घोषित उम्मीदवार है। वर्ष 1984 के चुनाव में भी, जब राजीव गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस को प्रचंड बहुमत मिला था, विपक्ष में ऐसी हताशा नहीं थी और विपक्षी दलों ने पूरे दम-खम के साथ चुनाव लड़ा था। पुराने लोगों को याद होगा कि चंद्रशेखर ने 1983 में देशव्यापी पदयात्रा की थी। यह बात दीगर है कि चंद्रशेखर अपनी सीट से हार गये थे। अटल बिहारी वाजपेयी समेत भाजपा के वरिष्ठ नेता पराजित हो गये थे। बाद के चुनावों को भी देखें, तो विपक्ष का हाल आज की तरह नहीं था।

जब पिछले साल इंडिया गठबंधन की कवायद शुरू हुई थी, तभी घटक दलों द्वारा संयोजक का चयन हो जाना चाहिए था और मुद्दों पर सहमति बना लेनी चाहिए थी। कांग्रेस पार्टी तब राज्यों में, विशेषकर उत्तर भारत में, अपनी जीत को लेकर आश्वस्त थी और उसे लग रहा था कि विधानसभा चुनाव में उसकी जीत से गठबंधन में उसकी ताकत बढ़ जायेगी। इसलिए देरी की गयी, लेकिन नतीजे उनकी उम्मीद के अनुसार नहीं आये और राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भाजपा जीत गयी। गठबंधन में जो समितियां बनीं, वह भी कारगर सिद्ध नहीं हो सकी हैं। इन समितियों में घटक दलों के वरिष्ठ नेता खुद नहीं शामिल हुए और अपने प्रतिनिधियों को इनमें सदस्य बनाया। विपक्षी खेमे में सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस है, पर वही कमजोर कड़ी साबित हो रही है। कांग्रेस के नेतृत्व में क्षमता का अभाव भी साफ नजर आता है। अभी मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ और कुछ नेताओं के कांग्रेस छोड़ने की चर्चा चल रही है। कमलनाथ की शिकायत यह है कि पार्टी नेतृत्व उन्हें सक्रिय नहीं कर रहा है या उनकी ओर ध्यान नहीं दे रहा है। उन्हें यह भी लगता है कि देश में अभी जो बहुसंख्यकवाद की राजनीति का बोलबाला है, उसमें कांग्रेस अपनी कोई छवि नहीं बना पायी है। यही कमलनाथ थे, जिन्हें कांग्रेस नेतृत्व ने विधानसभा चुनाव में पूरी छूट दे दी थी। जब 2018 में वह मुख्यमंत्री बनाये गये थे, तब राहुल गांधी कांग्रेस अध्यक्ष थे। उन्होंने ज्योतिरादित्य सिंधिया को न चुन कर कमलनाथ को तरजीह दी थी। सिंधिया पहले ही भाजपा में जा चुके हैं। ऐसे नेताओं के पार्टी छोड़ने पर चाहे जो आलोचना की जाए, पर ऐसी घटनाओं से कांग्रेस नेतृत्व के बारे में भी पता चलता है।

साल 2014 के चुनाव में राहुल गांधी ने अशोक चव्हाण की छवि के कारण उम्मीदवार बनाने से मना किया था। बाद में वह चुनाव लड़े, जीते और उद्धव ठाकरे की सरकार में मंत्री भी बने। उनकी शिकायत यह रही थी कि महाराष्ट्र कांग्रेस के अध्यक्ष नाना पटोले भाजपा की पृष्ठभूमि से आते हैं। अब चव्हाण खुद भाजपा में चले गये हैं।

इसी तरह कमलनाथ सिंधिया पर पार्टी से गद्दारी करने और विचारधारा के अभाव का आरोप लगाया करते थे। साल 2014 से अब तक कांग्रेस के 15 पूर्व मुख्यमंत्री पार्टी छोड़ चुके हैं, जिनमें से 12-13 भाजपा में शामिल हुए हैं। यह कांग्रेस के लिए आत्ममंथन का एक गंभीर विषय है। दशकों से पार्टी में रहे वरिष्ठ नेताओं के जाने पर भले यह कहा जाए कि ऐसे निर्णयों के पीछे राजनीतिक स्वार्थ है या जांच एजेंसियों का डर है, और ऐसी बातें सच भी हों, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आखिर ऐसे लोग पार्टी छोड़ कर क्यों जा रहे हैं। एक दिन में ऐसे फैसले नहीं लिये जाते हैं, इसलिए यह सवाल भी उठता है कि उन्हें रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया जाता।

असल में कांग्रेस का नेतृत्व भी बिखरा हुआ है और उसके पास उत्तरदायित्व के भाव का अभाव है। मल्लिकार्जुन खरगे अध्यक्ष हैं, पर पार्टी की कमान गांधी-नेहरू परिवार के हाथ में है और सोनिया गांधी, राहुल गांधी एवं प्रियंका गांधी किसी महत्वपूर्ण पद पर नहीं हैं। खरगे हर निर्णय के लिए गांधी-नेहरू परिवार की ओर देखते हैं। इस कारण से पार्टी के अंदर और गठबंधन में फैसलों में देरी हो रही है। पार्टी के प्रमुख के पास अधिकार होने जरूरी हैं, अन्यथा पार्टी को नुकसान उठाना पड़ता है। कांग्रेस के साथ यही हो रहा है। किसी भी दल की विचारधारा होती है, जिसे भारतीय संदर्भ में समय-समय पर अपडेट करना होता है।

बस्तर में नक्सलियों से शांति वार्ता का स्वागत

आदिवासी संगठनों ने की जल्द कदम उठाने की मांग

जगदलपुर। छत्तीसगढ़ का बस्तर क्षेत्र पिछले चार दशकों से नक्सल हिंसा का दंश झेल रहा है।इस दौरान कई सरकारें आईं और गई।लेकिन नक्सल समस्या का कोई ठोस हल नहीं निकल पाया। साल 2000 में जब नए राज्य का गठन हुआ तो सभी को उम्मीद थी कि इस ओर सरकार बड़ा कदम उठाएगी।लेकिन सरकार के दावों और हकीकत को देखें तो कहीं भी समस्या का समाधान होता नहीं दिख रहा।

छत्तीसगढ़ में साल 2023 में एक बार फिर चुनाव हुए।जनता ने कांग्रेस को हटाकर नई सरकार को सत्ता की कुर्सी में बैठाया।जिसके बाद फिर से एक ही सवाल मन में उठा कि नक्सल समस्या का हल क्या होगा।नई सरकार के गठन के बाद से अब तक नक्सली हिंसा में तेजी देखी गई।जिसके बाद नए गृहमंत्री विजय शर्मा ने नक्सलियों से बात करने का खुला ऑफर दे दिया।

गृहमंत्री ने कहा कि नक्सली जिस तरीके से चाहते हैं वो बात करने को तैयार हैं। गृहमंत्री के इस ऐलान के बाद नक्सलियों की ओर से जवाब आया है। जिसमें नक्सली भी वार्ता के लिए तैयार हो रहे हैं। वहीं नक्सल संगठन के साथ छत्तीसगढ़ सरकार की शांति वार्ता की पहल को समर्थन मिलता भी दिख रहा है। वहीं आदिवासी संगठनों ने शांति बहाली के लिए इस ओर जल्दी कदम उठाने की मांग की है।क्योंकि दोनों तरफ से आदिवासियों की ही मौत होती है। इससे आदिवासी संगठन को काफी क्षति पहुंच रही है।

सर्व आदिवासी समाज संभाग अध्यक्ष प्रकाश ठाकुर ने कहा इस काम को जल्द ही किया जाना चाहिए। धीरे-धीरे केवल बातों में ये नहीं रहना चाहिए। इस काम के लिए यदि आदिवासी समाज की आवश्यकता होगी तो वो आगे आएगा। शांति वार्ता की पहल बस्तर में फैली अशांति को खत्म करने के लिए जरूरी है। बस्तर में हो रही हिंसा में हमारे ही लोग मारे जाते हैं।

आदिवासी समाज के बस्तर जिला अध्यक्ष दशरथ कश्यप ने भी शांति वार्ता का समर्थन किया है। दशरथ कश्यप की माने तो बस्तर की धरती पिछले 4 दशकों से बेगुनाहों की खून से रंगी जा रही है। लाल आतंक के साये में बस्तर का विकास नहीं पनप पा रहा है।इसलिए यदि बस्तर का भविष्य संवारना है तो शांति का बहाल होना जरुरी है।सरकार ने जो फैसला किया है,यदि उससे बात बनीं तो निश्चित तौर पर आने वाले समय में बस्तर में हिंसा नहीं देखने को मिलेगी।

सर्व आदिवासी समाज के प्रांतीय उपाध्यक्ष राजाराम तोड़ेम के मुताबिक बस्तर में अशांति फैली हुई है। इसमें कोई शक नहीं है। सरकार की जिम्मेदारी बनती है कि बस्तर में शांति स्थापित हो। उन्होंने कहा लंबे अरसे से सरकारें नक्सलवाद से लड़ने के लिए विकल्प के रूप के सुरक्षाबलों का उपयोग कर रही है। बस्तर में पुलिस और नक्सलियों के बीच आम जनता पीस रही है। बस्तर में शांति की जिम्मेदारी सरकार और नक्सल संगठन दोनों की है।

बस्तर में शांति स्थापना के लिए आदिवासी समाज भी अब सामने आया है। आदिवासी समाज ये जान चुका है कि हिंसा से किसी भी चीज का हल नहीं निकाला जा सकता।छत्तीसगढ़ की विष्णुदेव सरकार ने हाल ही में बस्तर में शांति बहाली के लिए नई योजना लॉन्च की है। नक्सल प्रभावित इलाकों में नियद नेल्लानार योजना चलाई जाएगी। नियद नेल्लानार का मतलब होता है आपका अच्छा गांव। इस योजना के तहत बस्तर क्षेत्र में सुरक्षा शिविरों के 5 किलोमीटर के दायरे में जो गांव होंगे उन्हें विकास से जोड़ा जाएगा।ताकि ग्रामीणों को विकास के साथ जोड़ा जा सके।

70 से अधिक विशेषज्ञ कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान में पक्षियों का करेंगे सर्वे

■ नई प्रजाति के बर्ड्स का चलेगा पता

जगदलपुर। बस्तर के प्रसिद्ध कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान में पक्षियों की गणना की शुरुआत हो रही है। 25 फरवरी से बर्ड्स की काउंटिंग यहां शुरू होगी और पक्षियों के सर्वे का यह काम 27 फरवरी तक चलेगा। कांगेर वैली नेशनल पार्क के डायरेक्टर धम्मशील गणवीर ने इस बात की जानकारी दी है।

कांगेर घाटी राष्ट्रीय पार्क के निदेश धम्मशील गणवीर ने कहा कि यहां तीन दिनों तक बर्ड्स के सर्वे और काउंटिंग का काम किया जाएगा। इस सर्वे को साइंटिफिक आधार पर किया जाएगा। जिसके लिए 10 राज्यों के 70 से अधिक विशेषज्ञों को शामिल किया गया है।

धम्मशील गणवीर ने कहा कि कांगेर वैली नेशनल पार्क में छत्तीसगढ़ के राजकीय पक्षी बस्तर हिल मैना की संख्या दिखती है। यहां 15 से अधिक गांवों में यह पक्षी देखा जाता है। साल 2023 में इसी तरह का एक सर्वेक्षण किया गया था जिसमें 201 पक्षी प्रजातियों की पहचान की गई थी। जिनमें पहाड़ी मैना, ब्लैक-हुडेड ओरिओल, रैकेट-टेल्ड ड्रोंगो, जंगल फाउल और कठफोड़वा पक्षी शामिल थे।

कांगेर वैली नेशनल पार्क डायरेक्टर धम्मशील गणवीर ने कहा पिछले साल के अध्ययन से यह स्पष्ट हो गया है कि राष्ट्रीय उद्यान पक्षियों के लिए एक प्रमुख केंद्र है और देश में पक्षी प्रेमियों के लिए हॉटस्पॉट के रूप में उभर रहा है। इस सर्वेक्षण से पार्क में अधिक पक्षी प्रजातियों की पहचान करने और उनकी आदतों और आबादी का पता लगाने में मदद मिलेगी। जिससे उनके संरक्षण में मदद मिलेगी और इको-टूरिज्म के तहत इसमे नए आयाम जुड़ेंगे। बर्ड काउंट इंडिया के सहयोग से आयोजित इस सर्वे में छत्तीसगढ़ के अलावा पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, गुजरात और राजस्थान के 70 से अधिक पक्षी विशेषज्ञ और शोधकर्ता शामिल हो रहे हैं।

कांगेर वैली नेशनल पार्क के डायरेक्टर धम्मशील गणवीर ने बताया कि कांगेर वैली नेशनल पार्क में मैना मित्र योजना की शुरुआत की गई है। इसमें स्थानीय युवा और गांव के लोग सदस्य के तौर पर पक्षियों के संरक्षम के कार्य में हिस्सा ले रहे हैं। इसके अलावा पर्यावरण विकास समित के सदस्य जो वन विभाग से जुड़े हुए हैं। वह इसमें मदद पहुंचा रहे हैं जिससे सामुदायिक सहयोग को बढ़ावा मिल रहा है और प्राकृतिक संरक्षण में सुधार हो रहा है।

जेम पोर्टल से 10,000 करोड़ से अधिक की खरीद करने वाली पहली कोयला कंपनी बनी एसईसीएल

■ जेम से खरीद में एसईसीएल सभी कोल कंपनियों में सबसे आगे

GeM
Government
e Marketplac

बिलासपुर। एसईसीएल ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में अब तक भारत सरकार के जेम (गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस) पोर्टल से 12,284 करोड़ से अधिक की खरीद कर एक नया रिकॉर्ड बनाया है और ऐसा करने वाली यह देश की पहली कोयला कंपनी है। कंपनी द्वारा की गई यह खरीद कोल इंडिया की सभी अनुषंगी कंपनियों में सर्वाधिक है। अप्रैल 2024 से अब तक कंपनी ने 1000 करोड़ से अधिक के उत्पाद एवं 11,284 करोड़ से अधिक की सेवाओं का क्रय किया है।

कंपनी के इस वित्तीय वर्ष के जेम पोर्टल के माध्यम से क्रय का लक्ष्य लगभग 3310 करोड़ था लेकिन कंपनी ने इससे कहीं आगे बढ़ते हुए लक्ष्य के मुक़ाबले 317त्न अधिक खरीद की है। कोयला मंत्रालय द्वारा इस वित्तीय वर्ष में अब तक 63,000 करोड़ से अधिक की खरीद जेम पोर्टल के माध्यम से की गई है और इसमें लगभग 1/5वां हिस्से का योगदान एसईसीएल ने दिया है।

जेम पोर्टल के माध्यम से एसईसीएल द्वारा कोयला उद्योग से जुड़े उत्पादों एवं सेवाओं का क्रय किया गया है जिसमें नट-बोल्ट से लेकर खदानों में प्रयुक्त होने वाली बड़ी एचईएमएम (हेवी अर्थ मूविंग मशीनरी) मशीनें जैसे 240 टन डंपर, 42 क्यूबिक मीटर शॉवेल, डोजर, ग्रेडर आदि शामिल हैं। इसके साथ ही कंपनी, वे ब्रिज, इलेक्ट्रोनिक्स एवं दूरसंचार, आईटी, इलेक्ट्रिकल एवं मैकेनिकल, एवं दैनिक उपयोग से जुड़े विभिन्न उत्पादों एवं सेवाओं का क्रय जेम पोर्टल के माध्यम से कर रही है।

कंपनी द्वारा प्रयोग में ली जाने वाली उन सभी चीजों का शत-प्रतिशत क्रय जेम पोर्टल से किया जा रहा है जो जेम पोर्टल पर उपलब्ध हैं। किसी उत्पाद की उपलब्धता जेम पोर्टल पर न होने की स्थिति में कंपनी जेम पोर्टल के प्रावधानों के अनुसार कस्टम बिडिंग के माध्यम से उनका क्रय कर रही है। जेम पोर्टल सरकारी खरीद-फरोख्त के लिए बनाया गया एक ऑनलाइन पोर्टल है। 2016 में शुरू किए गए इस पोर्टल का लक्ष्य सरकार एवं उसके उपक्रमों द्वारा की जाने वाली ख़रीदारी को कुशल, पारदर्शी और समावेशी बनाना है। कंपनी द्वारा पिछले वित्तीय वर्ष में रिकॉर्ड 923 करोड़ रुपए की वस्तुओं की खरीद जेम से माध्यम से की गई थी और इस वर्ष भी कंपनी एक बड़े लक्ष्य की ओर अग्रसर है।

धमतरी में अवैध रेत खनन के खिलाफ उतरे विधायक

■ रेत से भरी 25 ट्रकें रोकी, साय सरकार पर गंभीर आरोप

धमतरी। धमतरी में अवैध रेत उत्खनन को लेकर स्थानीय विधायक ने मोर्चा खोल दिया है। सोमवार रात धमतरी विधायक ओंकार साहू खुद सड़क पर उतरे और रेत से भरी 25 ट्रकों को रोक दिया। इसकी खबर लगते ही आनन फानन में प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची। विधायक ओंकार साहू ने प्रशासनिक अधिकारियों से रेत तस्करी रोकने की मांग की है। साथ ही ग्राम आमदी में रोके गए 25 ट्रकों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की।

अवैध रेत उत्खनन के खिलाफ खोला मौर्चा

रेत से भरी 25 ट्रकें विधायक ओंकार साहू के गृह ग्राम आमदी से होकर गुजर रही थी। जिसे देख विधायक मौके पर पहुंचे और 25 गाड़ियों को रोके रखा। जैसे ही इसकी सूचना प्रशासनिक अधिकारियों को मिली पुलिस और तहसीलदार, खनिज विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचे। धमतरी विधायक ओंकार साहू ने जिले में अवैध खनन पूरी तरह से रोकने की मांग की। उन्होंने आरोप लगाया है कि जिले में लगातार अवैध रेत उत्खनन कर दूसरे राज्यों में ले जाया जा रहा है।

साय सारकार पर लगाए गंभीर आरोप

धमतरी विधायक ओंकार साहू ने विष्णुदेव साय सरकार पर अवैध रेत खनन को संरक्षण देने का आरोप लगाया है। विधायक ने आरोप लगाया है कि जिले में रेत का उत्खनन पूर्व मंत्री के संरक्षण में चल रहा है। उन्होंन यह भी कहा कि भारी वाहनों के आवाजाही से सड़कों पर मौत हो रही है। साथ ही सड़क की स्थिति भी खराब हो रही है। उन्होंने साफ कहा है कि इस विधानसभा क्षेत्र से अब अवैध उत्खनन नहीं होगा और ना ही अवैध उत्खनन से जुड़ी गाड़ियां इस क्षेत्र से गुजरेगी। यदि फिर से गुजरती है तो इसी तरह रोका जाएगा।

धमतरी विधायक ओंकार साहू ने कहा जब से बीजेपी सरकार आई है, तब से रेत की अवैध परिवहन हो रही है। जब जिला प्रशासन से पूछा जाता है कि आप क्या कार्रवाई कर रहे है तो वे पेपर में कार्रवाई करते हैं। आज मेरे गृह ग्राम आमदी में 25 से 26 ट्रकें खड़ी हैं। आप देख सकते हैं मेरे धमतरी का रेत जा रहा है महाराष्ट्र। ये जितना अवैध रेत परिवहन हो रही है, ये किसी बीजेपी नेता के संरक्षण में हो रही है। आज इनको रोका गया तो किसी ने बताया कि पूर्व मंत्री कता भतीजा है, उनका गाड़ी है। इस तरह का बात आ रहा है।

धमतरी में महानदी की रेत छत्तीसगढ़ समेत अन्य राज्यों तक पहुंचती है। लेकिन यहां रायल्टी देने से बचने के लिए अवैध तरीके से रेत उत्खनन के कई केस सामने आते रहे हैं। सालों से यह अवैध धंधा बेधड़क टल रहा है। अभी भी जिले के कई खदानों से अवैध उत्खनन की खबर सामने आती रहती है। ना सिर्फ छत्तीसगढ़ बल्कि महाराष्ट्र एवं अन्य राज्यों में भी रेत की सप्लाई हो रही है। इन्हीं गाड़ियों को सोमवार रात विधायक ओंकार साहू ने अपने गृह ग्राम आमदी में रोक दिया और कार्रवाई की मांग की। अब देखना होगा कि अवैध रेत उत्खनन के खिलाफ प्रशासन क्या एक्शन लेती है।

03 को चलाया जायेगा पल्स पोलियो अभियान

कोण्डागांव। जिले के 0 से 5 वर्ष तक के बच्चों को पोलियों जैसी घातक बीमारियों से बचाने के लिए पल्स पोलियो अभियान 03 मार्च को कलेक्टर कुणाल दुदावत के मार्गदर्शन में आयोजित किया जायेगा। इसके लिए कलेक्टर के अध्यक्षता में मंगलवार को जिला स्तरीय टास्क फोर्स बैठक में जिले के नोडल अधिकारी डॉ. रूद्र कश्यप द्वारा इस संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि 03 मार्च 2024 को पल्स पोलियो अभियान पूरे जिले में चलाया जाना है। जिसमें 0 से 5 वर्षीय सभी बच्चों को पल्स पोलियो ड्रॉप पिलाया जाना है। जिसके प्रथम दिवस में बुथ के द्वारा तथा अन्य दो दिवस 04 एवं 05 मार्च में गृह भेंट कर बच्चों को पोलियो ड्राप पिलाया जाना है। इस अभियान हेतु जिले में स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रचार-प्रचार किया जा रहा है। इस हेतु कलेक्टर द्वारा सभी विभागों से समन्वयक कर शत प्रतिशत बच्चों को पोलियो की दवा पिलाना सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया है।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

अविश्वास प्रस्ताव लाकर भाजपा ने कुर्सी पर जमाया कब्जा

तखतपुर। प्रदेश में सत्ता परिवर्तन होते ही नगरीय निकायों में भी सत्ता परिवर्तन का दौर शुरू हो गया है। तखतपुर नगर पालिका में भी सत्ता परिवर्तन के लिए प्रस्ताव पारित हो गया है। तखतपुर में भाजपा पार्षद दल ने अविश्वास प्रस्ताव लाया है। बता दें कि तखतपुर में 4 साल से कांग्रेस की अध्यक्ष थी। विधानसभा चुनाव के बाद पार्षदों के दल बदल के कारण समीकरण बदल गया और भाजपा पार्षद दल ने कांग्रेस अध्यक्ष के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव लाया। कलेक्टर के निर्देश पर पीठासीन अधिकारी एसडीएम वैभव कुमार क्षेत्रज्ञ के द्वारा मंगलवार को अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा और मतदान हुआ और प्रस्ताव 5 के मुकाबले 10 मत से अविश्वास प्रस्ताव पारित हो गया। इस तरह नगर में भी कांग्रेस सत्ता से दूर हो गई। अब आने वाले समय में अध्यक्ष की कुर्सी पर भाजपा किसे बिठाती है, यह आने वाला समय ही बताएगा।

पुलिस अधीक्षक ने जवानों से पूछी समस्याएं, मिला आश्वासन

जगदलपुर। बस्तर पुलिस अधीक्षक शलभ

कुमार सिन्हा द्वारा मंगलवार की सुबह रक्षित केन्द्र में जनरल परेड का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक द्वारा पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों को वर्दी के साथ ही कीट का भी निरीक्षण किया गया। परेड में बस्तर पुलिस अधीक्षक ने आला अधिकारियों /कर्मचारियों की समस्या भी पूछी। जिनको हल करने के लिए अधिकारियों को निर्देशित भी किया गया। पुलिस अधीक्षक द्वारा जनरल परेड के बाद रक्षित केन्द्र के समस्त शाखा का निरीक्षण किया गया। इस दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महेश्वर नाग, रक्षित निरीक्षक मधुसूदन नाग एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

धान खरीदी प्रभारियों ने जल्द धान उठाव के लिए सौंपा ज्ञापन

कांकेर। धान खरीदी केंद्रों में उठाव नहीं होने से कोइलीबेड़ा ब्लॉक के खरीदी प्रभारियों ने जल्द धान उठाव की मांग को लेकर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा है। खरीदी प्रभारियों ने बताया कि जिले के कोइलीबेड़ा ब्लॉक में अब तक सिर्फ 30 प्रतिशत धान का उठाव हुआ है। जिले के परलकोट के धान खरीदी प्रभारियों ने उठाव को लेकर भेदभाव का आरोप लगाया है। खरीदी प्रभारियों का कहना है की कांकेर जिले के कोइलीबेड़ा ब्लॉक को छोड़कर सभी ब्लॉकों में धान का उठाव करीब 90 प्रतिशत उठाव हो चुका है। कोइलीबेड़ा ब्लॉक के लैंप्स प्रबंधक सुभाष विश्वास ने बताया कि 1 नवंबर से 31 जनवरी तक धान खरीदी की गई है, लेकिन उठाव सिर्फ 15 से 20 प्रतिशत ही हुआ है। कहीं-कहीं 90 प्रतिशत तक उठाव हो चुका है। उन्होने बताया कि इस भेदभाव को लेकर कलेक्टर, डीएमओ से मिलने आए थे। जो भी मिला उनसे चर्चा की गई तो बताया गया कि यह हमारे हाथ में नहीं है। केंद्र सरकार से निधारित होगा, उसके हिसाब से खरीदी उठाव किया जाएगा।

प्रधानाध्यापिका ने पारिवारिक विवाद में लगाई फांसी

जगदलपुर। परपा थाना क्षेत्र कस तोकापाल बेडागुड़ा में रहने वाली प्रधानाध्यापिका ने मंगलवार की सुबह अपने घर के कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना की जानकारी लगते ही आसपास के लोग मौके पर पहुंच गए और शव को नीचे उतारा। वहीं उसे पीएम के लिए डायल 112 की मदद से मेकाज लाया गया। वहीं प्रधानाध्यापिका की मौत की खबर लगते ही घर से लेकर स्कूल में शोक की लहर छा गई। मामले के बारे में जानकारी देते हुए मृतिका कांति नागेश के मौसा जीतू ठाकुर ने बताया कि बुरुंगपाल के स्कूल में प्रधानाध्यापिका के पद में पदस्थ कांति नागेश 37 वर्ष अपने मां, पिता के अलावा एक छोटे भाई के साथ रहती थी। घर के पास ही रहने वाले रिश्तेदारों से विगत कई वर्षों से किसी न किसी बात को लेकर आये दिन विवाद होने का आरोप भी लगाया। इसके अलावा कई बार इस मामले को लेकर परिजनों के द्वारा थाने में शिकायत देने के साथ ही पंचायत तक में मामले की शिकायत दी गई। लेकिन कोई भी हल नही निकला।

समाधान शिविर में दो हितग्राहियों को मिला ऋण

उत्तर बस्तर कांकेर। जिला प्रशासन द्वारा आम नागरिकों को शासन की योजनाओं का शत-प्रतिशत लाभ पहुंचाने के लिए जिले के ग्राम पंचायतों में समाधान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में 19 फरवरी को कलेक्टर श्री अभिजीत सिंह के निर्देशन में भानुप्रतापपुर विकासखण्ड के ग्राम फरसकोट में आयोजित समाधान शिविर में जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति द्वारा संचालित अंत्योदय स्वरोजगार योजना के तहत् दो हितग्राहियों को तीन लाख रूपये का ऋण स्वीकृत किया गया। इसके तहत ग्राम आसुलखार निवासी श्रीमती कमलेश्वरी कोषरे को जूता-चप्पल दुकान संचालन हेतु 01 लाख 50 हजार रूपये का ऋण स्वीकृत किया गया है। समाधान शिविर में उक्त हितग्राही को अनुदान राशि 10 हजार रूपये का चेक भी प्रदान किया गया। इसी प्रकार तहसील भानुप्रतापपुर के ग्राम पण्डरीपानी निवासी श्री शैलेन्द्र कुमार उयके को कपड़ा व्यवसाय संचालन हेतु 01 लाख 50 हजार रूपये का ऋण स्वीकृत किया गया है।

गाय शेड निर्माण से गौवंशों का हुआ रखरखाव आसान

■ दुग्ध उत्पादन एवं खाद निर्माण से पशुपालकों को हो रही है सुविधा

दंतेवाड़ा। पशुपालन व्यवसाय में दुग्ध एवं खाद निर्माण के लिए पशुओं हेतु चारे की व्यवस्था, टीकाकरण सहित अन्य देखभाल जितना जरूरी है उतना ही आवश्यक है पशुओं के लिए उत्तम रहवास की व्यवस्था तात्पर्य है कि पशुधन प्रबंधन के तहत पशुओं के रहने के स्थान का भी ध्यान रखा जाना पशुपालकों के लिए अनिवार्य होता है। जिसमें रोजाना साफ -सफाई, पशु संख्या अनुरूप पर्याप्त जगह और खुला हवादार होना, पशु अपशिष्ट की निकासी और धूप वर्षा से बचाव के समुचित प्रबंधन होना चाहिए।

आमतौर पर स्थानीय ग्रामीण क्षेत्रों में पशुओं के रहने के स्थान जिसे अमुमन स्थानीय बोली में कोठा कहा जाता है। पूराने परिपाटी से ही बनाये जाते रहें है जहां न तो पर्याप्त जगह होती है और न ही उचित ढंग से साफ-सफाई का प्रबंध होता है। स्पष्ट है ऐसे रख रखाव से पशुधन पर प्रतिकूल प्रभाव पडऩा स्वाभाविक है साथ ही उनमें पशु जनित रोग पनपने की संभावना भी बढ़ जाती है और दुग्ध उत्पादन क्षमता भी

कम होने लगती है। इस क्रम में महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) के तहत बनाये जा रहे गाय शेड निर्माण से पशुपालकों को गौवंशो के रखरखाव में सुविधा मिली है। ब्लॉक कुआकोण्डा ग्राम हल्बारास के निवासी पशुपालक श्री सुखराम को भी मनरेगा अन्तर्गत पशुपालन को आय के साधन के रूप में विकसित करने हेतु गाय शेड निर्माण हेतु 1 लाख 28 हजार की राशि वर्ष 2021-22 में प्रदाय की गई। इस संबंध में श्री सुखराम ने बताया कि वह ग्रामीण परिवेश में रहकर खेती-बाड़ी के माध्यम से अपनी आजीविका चलाता है, परन्तु आमदनी अच्छी नहीं होने के कारण जीवन की मूलभूत जरूरतें ही मुश्किल से पूरी हो पाती थी। आय का संचय तथा बचत का तो प्रश्न ही नहीं उठता था। हां कुछ था तो उसके पास गौवंश पर्याप्त संख्या में थे, परन्तु उनके लिए उचित रहवास और रखरखाव की व्यवस्था करना भी एक बड़ी समस्या थी। ऐसी स्थिति में सुखराम को ग्राम पंचायत में होने वाले ग्राम सभा में इस बात की जानकारी मिली कि पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की महत्वपूर्ण योजना मनरेगा यानी महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना से हितग्राहियों को गाय शेड निर्माण कार्य द्वारा लाभान्वित किया जाता है। इसकी जानकारी होते ही उसने इस योजना का लाभ लेने की ठानी और ग्राम सभा से गाय गोठान निर्माण हेतु प्रस्ताव ग्राम पंचायत से पारित करने साथ -साथ कार्य हेतु निर्माण क्षेत्र का नक्शा खसरा की जानकारी पंचायत के माध्यम से जनपद पंचायत कुआकोण्डा के मनरेगा शाखा को उपलब्ध करवाया। इस संबंध में तकनीकी सहायक द्वारा कार्यक्षेत्र का निरीक्षण कर तकनीकी प्राक्कलन तैयार किया गया एवं कार्य को तकनीकी स्वीकृति अनुविभागीय अधिकारी ग्रामीण यांत्रिकी सेवाए के द्वारा प्रदान किये जाने उपरांत कुछ ही दिनों में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत दंतेवाड़ा के द्वारा प्रशासकीय स्वीकृति प्राप्त हुई जिसकी राशि 1.28 (एक लाख अठ्ठाईस हजार रूपये) थी।

डैम से निकली 80 किलो की विशालकाय मछली

कवर्धा। सरोधा डैम के पास रहने वाले मछुआरे अक्सर डैम से निकल रहे पानी में जाल डालकर मछली पकड़ते हैं। मछुआरों की किस्मत अच्छी रहती है तो कभी दो किलो तो कभी पांच किलो तक की फिश जाल में फंस जाती है। मंगलवार को भी आम दिनों की तरह मछुआरों ने पानी में जाल डाला। लोगों को लगा कि कोई मछली फंसी है। जाल को खीचने की कोशिश की गई लेकिन मछली इतनी बड़ी थी कि जाल में समा नहीं पा रही थी। चार से पांच लोगों ने मिलकर कड़ी मशक्कत के बाद मछली को काबू में किया।

गांव वालों ने किसी तरह से मछली को पानी से बाहर लाकर उसका वजन किया तो पता चला कि उसका वेट 80 किलो से ऊपर है। इतनी बड़ी मछली फंसने के बाद गांव के लोग काफी खुश हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि अभी तक सरोधा डैम से इतनी बड़ी मछली नहीं पकड़ी गई थी। ये पहला मौका है जब 80 किलो से ऊपर की फिश मछुआरों ने पकड़ी है। पकड़ी गई मछली इतनी बड़ी थी कि गांव के चार लोग उसे उठाकर गांव में ले गए। इतनी

बड़ी मछली को देखने के लिए गांव में लोगों की भारी भीड़ भी जमा हो गई।

200 एकड़ में फैला से सरोधा डैम- सरोधा डैम का इतिहास काफी पुराना है। स्थानीय लोगों का कहना है कि डैम इतना बड़ा है कि इसका एक चक्कर पूरे दिन में भी नहीं लगाया जा सकता। राज्य सरकार ने सरोधा डैम की खूबसूरती को देखते हुए इसे टूरिस्ट प्लेस भी घोषित किया है। बड़ी संख्या में पर्यटक यहां तैरारी और नौकायान का मजा लेने के लिए आते हैं। डैम चूकि रिजर्व एरिया में है लिहाजा इसमें कई किस्म के जलीय जीव भी रहते हैं। डैम से जब पानी को बाहर निकाला जाता है तब बड़ी संख्या में यहां स्थानीय मछुआरे मछली पकड़ने आते हैं।

संक्षिप्त समाचार

छत्तीसगढ़ में अब हो सकेगी सीबीआई की एंट्री, रोक हटी

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) पर करीब पांच साल पहले लगी रोक विष्णुदेव साय सरकार ने वापस ले ली है। अब सीबीआई पहले की तरह राज्य में भी जांच कर पाएगी। छत्तीसगढ़ सरकार के गृह विभाग ने राज्य में सीबीआई द्वारा जांच व अनुसंधान के लिए अधिकारिता के संबंध में केंद्र सरकार को 10 जनवरी 2019 को भेजे गए विभागीय पत्र को तत्काल प्रभाव से वापस ले लिया है। उल्लेखनीय है कि भाजपा ने सत्ता संभालते ही गत 3 जनवरी 2024 के कैबिनेट की बैठक में पीएससी 2021-22 में हुए गड़बड़ियों की जांच सीबीआई से कराने की अनुशंसा की थी। इसे लेकर करीब महीनेभर बाद राज्य शासन ने ईओडब्ल्यू एसीबी में एफआईआर भी दर्ज कराई। चूंकि अब सीबीआई पर राज्य में लगा प्रतिबंध हट गया है, लिहाजा सीबीआई कभी भी छत्तीसगढ़ में धमक सकती है।

कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने राजिम कुंभ कल्प की तैयारियों का लिया जायजा

रायपुर। कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह अधिकारियों से कहा कि कुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित हो इस बात का ध्यान रखें। उन्होंने नगरपालिका अधिकारियों को निर्देश दिया कि साफ सफाई की व्यस्था दुरस्त रखे और इसके लिए मॉनिटरिंग टीम बनाए। कलेक्टर डॉ. सिंह ने खाद्य विभाग को निर्देश दिया कि दाल-भात सेंटर की पूरी प्रक्रिया पूर्ण करें ताकि समय से शुरुआत की जा सके। साथ ही पीएचई विभाग को पेयजल, शौचालय की व्यवस्था और दुकान का आवंटन करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राजिम कुंभ कल्प के लिए जिले में बनने वाले कुंड की साफ-सफाई अच्छे ढंग से हो। सड़कों के किनारे पुराने वाहन को हटाया जाए। निर्माण सामग्री भी भीतर रखें ताकि यातायात सुव्यवस्थित रहे। उन्होंने कहा कि नदी के पास सड़कों के किनारे जाली और बेरिकेडिंग लगाया जाए। डॉ. सिंह ने रेलवे से कहा कि रेल पात को व्यवस्थित करें ताकि पार्किंग में दिक्कत ना हो। उन्होंने राजिम कुंभ मेले की सतत निगरानी करने पुलिस प्रशासन, राजस्व और नगर पालिका की संयुक्त टीम बनाने के निर्देश दिए। कलेक्टर डॉ. सिंह ने अभनपुर में राजिम-अभनपुर हाईवे के निर्माण कार्य का भी जायजा लिया और आवश्यक निर्देश दिए। इस अवसर पर नगर निगम आयुक्त अविनाश मिश्रा और जिला पंचायत सीईओ विश्वदीप उपस्थित थे।

डिंपल मिस टीन ग्लोबल ब्युटी इंटरनेशनल में भारत का करेगी प्रतिनिधित्व

रायपुर। दंतेवाड़ा जिले के नक्सल प्रभावित क्षेत्र किरंदुल की रहने वाली बेटी डिंपल साहू मिस टीन ग्लोबल ब्युटी इंटरनेशनल में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए मार्च में ब्राजील जाएंगी जहां वह अपना जलवां बिखरेंगी जहां उनका 30 देशों के प्रतिभागियों के साथ मुकाबला होगा। पत्रकारों से चर्चा करते हुए डिंपल ने बताया कि उसकी पढ़ाई केंद्रीय विद्यालय किरंदुल में हुई और वर्तमान में वह इंडस्ट्रियल डिजाइन को डिग्री हासिल करने के लिए पुणे में पढ़ाई कर रही हैं। उन्होंने बताया कि विभिन्न कंपनियों से कोलाबरेशन करते करते उनका रूझान सौंदर्य प्रतियोगिताओं की तरफ हुआ और 2021 में रायपुर में आयोजित रनवे कंपीटशन में शामिल हुई जहां पांच राज्यों से आए प्रतिभागियों को पछाड़ते हुए मिस छत्तीसगढ़ का खिताब अपने नाम किया। 2022 में स्टार एंटरटेनमेंट प्रोडक्शन द्वारा आयोजित मिस टीन इंडिया 2022 में पूरे देश से 60 प्रतिभागियों का चयन हुआ जिसमें डिम्पल एक थी। विभिन्न राउंड्स में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए डिम्पल ने जीत हासिल की और मिस टीन ग्लोबल ब्युटी इंडिया 2022 का खिताब अपने नाम किया। मार्च 2024 में ब्राजील के रियो डी जनेरियो में मिस टीन ग्लोबल ब्युटी इंटरनेशनल में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी और 30 देशों के प्रतिभागियों के साथ उनका खिताब मुकाबला होने जा रहा है। ब्राजील रवाना होने से पहले उन्होंने छत्तीसगढ़ के लोगों से वोट करने की अपील की।

छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद की आमसभा 5 मार्च को

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद की आमसभा 5 मार्च मंगलवार को दोपहर 3 बजे वृंदावन हाल में रखी गई है। बैठक की सूचना सभी सदस्यों को डाक द्वारा भेजा गया है जिसमे बैठक का एजेंडा दिया गया है। सभी सम्मानीय सदस्यों की उपस्थिति अपेक्षित है। कोरम के अभाव में बैठक आधा घंटा स्थगित करने के उपरांत उसी स्थान पर पुनः आमसभा होगी। राजेन्द्र निगम संयुक्त सचिव छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद द्वारा उक्त जानकारी मीडिया को दी गई है।

राज्य की महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध है सरकार: साय

छत्तीसगढ़ के सभी जिलों से 133 महिला स्व-सहायता समूह अपने उत्पादों के साथ मेले में हैं शामिल

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने रायपुर के साइंस कालेज ग्राउंड में आज क्षेत्रीय सरस मेला का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। इस मेले का आयोजन 28 फरवरी तक किया जायेगा। सरस मेले में छत्तीसगढ़ के समस्त जिलों से कुल 133 महिला स्व-सहायता समूह शामिल हुए हैं। इसके साथ ही असम, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश, झारखण्ड तथा बिहार से आए हुए महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा भी अपने उत्पादों के स्टाल लगाये गए हैं। मेले में आए लोगों को राज्य और अन्य प्रदेशों द्वारा मिलाकर सरस मेले में कुल 212 स्टाल्स के जरिए उत्पादों की जानकारी मिल रही है। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने सरस मेला को संबोधित करते हुए कहा की आज यहां उपस्थित सभी बहनों ने मुझे न सिर्फ जन्मदिन की अग्रिम बधाई दी बल्कि मुझे अपने उत्पाद भी उपहार स्वरूप दिए जिससे आज मेरा यहां आना सार्थक हो गया। उन्होंने कहा की ऐसे मेलों से बहुत लाभ होता है जिसे न सिर्फ लोग घूमने की नजर से आते हैं बल्कि इससे व्यापार में भी बढ़ावा होता है। इससे दुसरे लोगों को भी संबल मिलता है। उन्होंने कहा की देश के प्रधानमंत्री श्री मोदी की वजह से आज देश विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों में है। विकसित भारत बनाना है तो हमे विकसित छत्तीसगढ़ भी बनाना होगा और इसमें हमारी माताओं और बहनों का बड़ा योगदान रहने वाला है।

श्री साय ने कहा की छत्तीसगढ़ सरकार राज्य की महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध है और इसके लिए राज्य में महतारी वंदन योजना की शुरुवात की गई है। उन्होंने कहा की यह बड़ी बात है की राज्य के 28 लाख परिवारों की बहने बिहान योजना से जुड़ी हैं जो प्रदेश और देश को एक नई दिशा दिखाने में अपना योगदान दे रही हैं।

इस मौके पर मुख्यमंत्री ने भारत सरकार की योजना के अंतर्गत रियायती दर पर आम लोगों को भारत दाल और भारत आटा उपलब्ध कराने हेतु दो चलित वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मुख्यमंत्री ने कहा की स्व सहायता समूह की महिलाएं लघु वनोपजों का वैल्यू एडिशन कर उन्हें बाजार में उपलब्ध करा रही है जो इस बात का स्पष्ट इशारा करता है की छत्तीसगढ़ विकसित राज्य होने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने सरस मेले को संबोधित करते हुए कहा की ऐसे आयोजनों से बहुत सारे उत्पाद एक स्थान पर मिल जाते हैं, इससे समूहों को व्यापार मिलता है और दूसरे लोगों को को भी प्रेरणा भी मिलती है। उन्होंने कहा की पहले के समय में गांव उत्पाद केंद्र और शहर व्यापार का केंद्र थे, आज इसी की आवश्यकता है जो बिहान के माध्यम से पूरी होकर भारत की अर्थव्यवस्था को बेहतर बना सकते हैं। ऐसे ही आयोजनों से समूहों को जोड़कर बड़ा काम किया जा सकते हैं। आज के ये समूह कल बड़ा रूप ले लेंगे और मोदी जी की लखपति दीदी की संकल्पना को साकार करेंगे।

सरस मेला में छत्तीसगढ़ के महिला स्व-सहायता समूहों के द्वारा विभिन्न फूड, हैण्डीक्राफ्ट तथा हैण्डलूम प्रोडक्ट्स के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के उत्पादों का प्रदर्शन किया जा रहा है। इन फूड प्रोडक्ट्स में कोदो, कुटकी, रागी कुकीज, मसाले, अचार, बड़ी, पापड़, तिल लड्डू, महुआ लड्डू, जीरा फुल चावल, सुगंधित चावल, ब्लैक राईस, इमली चपाती, मशरूम, काजू के प्रोडक्ट्स, शहद, चिक्की, नमकीन, मिलेट्स प्रोडक्ट, मिक्चर, छत्तीसगढ़ी व्यंजन इत्यादि उत्पाद लाये गए हैं।

हैण्डीक्राफ्ट प्रोडक्ट्स में बेलमेटल उत्पाद, रॉट आयरन उत्पाद, बांस के उत्पाद, विभिन्न प्रकार के साबुन (चारकोल, रोज, एलोविरा इत्यादि), मिट्टी के उत्पाद, एल.ई.डी. बल्ब, कास्ट मूर्तियाँ, अगरबत्ती, आर्टिफीशियल ज्वेलरी, टेराकोटा उत्पाद, पैरा आर्ट इत्यादि शामिल हैं।

व्यापम ने जारी की परीक्षाओं की संभावित तिथि

रायपुर। 12वीं के बाद आगे की पढ़ाई के लिए नए कोर्स करने की राह देख रहे छात्रों के लिए अच्छी खबर है। छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मंडल (व्यापम) ने राज्य के विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों प्रवेश के लिए होने वाली प्रवेश परीक्षाओं की संभावित तिथियां जारी कर दी है। तकनीकी शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा, एनसीईआरटी और कृषि विभाग के शैक्षणिक सत्र 2024-25 में विभिन्न व्यावसायिक विषयों में प्रवेश के लिए व्यापम मई एवं जून महीने में परीक्षाएं आयोजित करेगा। शैक्षणिक सत्र 2024-25 में प्री। एमसीए, एमबीए 24 और एमएससी नर्सिंग एमएससीएन 2024 में प्रवेश के लिए परीक्षा की संभावित तिथि 30 मई 2024 रखी गई है। इसी तरह प्री। बीएड, प्री। डीएलएड, के लिए 2 जून 2024, पीईटी एवं पीपीएचटी के लिए परीक्षा की संभावित तिथि 6 जून 2024 होगी। बीएससी नर्सिंग, प्री बीए बीएड/प्री बीएससी बीएड के लिए 13 जून, पीएटी/पीव्हीपीटी प्रवेश परीक्षा की संभावित तिथि 16 जून और पीपीटी प्रवेश परीक्षा की संभावित तिथि 23 जून 2024 है। उक्त प्रवेश परीक्षाओं के लिए छत्तीसगढ़ राज्य के निवासी प्रतिभागियों से किसी भी प्रकार का परीक्षा शुल्क नहीं लिया जाएगा। ऑनलाइन आवेदन की प्रारंभिक एवं अंतिम तिथि, सुधार की तिथि एवं परीक्षा का समय व्यापम के वेबसाइट पर बाद में घोषित किए जाएंगे।

महतारी वंदन योजना के लिए आवेदन जमा करने की तारीख नहीं बढ़ेगी: साव

रायपुर। महतारी वंदन योजना के आवेदन करने के लिए 20 फरवरी अंतिम तारीख थी। मंगलवार शाम 6 बजे तक आवेदन जमा किए गए। उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने स्पष्ट कर दिया है कि आवेदन की अंतिम तिथि में बढ़ोतरी नहीं होगी। सोमवार तक 70 लाख से ज्यादा आवेदन जमा हो चुके थे।

विधानसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी ने सरकार आने पर महतारी वंदन योजना का लाभ देने की बात कही थी। प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने के पीछे योजना की अहम भूमिका मानी गई थी। योजना के तहत आयकर की सीमा में नहीं आने वाली प्रत्येक विवाहित महिला को प्रति माह हजार रुपए देने का प्रावधान है। भाजपा के सरकार आने के बाद मुख्यमंत्री साय ने इस योजना को सरकार की प्राथमिकता में रखते हुए बजट में खास प्रावधान किया गया है। महतारी वंदन योजना के तहत 18 फरवरी तक 69 लाख 39 हजार 125 आवेदन प्राप्त हुए हैं। प्रदेश में महिलाओं ने 18 फरवरी को एक दिन में ही 1 लाख 10 हजार से अधिक आवेदन किया है।

महतारी वंदन योजना के अंतर्गत अब तक कोरबा में 02 लाख 63 हजार 956, बलरामपुर जिले में 2 लाख 4 हजार 584, कबीरधाम में 02 लाख 45 हजार 193, कोण्डागांव में 01 लाख 30 हजार 32, सूरजपुर में 02 लाख 02 हजार 12, बस्तर में 01 लाख 75 हजार 556, गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही में 87 हजार 212, जशपुर में 02 लाख 23 हजार 65, रायगढ़ में 02 लाख 96 हजार 599, दुर्ग में 03 लाख 59 हजार 813 फॉर्म

मिले हैं।

वहीं गरियाबंद में 01 लाख 85 हजार 293, जांजगीर-चांपा में 02 लाख 98 हजार 121, बलौदाबाजार में 03 लाख 31 हजार 18, बालोद में 02 लाख 52 हजार 597, बिलासपुर में 03 लाख 78 हजार 85, सारंगढ़-बिलाईगढ़ में 02 लाख 277, राजनांदगांव में 02 लाख 62 हजार 809, दंतेवाड़ा में 55 हजार 146, सरगुजा में 02 लाख 27 हजार 880, कोरिया में 60 हजार 896, रायपुर में 05 लाख 54 हजार 678, सक्ती में 02 लाख 440 फॉर्म भरे गए हैं।

साथ ही साथ, बेमेतरा में 02 लाख 67 हजार 691, खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई में 01 लाख 13 हजार 817, मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर में 99 हजार 982, धमतरी में 02 लाख 56 हजार 11, बीजापुर में 33 हजार 413, मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी में 88 हजार 447, मुंगेली में 02 लाख 49 हजार 961, महासमुंद में 03 लाख 36 हजार 42, सुकमा में 50 हजार 287, नारायणपुर में 26 हजार 27 और कांकेर में 02 लाख 22 हजार 185 आवेदन मिल चुके हैं।

ड्रोन से 40 किलोमीटर दूर अंबिकापुर कॉलेज से उदयपुर पीएचसी भेजी गई दवाइयां और ब्लड सैंपल

रायपुर। छत्तीसगढ़ के दूरस्थ अंचलों में अब ड्रोन से जरूरी दवाइयां और ब्लड सैंपल आसानी से भेजे जा सकेंगे। पहले चरण में प्रयोगिकतौर पर राजमाता देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय अंबिकापुर में ड्रोन से ट्रायल किया गया। मेडिकल कॉलेज से 40 किलोमीटर दूर उदयपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र से ड्रोन के माध्यम से जांच के लिए ब्लड सैम्पल एवं ओटी कल्चर के लिए सैंपल ड्रोन से भेजे गये। यह प्रयोग सफल रहा। इस ट्रायल के बाद अब इसे राज्य के अन्य हिस्सों में भी लागू किया जा सकता है।

भारत सरकार के पायलेट प्रोजेक्ट यूज ऑफ ड्रोन टेक्नॉलॉजी इन हेल्थ सर्विस डिलीवरी के लिए छत्तीसगढ़ से अंबिकापुर स्थित राजमाता देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय का चयन हुआ है। इसके अंतर्गत ड्रोन के माध्यम से सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र उदयपुर से ब्लड सैंपल शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय में मिल सकेगा। जांच के बाद रिपोर्ट सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र उदयपुर भेजी जायेगी।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निर्देश पर स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल राज्य में स्वास्थ्य सुविधाएं बढ़ाने के लिए तैयार हैं। इसी तारतम्य में हाल ही में राज्य में 250 से ज्यादा मेडिकल आफिसर और विशेषज्ञ चिकित्सकों की नियुक्ति भी की गयी है। सरगुजा एवं बस्तर क्षेत्र के दूरस्थ क्षेत्रों में स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों की लैब में कई जांच नहीं होती हैं और इन्हें निकटतम रेफर सेंटर्स में भेजना पड़ता है। ऐसी स्थिति में ड्रोन सुविधा मरीजों के लिए वरदान साबित हो सकती है। ट्रायल परीक्षण में ड्रोन को मेडिकल कॉलेज अम्बिकापुर से उदयपुर पहुंचने मे 30 मिनट का समय लगा, जहां उदयपुर के झिरमिटी स्टेडियम ग्राउंड में उसका सफल लैंडिंग कराया गया। 15 मिनट के अंदर

ब्लड सैंपल जिसका वजन लगभग 600 ग्राम था, ड्रोन मे लोड किया गया और वापस ड्रोन को मेडिकल कॉलेज अम्बिकापुर भेज दिया गया।

दो दीदीयों को दी गई ट्रेनिंग

इस प्रोजेक्ट के लिए दो स्व-सहायता समूह की ड्रोन दीदीयों को, ड्रोन संचालन की ट्रेनिंग के लिए दिल्ली भेजा गया था। जिसमें से सैंपल लोडिंग एवं अनलोडिंग के कार्य के लिए एक ड्रोन दीदी को उदयपुर एवं एक ड्रोन दीदी अम्बिकापुर के लिए प्रशिक्षित किया गया है। इस प्रोजेक्ट के सफल होने पर राज्य के समस्त जिलों में इसे लागू किया जायेगा। दूरस्थ इलाके से भर्ती मरीज को तत्काल जांच एवं सैपल रिपार्टिंग की जानकारी वायु परिवहन के माध्यम से सुविधा उपलब्ध कराना सरगुजा जिले के लिए एक वरदान साबित हो सकती है।

रायपुर से अयोध्या हवाई सेवा, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने सिंधिया को दिया पत्र

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव ने रायपुर से अयोध्या हवाई सेवा की शुरुआत करने का आग्रह केन्द्रीय नागरिक एवं उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से किया। दिल्ली प्रवास के दौरान बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष ने उन्हें जल्द से जल्द ये सुविधा शुरू करने का पत्र दिया।

किरण सिंह देव ने कहा छत्तीसगढ़ माता कौशल्या की भूमि है। इस कारण हम सभी भगवान श्रीराम को अपना भांजा मानते हैं। श्रीराम जन्मभूमि पर रामलला की भव्य और दिव्य प्राण प्रतिष्ठा से प्रधानमंत्री मोदी के प्रति प्रदेश में समर्थन और विश्वास बढ़ा है। अब श्रीरामलला दर्शन योजना भी शुरू कर दी गई है। आस्था स्पेशल ट्रेन के जरिए रामभक्त रामलला के दर्शन करने अयोध्या पहुंच रहे हैं।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने आगे कहा हवाई सेवा के जरिए रायपुर से अयोध्या जाने के लिए सीधी उड़ान नहीं होने के

कारण छत्तीसगढ़ के श्रद्धालुओं को काफी परेशानी हो रही है, जिसके कारण प्रदेश की जनता रायपुर से अयोध्या तक सीधी उड़ान की मांग कर रही है। रायपुर से अयोध्या को सीधे हवाई सेवा से जोड़ने से यात्रियों और श्रद्धालुओं के समय और धन की बचत के साथ साथ भगवान श्री राम के मंदिर दर्शन करने में भी सुविधा होगी।

रामलला दर्शन योजना के तहत छत्तीसगढ़ सरकार प्रदेशवासियों को अयोध्या रामलला के दर्शन करा रहा है। दुर्ग, रायपुर, बिलासपुर से हर हफ्ते आस्था स्पेशल ट्रेन अयोध्या जा रही है। अब तक प्रदेश के हजारों श्रद्धालु रामलला के दर्शन कर चुके हैं।

लोकसभा चुनाव की तैयारी में जुटा निर्वाचन आयोग

रिटर्निंग और उप जिला निर्वाचन अधिकारियों को दी गई ट्रेनिंग

रायपुर। लोकसभा चुनाव से पहले भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार प्रदेश के रिटर्निंग अधिकारियों और सहायक रिटर्निंग अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। रिटर्निंग अधिकारियों और सहायक रिटर्निंग अधिकारियों के सर्टिफिकेशन कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी रीना बाबा साहेब कंगाले ने कहा है कि निर्वाचन की विश्वसनीयता, निष्पक्षता और पारदर्शिता बनाए रखना ही निर्वाचन अधिकारी की योग्यता की कसौटी है। निर्वाचन अधिकारी के प्रत्येक काम में यह प्रदर्शित होना चाहिए।

निमोरा स्थित छत्तीसगढ़ प्रशासन अकादमी में इंडिया इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डेमोक्रेसी एंड इलेक्शन मैनेजमेंट (आईआईआईडीईएम) की ओर से सहायक रिटर्निंग अधिकारियों के लिए 19 फरवरी से 23 फरवरी तक पांच दिवसीय सर्टिफिकेशन कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। प्रशिक्षण में 11 रिटर्निंग अधिकारी, 15 जिला निर्वाचन अधिकारी, 33 उप जिला निर्वाचन अधिकारी और 90 सहायक रिटर्निंग अधिकारी हिस्सा ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि नव पदस्थ जिला निर्वाचन अधिकारियों और उप जिला निर्वाचन अधिकारियों के लिए लोकसभा आम निर्वाचन के लिए दो दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम की भी शुरूआत हो गई है।

इस मौके पर लोकसभा निर्वाचन-2024 में बीते विधानसभा निर्वाचन-2023 की तरह बेहतर और सुगम निर्वाचन की दिशा में काम करने का आह्वान किया। दोनों प्रशिक्षणों के शुभारंभ पर अतिरिक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी निलेश कुमार महादेव क्षीरसागर, संयुक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी द्वय पीएस ध्रुव और डॉ. केआरआर सिंह सहित मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

प्रशिक्षण में राष्ट्रीय स्तर के मास्टर ट्रेनर्स डॉ. केआरआर सिंह, यूएस अग्रवाल, प्रणव सिंह, श्रीकांत वर्मा, पुलक भट्टाचार्य और गीता दीवान सहित राज्य स्तर के अनुभवी प्रशिक्षकों की ओर से इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनई(वीएम), व्हीवीपेट के उपयोग, मतदान दल और दिव्यांग मतदाता की सहूलियतें, पेड न्यूज, मीडिया और मीडिया मॉनिटरिंग कमेटी, मतगणना और परिणाम की घोषणा के साथ ही सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग और मतगणना एप्लीकेशन पर भी जानकारी दी जा रही है।

मंडी बोर्ड के 30 पदों पर भर्ती परीक्षा 25 फरवरी को

रायपुर। छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मंडल की ओर से राज्य कृषि विपणन (मंडी) बोर्ड की परीक्षा 25 फरवरी को होगी। रायपुर के अंतर्गत सहायक संचालक, सचिव वरिष्ठ, सचिव कनिष्ठ पद के लिए भर्ती परीक्षा होगी। अभ्यर्थी अपनी व्यापम की प्रोफाइल में जाकर एडमिट कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं। इसके लिए प्रदेश के 8 जिला मुख्यालयों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। अभ्यर्थी भर्ती परीक्षा के प्रवेश पत्र व्यापम की वेबसाइट vyapam.cgstate.gov.in और https://vyapamaar.cgstate.gov.in/, चिप्स की वेबसाइट http://cgstate.gov.in जनसंपर्क की वेबसाइट, https://dprcg.gov.in, छत्तीसगढ़ राज्य कृषि विपणन बोर्ड, रायपुर, की वेबसाइट www.agriportal.cg.nic.in पर उपलब्ध लिंकों में से किसी भी एक लिंक पर क्लिक करके अपने प्रोफाइल लॉगिन पेज पर जा सकते हैं और प्रवेश पत्र डाउनलोड कर सकते हैं। अभ्यर्थियों को उनके पंजीकृत मोबाइल नंबर पर एसएमएस के माध्यम से एक संक्षिप्त यूआरएल प्राप्त होगा। यूआरएल को क्लिक कर अपने मोबाइल पर सीधे एडमिट कार्ड प्राप्त कर उसका प्रिंट आउट ले सकते हैं।

प्रवेश पत्र में अभ्यर्थी की प्रति के साथ ही प्रत्येक परीक्षा पाली के दौरान परीक्षा केन्द्र में जमा की जाने वाली व्यापम की प्रति भी है। अतः अभ्यर्थी संपूर्ण प्रवेश पत्र डाउनलोड करें और उसका प्रिंट आउट निकाले। परीक्षा दिवस को प्रत्येक परीक्षार्थी डेढ़ घंटे पहले अपने परीक्षा केन्द्र में उपस्थित रहें, जिससे उनके मूल पहचान पत्र से उनकी पहचान की जा सके। परीक्षा केंद्र में जाने के लिए अनुमति दी जा सके।

किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा केन्द्र के संबंध में कठिनाई होती है तो हेल्पलाइन नंबर 0771-2972780 और मोबाइल नंबर 8269801982 पर संपर्क कर सकते हैं। यदि इंटरनेट से प्राप्त प्रवेश पत्र पर फोटो नहीं आता है, तो अभ्यर्थी अपने साथ दो रंगीन पासपोर्ट साइज फोटो लेकर परीक्षा केंद्र में आने को कहा गया है। परीक्षार्थियों को डाकघर के माध्यम से प्रवेश पत्र नहीं भेजा जाएगा। परीक्षार्थी परीक्षा दिवस से एक दिन पहले ही अपने परीक्षा केन्द्र की जानकारी प्राप्त कर लें।

ये लगेंगे जरूरी दस्तावेज- फोटोयुक्त मूल आईडी, मतदाता पहचान पत्र, ड्रायविंग लायसेंस, पेन कार्ड, आधार कार्ड (ई-आधार कार्ड भी मान्य), पासपोर्ट, विद्यालय का फोटोयुक्त परिचय पत्र, फोटोयुक्त अंकसूची मूलरूप में (फोटो कॉपी मान्य नहीं), मूल पहचान पत्र के अभाव में परीक्षा केन्द्र में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, संभाग बलौदाबाजार
जिला-बलौदाबाजार-भाटापारा (छ.ग.)

Office Phone-07727-296695 Email ID ee-res.bhanpur@nic.in

//ई-निविदा आमंत्रण सूचना क्र.-58//
(प्रथम बार)

क्रमांक /392/निविदा/ग्रा.यां.से. /2023-24 बलौदाबाजार, दिनांक 14/02/2024

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु ऑनलाईन (Online) निविदा प्रतिशत दर पर दिनांक **25.02.2024** तक ऑनलाईन ई-निविदा आमंत्रित की जाती है-

सिस्टम टेंडर नं.	कार्य का विवरण	ठेके की अनुमानित लागत (लाख में)	आनलाईन निविदा आमंत्रण की अंतिम तिथि
1	2	3	4
152886	Cons. Of 3KLW Fecal Sludge manegment Plant (Screening Chameber And Planted Drying Bed, Cons. Of Integrated Settler & Anaerobic Filter, Cons. Of Planted Gravel Filter,Cons. Of Polishing Pond, Embanement With Rigid Paverment, Chainlinged Wire Fancing & Gate) Villege Sakari, Block- Balodabazar	27.28	25.02.2024

2/ निविदा की सामान्य शर्तें, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति (परिशिष्ट -2.10 एवं निविदा दस्तावेज परिशिष्ट-2.13) यथा संशोधित व अन्य जानकारी बेबसाइट http://eproc.cgstate.gov. in में अथवा कार्यालयीन अवधि में कार्यालय में उपस्थित होकर दिनांक 14.02.2024 से देखी जा सकती है।

(आर.ओर. महिलांगे)
कार्यपालन अभियंता, ग्रा.यां. सेवा संभाग-बलौदाबाार
जी-07888/5 जिला बलौदाबाजार-भाटापारा (छ.ग.)

बिना सुकून जीत का जुनून

संजय तिवारी

नरेन्द्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी राजनीति में ऐसी जोड़ी है जो बड़ी से बड़ी जीत से संतुष्ट नहीं होती, बल्कि उस जीत के बाद और बड़ी जीत को हासिल करने में लग जाती है। 2001 में जब नरेन्द्र मोदी को मुख्यमंत्री बनाकर संघ/भाजपा ने गुजरात की कमान सौंपी थी तब उनको भी ये अनुमान नहीं था कि एक दिन यही मोदी न केवल गुजरात की कलह को खत्म कर पार्टी को अजेय बना देंगे बल्कि भाजपा को उसके इतिहास की अनवरत बड़ी से बड़ी जीत दिलाते जाएंगे। गुजरात में मोदी और अमित शाह की जोड़ी ने जो जीत दर जीत हासिल की, वही क्रम उन्होंने केन्द्र में भी दोहरा दिया। 2014 से बड़ी जीत 2019 में मिली और अब 2023 में वो पिछली जीत से भी बड़ी जीत हासिल करना चाहते हैं। वो जीत चाहते हैं और उन्हें जीत मिल जाती है, ऐसा होता नहीं है। जीत और सीट का जो लक्ष्य निर्धारित करते हैं उसके लिए जीतोड़ मेहनत करते हैं, साम-दाम-दंड-भेद वाली नीति चतुष्टय का इस्तेमाल करते हैं। अंततः असंभव से दिखनेवाले उनके लक्ष्य संभव सी जीत में बदल जाते हैं। बीते दस सालों के दौरान विधानसभा चुनावों में भी तीन चार मौके ही ऐसे आये हैं जब उनका गणित गड़बड़ाया हो। वरना वो जो तय करते हैं, उसे हासिल करते हैं। हासिल करते ही अगले लक्ष्य निर्धारित करके उसे पाने में जुट जाते हैं। यही कारण है कि जब अमित शाह ने 2013 में पार्टी की चुनावी कमान संभाली तो पूर्ण बहुमत का संदेश पार्टी कार्यकर्ताओं को दिया। उस समय वो बतौर चुनाव कोआर्डिनेटर ही काम कर रहे थे लेकिन उनकी हैसियत पार्टी अध्यक्ष से कम न थी। जब अमित शाह पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं को यह टार्गेट दे रहे थे तब पार्टी में ही किसी को भरोसा नहीं था कि भाजपा को अकेले दम पर पूर्ण बहुमत मिल जाएगा। उस समय तक मोदी %सबसे पॉपुलर% लीडर भले बन चुके थे फिर भी 282 सीटें अपने अकेले के बूते जीतना इतना आसान तो नहीं था? पार्टी में नेता दाहिने बायें से यही कहते रहे कि पूर्ण बहुमत का लक्ष्य है तो सबसे ज्यादा सीटें तो ही आ ही जाएंगी। लेकिन दूसरी ओर मोदी शाह की जोड़ी ने स्वतंत्र रूप से इतना तगड़ा कैम्पेन चलाया कि जनता पर जादू चल गया। सोशल मीडिया हो या मीडिया, सब पर मोदी छा गये। चुनाव के 4 महीने पहले से उनकी रैलियां शुरु हो गयीं। वो लोग जानते थे कि दिल्ली का रास्ता यूपी से होकर ही जाता है इसलिए सबसे अधिक फोकस यूपी पर ही किया। खुद मोदी बनारस से प्रत्याशी बनकर पहुंच गये और परिणाम आया तो विपक्ष से अधिक पार्टी के नेता चौंक गये। पूर्ण बहुमत मिल चुका था। आमतौर पर जो दल सत्ता में रहता है तो दूसरी बार या तो वह हारता है या फिर उसकी सीटें कम होती हैं। इसे राजनीतिक लोग एन्टी इन्कम्बैंसी कहते हैं। लेकिन 2019 में मोदी शाह की जोड़ी ने 2014 से बड़ी जीत हासिल करते हुए 303 सीटें जीत ली। यह 2014 के 282 से 21 सीट अधिक थी। अब 2023 में वो दोनों 370 सीट जीतने का लक्ष्य घोषित कर चुके हैं। तो क्या यह सिर्फ उनके कार्यकर्ताओं में जोश भरने के लिए तैयार किया गया आंकड़ा है या सचमुच तीसरी बार उनकी सबसे बड़ी जीत होने जा रही है? अब तक का इस जोड़ी की जीत का ट्रैक रिकार्ड देखें यह सिर्फ कश्मीर से धारा 370 को खत्म करने का सांकेतिक लक्ष्य नहीं है। जब उन्होंने ऐसा कहा है तब उनके पास निश्चित रूप से पूरा खाका तैयार होगा। वो दोनों जानते हैं कि 37.36 प्रतिशत वोट और 303 सीट जीत लेने के बाद इसके आगे एक एक सीट पर बढ़ने के लिए जीती हुई सीटों के साथ हारी हुई सीटों पर फोकस करना होगा। वो ऐसा ही कर रहे हैं। लेकिन सिर्फ रणनीति बना लेने से चुनाव नहीं जीते जाते। चुनाव जीतने के लिए कैडर या पार्टी वर्करों का आक्रामक होकर मैदान में उतरना जरुरी होता है। कैडर या पार्टी वर्कर को आक्रामक बनाने के लिए उनके मन में संतोष नहीं बल्कि असंतोष की आग जलानी होती है। उनके सामने नया लक्ष्य रखना होता है ताकि वो जो हासिल हुआ है उस पर संतोष करने के बजाय नये लक्ष्य को पाने में लग जाएं। इसलिए रविवार को दिल्ली में बीजेपी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में खुद नरेन्द्र मोदी ने ही कार्यकर्ताओं और नेताओं के सामने कई नये नये लक्ष्य रख दिये। जैसे, अगले कार्यकाल में भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाना है और 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है।

कल्कि धाम की पोटली में भाजपा के चावल

अजय बोकिल

भगवान विष्णु के दो अवतारों राम और कृष्ण के साथ अब दसवें और अंतिम अवतार कल्कि के रूप में उत्तर प्रदेश में भाजपा का नया चुनावी दांव है। सनातन धर्म में विष्णु के दस अवतारो में सबसे कम चर्चित शायद भगवान कल्कि ही हैं, क्योंकि उनका अवतार दरअसल भविष्य की कल्पना है, लेकिन यूपी की मुस्लिम बहुत संभल लोकसभा सीट पर इस बार भाजपा कल्कि धाम के सहारे भगवा फहराने का अरमान पाले है। इस अरमान के सारथी बने हैं कुछ ही दिन पहले कांग्रेस से भाजपा में आए संत राजेनता आचार्य प्रमोद कृष्णम्। प्रमोद कृष्णम् यहां भगवान कल्कि का भव्य मंदिर बनवा रहे हैं, जिसका शिलान्यास प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया।

कहा जा रहा है कि अयोध्या में राम लला के मंदिर के बाद यह दूसरा आध्यात्मिक धार्मिक स्थल है, जिसकी आधार शिला प्रधानमंत्री ने रखी। इस अवसर पर मोदी ने अपने भाषण में कहा कि यह भारत के सांस्कृतिक नवजागरण का एक और क्षण है। उन्होंने कहा कि भगवान कल्कि कालचक्र के परिवर्तन के प्रेरणा स्रोत हैं। शायद इसलिए कल्कि धाम एक ऐसा धाम होने जा रहा है जो उन भगवान को समर्पित है जिनका अभी अवतार होना बाकी है। हजारों वर्ष की आस्था के लिए अभी से उसकी तैयारी यानी हम लोग भविष्य को लेकर कितने तैयार होकर रहने वाले लोग हैं। प्रमोद जी को कल्कि मंदिर के लिए काफी लड़ाई लड़नी पड़ी। कोर्ट के चक्कर लगाने पड़े। कहा गया कि मंदिर बनाने से शांति व्यवस्था बिगड़ जाएगी। आज हमारी सरकार में प्रमोद कृष्णम जी निश्चिंत होकर इस काम को शुरू कर पाए हैं। मंदिर शिलान्यास के मौके पर भी प्रधानमंत्री राजनीतिक कटाक्ष करने से नहीं चूके। उन्होंने प्रमोद कृष्णम् के स्वागत भाषण का हवाला देते हुए कहा कि अच्छा हुआ आपने कुछ दिया नहीं। वरना जमाना इतना बदल गया है कि आज के युग में सुदामा श्री कृष्ण को एक पोटली में चावल देते तो वीडियो निकल जाता, सुप्रीम कोर्ट में पीआईएल लग जाती और जजमेंट आता कि भगवान कृष्ण को भ्रष्टाचार में कुछ दिया गया और भगवान कृष्ण भ्रष्टाचार कर रहे थे। इसमें हम क्यों फंसें। प्रधानमंत्री ने जो कहा उसका राजनीतिक आशय यही है कि कल्कि मंदिर की पोटली में भाजपा की राजनीतिक विजय के

चावल बंधे हुए हैं।

पहले भगवान कल्कि की बात। गरूड पुराण के अनुसार कल्कि भगवान विष्णु के दसवे और अंतिम अवतार माने गए हैं, जिनका अवतरण कलियुग के अंतिम चरण में होना है। उनका अवतरण भले ही भविष्य में होना है, लेकिन उनकी जीवन कुंडली पुराणों में पहले से अतीत की तरह वर्णित है। कल्कि पुराण के अनुसार भगवान कल्कि का जन्म उत्तर भारत के संभल ग्राम में एक ब्राह्मण परिवार में पिता विष्णुयशस व माता सुमति के यहां हुआ। कल्कि सफेद घोड़े पर सवार होकर और हाथ में तलवार लिए अवतरित होंगे और पृथ्वी पर अधर्म का नाश करेंगे। उनके अवतरण पर कलियुग का समापन और सतयुग का नवारंभ होगा। यानी कि एक कालचक्र पूर्ण होगा। भगवान कल्कि की दो पत्नियां पद्मावती और रमा है। इनमें से पद्मावती से उन्हें दो पुत्र जय और विजय हैं। ये जय और विजय वही हैं, जो वैष्णव सम्प्रदाय के हर मंदिर के प्रवेश द्वार पर प्रहरी के रूप में चित्रित होते हैं। दूसरी पत्नी रमा से उन्हें पुत्री मेघमाला और पुत्र बलाहक की प्राप्ति होती है।

कल्कि अवतार का उल्लेख केवल हिंदू धर्मग्रंथों में ही नहीं बल्कि अन्य धर्मों के ग्रंथों में भी है। तिब्बती बौद्ध धर्म के कालचक्र तंत्र में कल्कि का उल्लेख है। इसमे कई कल्कियों का जिक्र है। अंतिम कल्कि को रूद्र कर्किन कहा गया है जो बौद्ध और हिंदू सैनिको के साथ मिलकर अनार्यों का संहार करते हैं। सिख धर्म के 'दशम ग्रंथ' में कल्कि को 24 वां अवतार बताया गया है जो धर्म के लिए लड़ता है और अधर्म का नाश करता है। 'महाभारत' में एक जगह कल्कि को विष्णु के परशुराम अवतार का ही विस्तार बताया गया है। कुछ विद्वानो का मानना है कि पुराणों में कल्कि अवतार की संकल्पना भारत पर विदेशी और विधर्मी जातियों के हमलों के बाद की गई। इस्लाम के अहमदिया सम्प्रदाय (जो पाकिस्तान में गैर मुस्लिम घोषित है तथा जिस पर हज यात्रा करने पर प्रतिबंध है) के संस्थापक मिर्जा गुलाम अहमद ने दावा किया था कि वो कल्कि के अवतार हैं, जिन्हें मेहदी कहा गया। इसी तरह बहाई धर्म (ईरान में प्रतिबंधित) में कल्कि को ईश्वर का दूत माना गया है।

इस कल्कि मंदिर का निर्माण 11 फीट ऊंचे चबूतरे पर होगा और इसके शिखर की ऊंचाई 108 फीट होगी। मंदिर में 68 तीर्थों की स्थापना होगी। मंदिर पत्थरों से ही बनेगा। ये गुलाबी पत्थर राजस्थान के भरतपुर जिले में स्थित बंशी पहाड़पुर से लाए जाएंगे। मंदिर में भगवान विष्णु के 10 अवतारों के लिए दस अलग-अलग गर्भगृह बनाए जाएंगे। पूरा मंदिर पांच एकड़ में पांच वर्ष में बनकर तैयार होगा। वैसे विष्णु का दसवां अवतार होने के बाद भी देश में कल्कि के मंदिर नाम मात्र को हैं। उनका एक प्राचीन मंदिर जयपुर में है।

इसके अनुसार 4320 वीं शती में कलियुग के अन्त समय कल्कि अवतार लेंगें। वे जन्म से ही 64 कलाओ से युक्त होंगे। यह सन 2585 ई में ही यह संभव होगा, जब गुरु व शनि अपनी उच्च राशियों में एक ही साथ हो। विष्णु पुराण के अनुसार हिंदू धर्म में कलियुग को 4 लाख 32 हजार सौर वर्ष का बताया गया है। अगर कलियुग समय की आधुनिक गणना की जाए तो इसकी शुरुआत 3120 ईसा पूर्व हुई थी, जब मंगल, बुध, शुक्र, बृहस्पति और शनि पांच ग्रह मेष राशि पर 0 डिग्री पर थे। कलियुग की इस महाअवधि में से अब तक (3102+2023) यानी 5125 साल बीत चुके हैं। 4 लाख 26 हजार 875 वर्ष अभी बाकी हैं। वर्तमान समय कलियुग का प्रथम चरण है। इसका अर्थ यह है कि कल्कि का मंदिर भले ही अभी बन रहा हो, लेकिन उनका पृथ्वी पर अवतरण सवा 4 लाख साल बाद होगा।

यहां तर्क दिया जा सकता है कि कल्कि धाम करोड़ों हिंदुओं की आस्था का विषय है और इसे राजनीतिक आख्यान के संदर्भ में ही नहीं देखा जाना चाहिए। हालांकि भगवान कल्कि का जन्म जब होगा, तब मानव सभ्यता किस दौर में होगी, होगी भी या नहीं, हमारी पृथ्वी भी कायम रहेगी अथवा नहीं, यह कहना अभी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिए भी बताना मुश्किल है। लेकिन वर्तमान राजनीतिक संदर्भ में भाजपा के लिए धार्मिक आस्था के साथ उसका राजनीतिक महत्व जरूर है और भगवान कल्कि कम से कम संभल सीट भाजपा को जिताने में मदद कर सकते हैं।

हालांकि, जातीय समीकरण को देखते हुए उसे कल्कि मंदिर का कोई खास लाभ होता नहीं दिखता। क्योंकि कल्कि देवता ब्राह्मण जाति से हैं। भगवान राम की तरह क्षत्रिय या कृष्ण की तरह यादव नहीं। वैसे संभल सीट ज्यादातर सपा के पास ही रही है, क्योंकि इस सीट पर मुस्लिम 55, यादव 10 फीसदी और दलित वोट 17.45 फीसदी हैं। यहां सीधा हिंदू-मुसलमान ध्रुवीकरण भाजपा को नहीं जिता सकता। होता। मुस्लिम वोटों के विभाजन पर ही भाजपा की जीत का गणित टिका है। सपा ने इस बार फिर जिन शफीकुर्रहमान को टिकट दिया है, वो 94 साल के हैं और अपने विवादास्पद बयानों के लिए जाने जाते हैं, इससे वहां के दूसरे मुस्लिम नेता भी खफा है। 2019 में यहां से सपा के डॉ. शफीकुर्रहमान अपने निकटतम भाजपा प्रत्याशी परमेश्वरलाल सैनी को पौने 2 लाख वोटों से हराकर जीते थे। उस चुनाव में सपा- बसपा का गठबंधन था। इसलिए मुस्लिम वोटों का विभाजन नहीं हुआ। लेकिन यही शफीकुर्रहमान 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के सत्यपाल सैनी से मात्र 5 हजार वोटों से हार गए थे। तब बसपा के मुस्लिम प्रत्याशी ने 23.9 फीसदी वोट काट लिए थे। उसी चुनाव में कांग्रेस के आचार्य प्रमोद कृष्णम 1.5 फीसदी वोट लेकर पांचवे नंबर पर रहे थे। इस बार बसपा द्वारा अलग चुनाव लड़ने की घोषणा से भाजपा प्रत्याशी के फिर से जीतने की स्थिति बन सकती है। चूंकि भाजपा ने यूपी की सभी 80 सीटों पर जीतने का प्लान बनाया है, इसलिए मुमकिन है कि वह संभल से आचार्य प्रमोद कृष्णम को ही टिकट दे दे।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

महोपनिषद् (भाग-11)

गतांक से आगे...

जो पुरुष राग-द्वेष, सुख-दुःख, मान-अपमान, धर्म-अधर्म एवं फलाफल की इच्छा-आकांक्षा न रखता हुआ सदैव अपने कार्यों में व्यस्त रहता है, वही मनुष्य जीवन्मुक्त कहलाता है। जो अहंभाव को त्याग करके, मान एवं मत्सर से रहित, उद्वेगरहित तथा संकल्पविहीन रहकर कर्म करता रहता है, उसी पुरुष को ज्ञानीजन जीवन्मुक्त कहते हैं।

जो सर्वत्र मोहरहित होकर साक्षी भाव से जीवनयापन करता है तथा बिना किसी फल की कामना किये ही अपने कर्त्तव्य कर्म में रत रहता है, वही जीवन्मुक्त है। जिसने धर्म-अधर्म का, सांसारिक विषय के चिन्तन का तथा सभी तरह की कामनाओं का परित्याग कर दिया है, उसे ही जीवन्मुक्त कहा गया है। यह समस्त दृश्य प्रपञ्च जो दृष्टिगोचर हो रहा है, उसका जिसने पूरी तरह से परित्याग कर दिया है, वही जीवन्मुक्त कहलाता है। जो ज्ञानी पुरुष खट्टे, चरपरे, कड़वे, नमकीन, स्वादयुक्त एवं अस्वाद को एक जैसा मानकर भोजन ग्रहण करता है, वही जीवन्मुक्त कहलाता है। जरा, मृत्यु, विपत्ति, राज्य एवं दारिद्र्य आदि में से जो समान भाव रखते हुए हर स्थिति में सन्तुष्ट रहता है, वही जीवन्मुक्त कहलाता है। जिसने धर्म-अधर्म, सुख-दुःख एवं जन्म-मृत्यु आदि का अपने हृदय से पूर्णरूपेण परित्याग कर दिया है, वही वास्तव में जीवन्मुक्त कहलाता है।

जो मनुष्य उद्वेग एवं आनन्द से रहित है तथा शोक और हर्षोल्लास में समान भाव एवं परिष्कृत बुद्धि से सम्पन्न है। सभी तरह की इच्छाओं एवं आकांक्षाओं, कामनाओं तथा सारे निश्चयों को जिसने मन से पूर्णतः त्याग दिया है, वही जीवन्मुक्त कहलाता है। उत्पत्ति, पालन एवं प्रलय की अवस्था में तथा प्रगति और अवनति में जिस पुरुष का मन समान रहता है, वही जीवन्मुक्त कहलाता है।

क्रमशः ...

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म 21 फ़रवरी 1896 को बंगाल की महिषादल रियासत (ज़िला मेदिनीपुर) में हुआ। इस जन्मतिथि को लेकर अनेक मत हैं, लेकिन इस पर विद्वतजन एकमत हैं कि 1930 से निराला वसंत पंचमी के दिन अपना जन्मदिन मनाया करते थे। 'महाप्राण' नाम से विख्यात निराला छायावादी दौर के चार स्तंभों में से एक हैं। उनकी कीर्ति का आधार 'सरोज-स्मृति', 'राम की शक्ति-पूजा' और 'कुकुरमुत्ता' सरीखी लंबी कविताएँ हैं; जो उनके प्रसिद्ध गीतों और प्रयोगशील कवि-कर्म के साथ-साथ रची जाती रहीं। उन्होंने पर्याप्त कथा और कथेतर-लेखन भी किया। बतौर अनुवादक भी वह सक्रिय रहे। वह हिंदी में मुक्तछंद के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। वह मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति के पक्षधर हैं। वर्ष 1930 में प्रकाशित अपने

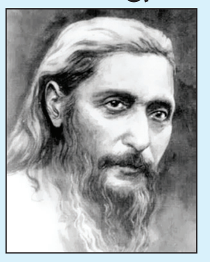

कविता-संग्रह 'परिमल' की भूमिका में उन्होंने लिखा- ''मनुष्यों की मुक्ति कर्म के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है।''

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की पहली नियुक्ति महिषादल राज्य में ही हुई। उन्होंने 1918 से 1922 तक यह नौकरी की। उसके बाद संपादन, स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य की ओर प्रवृत्त हुए। 1922 से 1923 के दौरान कोलकाता से प्रकाशित समन्वय का संपादन किया, 1923 के अगस्त से मतवाला के संपादक मंडल में कार्य किया। इसके बाद लखनऊ में गंगा पुस्तक माला कार्यालय में उनकी नियुक्ति हुई जहाँ वे संस्था की मासिक पत्रिका सुधा से 1935 के मध्य तक संबद्ध रहे। 1935 से 1940 तक का कुछ समय उन्होंने लखनऊ में भी बिताया। इसके बाद 1942 से मृत्यु पर्यन्त इलाहाबाद में रह कर स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य किया। उनकी पहली कविता 'जन्मभूमि' प्रभा नामक मासिक पत्र में जून 1920 में, पहला कविता संग्रह 1923 में अनामिका नाम से, तथा पहला निबंध 'बंग भाषा का उच्चारण' अक्टूबर 1920 में मासिक पत्रिका सरस्वती में प्रकाशित हुआ।

सन् 1916 में उन्होंने प्रसिद्ध कविता जूही की कली लिखी जिससे बाद में उनको बहुत प्रसिद्धि मिली और वे मुक्त छंद के प्रवर्तक भी माने गए। निराला सन् 1922 में रामकृष्ण मिशन द्वारा प्रकाशित पत्रिका समन्वय के संपादन से जुड़े। सन् 1923-24 में वे मतवाला के संपादक मंडल में शामिल हुए। वे जीवनभर पारिवारिक और आर्थिक कष्टों से जूझते रहे। अपने स्वाभिमानी स्वभाव के कारण निराला कहीं टिककर काम नहीं कर पाए। अंत में इलाहाबाद आकर रहे और वहीं उनका देहांत हुआ।

छायावाद और हिंदी की स्वच्छंदतावादी कविता के प्रमुख आधार स्तंभ निराला का काव्य-संसार बहुत व्यापक है। उनमें भारतीय इतिहास, दर्शन और परंपरा का व्यापक बोध है और समकालीन जीवन के यथार्थ के विभिन्न पक्षों का चित्रण भी। भावों और विचारों की जैसी विविधता, व्यापकता और गहराई निराला की कविताओं में मिलती है वैसी बहुत कम कवियों में है। उन्होंने भारतीय प्रकृति और संस्कृति के विभिन्न रूपों का गंभीर चित्रण अपने काव्य में किया है।

पाकिस्तान चुनाव के बाद पड़ोस में क्या कुछ बदला?

अभिनय आकाश

पाकिस्तान में उबर कैब के एक ब्रांच करीम पाकिस्तान नाम से अपनी सेवाएं मुल्क में देता है। इस कैब सेवा का एक विज्ञापन खूब चर्चा में रहा। प्रोग्राम गोन बस्ट वाले इस सोशल मीडिया कैंपेने को नवाज शरीफ की पीएमएलएन की नाराजगी भी झेलनी पड़ी। जैसे ही देश के चुनाव नतीजे आए और इमरान खान की पीटीआई समर्थित निर्दलीय उम्मीदवारों ने सेना के पसंदीदा शरीफ-भुट्टो-जरदारी गठबंधन को पछाड़ दिया, इस वाक्यांश का इस्तेमाल पीटीआई नेताओं द्वारा यह बताने के लिए किया जाने लगा कि सेना की योजनाएं कैसे विफल हो गई थीं। जल्द ही, करीम ने स्पष्ट किया कि यह कोई राजनीतिक मुद्दा नहीं बना रहा था, बल्कि बस उनकी कैब-हेलिंग सेवा में बाद में बुकिंग विकल्प का विज्ञापन कर रहा था। हालाँकि, पीएमएल (एन) कार्यकर्ताओं ने सोशल मीडिया पर #BoycottCareem अभियान शुरू किया, खराब समीक्षाएँ पोस्ट कीं और डाउनलोड किए गए ऐप्स को हटा दिया। यह घटना पाकिस्तान में ध्रुवीकृत राजनीतिक माहौल का प्रतीक है, जिसने हाल ही में खंडित फैसले को जन्म दिया है। जबकि शरीफ के नेतृत्व वाली पीएमएल (एन), भुट्टो-जरदारी की पीपीपी सत्ता में वापस आने के लिए तैयार दिख रही है, मतदाताओं का संदेश जोरदार और स्पष्ट है दबाना संभव है लेकिन चुप रहना नहीं।

पाकिस्तान की सियासत में सरकार को अपने इशारे पर नचाने के लिए मशहूर सेना को इमरान के उभार के बाद उस तरीके से चुनौती दी गई है जिसका वह आदी नहीं है। पाकिस्तान सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर के अधिकार को चुनौती दी है, इस घटनाक्रम पर पाकिस्तान के अंदर और बाहर बारीकी से नजर रखी जा रही है। अंग्रेजी अखबार इंडियन एक्सप्रेस ने द फ्राइडे टाइम्स के एडिटर-एट-लार्ज और नया दौर मीडिया के संस्थापक रज़ा रूमी के हवाले से अपनी रिपोर्ट में कहा है कि पाकिस्तान

का प्रतिष्ठान राजनीति में हस्तक्षेप के लिए जाना जाता है। हालाँकि, इस बार वे भी इमरान खान के समर्थन और सहानुभूति से आश्चर्यचकित थे। पार्टी को कुचलने की उनकी नीतियाँ स्पष्ट रूप से विफल रही हैं। यह प्रतिष्ठान द्वारा फैलाई गई उस कहानी के लिए एक बड़ा झटका है कि पीटीआई एक राज्य विरोधी पार्टी है। मतदाताओं ने इसे खारिज कर दिया है और जनता, विशेषकर युवाओं के बीच सेना की स्थिति को बड़ा झटका लगा है। अब संस्था को अपनी छवि बहाल करने के लिए कदम उठाने होंगे. मुनीर के लिए अब ये बहुत बड़ी चुनौती है। नतीजों की घोषणा में देरी, इंटरनेट और मोबाइल सेवाओं को बंद करने और बड़े पैमाने पर धांधली के आरोपों ने मतदाताओं के आक्रोश को बढ़ा दिया है। वास्तव में कुछ लोग मुखर सार्वजनिक असंतोष की तुलना 1970 के चुनावों के बाद देखे गए असंतोष से कर रहे हैं, जब पूर्वी पाकिस्तान के लोगों ने सेना के आदेश को चुनौती दी थी। हालाँकि, पाकिस्तान के इतिहासकार और पंजाब के लाहौर स्थित सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में मानविकी और सामाजिक विज्ञान संकाय के डीन याकूब खान बंगश ने द इंडियन एक्सप्रेस को बताया यह पहला चुनाव नहीं है जहाँ लोगों ने यथास्थिति को चुनौती दी है। हमारे पास ऐसे कई हैं। पहली बार 1988 में जब जिया उल हक के एक दशक से अधिक शासन के बाद बेनजीर भुट्टो सत्ता में आईं। 2018 में नवाज़ शरीफ़ स्पष्ट रूप से सत्ता-विरोधी लाइन पर चले। इसके अलावा, इस चुनाव में 1970 के चुनाव से कोई समानता नहीं है, जो बंगाली अधिकारों के बारे में था।

मौजूदा चुनाव में जनरल मुनीर को इमरान खान के खिलाफ खड़ा किया गया है। उनका एक इतिहास है। तत्कालीन लेफ्टिनेंट जनरल सैयद असीम मुनीर को अक्टूबर 2018 में तत्कालीन सेना प्रमुख जनरल क़मर जावेद बाजवा द्वारा आईएसआई प्रमुख नियुक्त किया गया था। लेकिन आठ महीने बाद उन्हें तत्कालीन प्रधानमंत्री इमरान खान के आग्रह पर लेफ्टिनेंट जनरल फ़ैज़ हामिद से बदल दिया गया। पाकिस्तान में पूर्व भारतीय उच्चायुक्त, अजय बिसारिया ने अपनी पुस्तक %एंगर मैनेजमेंट, द ट्रबल्ड डिप्लोमैटिक रिलेशनशिप बिटवीन इंडिया एंड पाकिस्तान% में लिखा है, मुनीर को बर्खास्त करने का असली कारण केवल 2022 में सार्वजनिक डोमेन में आया। असीम मुनीर ने प्रथम महिला बुशरा बेगम पर गुंजाइश डालने का साहस किया और प्रधान मंत्री इमरान खान को उनके घर में भ्रष्टाचार के बारे में चेतावनी दी। इस प्रकार उनकी प्रतिद्वंद्विता शुरू हुई, और जनरल मुनीर संभवतः पाकिस्तान की कुख्यात जासूसी एजेंसी, इंटर-सर्विस इंटेलिजेंस (आईएसआई) के सबसे कम समय तक सेवा करने वाले प्रमुख हो गए। खान खुद पाकिस्तानी सेना द्वारा चुने गए उम्मीदवार थे और 2018 के चुनावों में प्रधानमंत्री के रूप में प्रसिद्ध चयनित होने से पहले, 2013 से तैयार किए गए थे। लेकिन समर्थन से बाहर होने के बाद, उन्होंने जनरलों को चुनौती देना जारी रखा। पिछले साल 9 मई को खान की गिरफ्तारी के बाद विरोध प्रदर्शन पीटीआई कार्यकर्ता और समर्थक सैन्य प्रतिष्ठानों में घुस गए, अन्यथा अछूत प्रतिष्ठान के लिए एक झटका था। पाकिस्तान की सेना ने तीन वरिष्ठ सैन्य कमांडरों को बर्खास्त कर दिया और उन विरोध प्रदर्शनों के दौरान 15 शीर्ष अधिकारियों को उनके आचरण के लिए अनुशासित किया, जिसे कई लोगों ने दशकों में अपने ही सदस्यों के खिलाफ सेना द्वारा की गई सबसे कड़ी कार्रवाई कहा।

चुनाव जनादेश छीनने के बाद पीटीआई कार्यकर्ता अब कुछ चुनाव परिणामों को चुनौती दे रहे हैं, जबकि धांधली और अन्य कदाचार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। पाकिस्तान के टीवी चैनल, चैनल24 में राजनयिक और रणनीतिक मामलों के संपादक और बेस्टसेलिंग किताब फ्रॉम कारगिल टू द कूप- इवेंट्स दैट शुक पाकिस्तान के लेखक नसीम ज़हरा ने द इंडियन एक्सप्रेस को बताया कि पीटीआई तीन विकल्प चुनकर संसदीय रास्ते पर वापस आ गई है। केपीके में भारी जीत हासिल करने के बाद, सरकार बनाने के लिए तैयार है। दूसरा की वो केंद्र में मुख्य विपक्ष की भूमिका निभाएगा। तीसरा, विरोध जारी रखा जाएगा। इंट्रा-पार्टी चुनावों के माध्यम से अपने प्रतीक को फिर से हासिल करने का प्रयास होगा। नागरिक नेतृत्व अस्थिर और कमज़ोर है, तो भारत के लिए मुख्य प्रश्न यह होगा कि द्विपक्षीय संबंधों में किसी भी सार्थक प्रगति के लिए किसके साथ कनेक्ट करेगा। आने वाली नागरिक सरकार एक अस्थिर गठबंधन होने की संभावना है। उम्मीद है कि भारत के साथ संबंधों को सामान्य बनाने के लिए कुछ पहल की जाएंगी। लेकिन राजनीतिक अराजकता को देखते हुए, यह स्पष्ट नहीं है कि इसका परिणाम क्या होगा। खासतौर पर तब जब इमरान के नेतृत्व वाला बड़ा गुट इस नीति पर सहमत न हो। जामिया मिलिया इस्लामिया के प्रोफेसर बेहरा ने कहा कि हालांकि शरीफ व्यवसाय समर्थक हैं और अपनी लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए भारत के साथ व्यापार खोलना चाहते हैं। लेकिन नई दिल्ली को इससे कोई परेशानी नहीं होगी, खासकर इसलिए क्योंकि किसी भी प्रधानमंत्री के पास सीमित शक्ति और प्रभाव होने की संभावना है।

आज का इतिहास

1919 बवेरियन समाजवादी कर्ट ईस्नर, जिन्होंने जर्मन क्रांति का आयोजन किया था, जिन्होंने विटल्सबैच राजशाही को उखाड़ फेंका और एक गणतंत्र के रूप में बावरिया की स्थापना की।

1921 रेजा खान ने तेहरान को ईरान में खुद को सबसे शक्तिशाली बनाने के लिए जब्त कर लिया, जिससे अंततः पहलवान राजवंश की स्थापना हुई।

1925 ब्राजील के एक डायनामाइट डिपो में 621 की मौत हुई।

1932 आंद्रे तार्डिए तीसरी बार फ्रांस के प्रधानमंत्री बने।

1948 बिल फ्रांस, सीनियर और कई अन्य रेस कार चालकों ने NASCAR की स्थापना की, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में स्टॉक कार रेसिंग के शासी निकाय थे।

1952 पूर्वी पाकिस्तान के ढाका में प्रदर्शनकारी, बंगाली भाषा को अनौपचारिक भाषा के रूप में स्थापित करने की मांग करते हुए सैन्य संघर्ष में उतर गए।

1952 पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान में ढाका) स्थित ढाका विश्वविद्यालय में बंगाली भाषा को आधिकारिक भाषा का दर्जा देने के लिए प्रदर्शन किया गया।

1958 ब्रिटिश कलाकार गेराल्ड होल्टोम ने परमाणु निरस्त्रीकरण अभियान के लिए एक लोगो डिज़ाइन किया जो कि आमतौर पर शांति प्रतीक के रूप में जाना जाता है।

1965 न्यूयॉर्क शहर के ऑडबोन बॉलरूम में भाषण देते समय काले राष्ट्रवादी मैल्कम एक्स की हत्या कर दी गई थी।

1965 अमरीका के विख्यात संघर्षकर्ता मैल्कम एक्स को इस देश के एक संदिग्ध गुट ने मार दिया।

1971 साइकोट्रोपिक पदार्थ पर कन्वेंशन, मनोचिकित्सा दवाओं को नियंत्रित करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक संयुक्त राष्ट्र संघ, जिसे वियना में प्लेनिपोटेंटियरीज के एकोफेक्शन पर हस्ताक्षर किया गया था।

1973 गलती से इजरायली हवाई क्षेत्र में भटकने के बाद, लीबिया अरब एयरलाइंस की उड़ान 114 को दो इजरायली लड़ाकू विमानों ने मार गिराया था।

1973 सिनाई रेगिस्तान में, इजरायली लड़ाकू विमान ने लीबिया अरब एयरलाइंस के विमान-114 को मार गिराया जिससे इसमें सवार 108 लोगों की मौत हो गई।

1986 दक्षिण अफ्रीका सरकार ने जोहान्सबर्ग और डरबन अश्वेतों के लिए खोल दिए।

1996 सोयूज टीएम -23 अपनी कक्षा में लॉन्च हो गया।

क्या 2024 का चुनाव राहुल कांग्रेस बनाम मोदी कांग्रेस बन गया है?

अजय सेतिया

शुरू शुरू में भाजपा के नेता और कार्यकर्ता गिनती करते थे कि चुनावों में कितने पूर्व कांग्रेसियों को भाजपा का टिकट मिला, लेकिन अब यह गिनती करना उन्होंने बंद कर दिया है। कांग्रेस के पूर्व नेता संजय झा की एक्स पर की गई टिप्पणी भारतीय जनता पार्टी की वर्तमान दशा का बाखूबी बयान करती है। उन्होंने लिखा है कि 2024 का लोकसभा चुनाव राहुल गांधी की कांग्रेस और मोदी की कांग्रेस के बीच होगा। कांग्रेस मुक्त भारत का मतलब यह तो नहीं था कि सारे कांग्रेसी भाजपा में शामिल कर लिए जाएं, और उन्हीं को राज्यसभा, लोकसभा और विधानसभाओं की टिकट देकर भाजपा को ही कांग्रेस बना दिया जाए। सत्ता की इस अंधी चाह में डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी और दीनदयाल उपाध्याय के आदर्शों वाली भाजपा कहीं खो गई है। कांग्रेस मुक्त भारत की जगह पर भाजपा मुक्त भारत हो गया है। जनसंघ के परिवारों से निकले भाजपा के कार्यकर्ता डा. मुखर्जी, दीन दयाल उपाध्याय, डा. रघुबीर, बलराज मधोक, अटल बिहारी वाजपेयी और लाल कृष्ण आडवाणी के सिद्धांतों और आदर्शों वाली भाजपा खोज रहे हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जनता पार्टी से टूट कर बनी भाजपा को उसी तरह अपने प्रचारक भेजना जारी रखा था, जैसे जनसंघ में संघ के प्रचारक पार्टी की रीढ़ की हड्डी हुआ करते थे। वे पार्टी में विचारधारा का संचालन करते थे। वे अब भी पार्टी में संगठन महामंत्रियों के पद पर विराजमान हैं, लेकिन जिस काम के लिए उन्हें पार्टी में लाया गया था, वह काम अब गैर जरूरी सा हो गया है। क्योंकि पार्टी का लक्ष्य अपने एजेंडे को लागू करने के लिए चुनावी राजनीति में नेहरू परिवार की कांग्रेस पर विजय को बरकरार रखना है। जनसंघ परिवारों से आए भाजपा कार्यकर्ताओं की सोच कुछ भी हो, नरेंद्र मोदी ने साम दाम दंड भेद का इस्तेमाल करके वह हासिल कर लिया, जो पहले के सभी नेता नहीं कर पाए थे। जनसंघ के संस्थापक डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जम्मू कश्मीर में दो निशान (जम्मू कश्मीर का अलग झंडा), दो विधान (जम्मू कश्मीर का अलग संविधान) दो प्रधान (जम्मू कश्मीर का अलग प्रधानमंत्री) के खिलाफ अपने प्राणों की बाजी लगाई। अनुच्छेद 370 हटा कर जम्मू कश्मीर को भारत का अभिन्न बनाने का वह लक्ष्य अटल आडवाणी की भाजपा छह साल सत्ता में रहने के बावजूद हासिल नहीं कर सकी थी। लेकिन दुबारा सत्ता में आने के बाद मोदी ने सबसे पहला काम यही किया, अब न वहां दो संविधान हैं, न दो निशान। वजीर-ए-आला का पद तो पहले ही खत्म हो गया था।

नरेंद्र मोदी पर आरोप लगता है कि उन्होंने भाजपा को कांग्रेस बना दिया। लेकिन इसे दूसरे नजरिए से देखिए, उन्होंने बड़ी तादाद में कांग्रेसियों को भाजपा में लाकर यह साबित कर दिया कि कांग्रेस के अनेक जमीनी नेता नीतियों के कारण कांग्रेस के साथ नहीं थे, वे सिर्फ सत्ता की मलाई खाने के लिए कांग्रेस के साथ थे। भाजपा के विस्तार की कोशिश तो अटल और आडवाणी ने भी की थी, याद कीजिए 1980 में भाजपा का गठन करते समय अटल बिहारी वाजपेयी ने गांधीवादी समाजवाद को पार्टी की विचारधारा बनाया था। वह जवाहर लाल नेहरू से लेकर इंदिरा गांधी तक सभी कांग्रेसी प्रधानमंत्रियों की सरकारों में मंत्री रहे मोहम्मदिल करीम छागला और नामी वकील राम जेठमलानी को मुम्बई में पार्टी के स्थापना मंच पर लेकर आए थे। लाल कृष्ण आडवाणी ने मुसलमानों का दिल जीतने के लिए पाकिस्तान जाकर जिन्ना की तारीफ़ की थी। लेकिन वे दोनों ही सफल नहीं हुए, क्योंकि हिन्दू ऐसी भाजपा की कल्पना नहीं करते थे, जो सत्ता के लिए सिद्धांतों के साथ समझौता करे। भाजपा के श्रीराम जन्मभूमि आदोलन में कूदने के बाद हिन्दू फिर से भाजपा से जुड़ने लगे थे। लेकिन वाजपेयी और आडवाणी ने सत्ता के लिए एनडीए बनाकर भाजपा के तीनों प्रमुख मुद्दों से समझौता किया।

नरेंद्र मोदी संघ की भट्टी में तपे हुए विचारधारा के पक्के भाजपाई हैं, वह भाजपा को इसलिए सत्ता दिला पाए क्योंकि गुजरात का मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने देश भर के हिन्दुओं का विश्वास जीता था। लेकिन 2014 में मोदी के नेतृत्व में आई हिन्दू क्रान्ति तब तक अधूरी थी, जब तक जम्मू कश्मीर से 370 नहीं हटाया गया। 2014 से 2019 तक मोदी कुछ ज्यादा नहीं कर पाए, भाजपा के तीनों ही मुद्दों पर उन्होंने कोई काम नहीं किया, लेकिन तीन तलाक जैसे मुद्दे पर बिल पास करवा कर उन्होंने एक प्रतिबद्धता दिखा दी कि वह कट्टरपंथी मुस्लिमों के आगे कतई नहीं झुकेंगे। यह एक संकेत था कि जैसे ही दोनों सदनों में बहुमत मिलेगा, वह भाजपा के तीनों एजेंडों श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर, जम्मू कश्मीर से 370 हटाने और समान नागरिक संहिता का काम पूरा करेंगे। इसके बावजूद 2019 के चुनाव से पहले भारी तादाद में कांग्रेसी भाजपा से जुड़े, क्योंकि उनकी विचारधारा कुछ नहीं थी, उनकी विचारधारा सिर्फ सत्ता थी। दुबारा सत्ता में आते ही मोदी ने तीन महीने के भीतर जम्मू कश्मीर से 370 को हटाकर जनसंघ के संस्थापक डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को राष्ट्र की सच्ची श्रद्धांजली दे दी। 2024 के चुनाव से पहले कांग्रेस में एक बार फिर भगदड़ मची है। भाजपा के सामने पहले से भी बड़ा जनादेश हासिल करके समान नागरिक संहिता का एजेंडा पूरा करना और फिर मथुरा काशी के मंदिर मुक्त करवाना है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक कांग्रेस और अन्य दलों के नेता अपनी अपनी पार्टियां छोड़कर भाजपा में शामिल हो रहे हैं।

1996 और 1998 में सत्ता हासिल करने के लिए भाजपा ने अपने तीनों मुद्दों से समझौता किया था। अब भाजपा अपने तीनों मुद्दों पर कायम रहते हुए राजनीतिक दलों और राजनीतिक दलों के नेताओं को भाजपा में आने और भाजपा के साथ आने को मजबूर कर रही है। जम्मू कश्मीर की नेशनल कांफ्रेंस की एमएलसी शहनाज़ गनई, पंजाब के कांग्रेसी नेता अमरिंदर सिंह और सुनील जाखड़, हरियाणा के अशोक तंवर, हिमाचल में हर्ष महाजन, उत्तराखंड के विजय बहुगुणा और किशोर उपाध्याय, उत्तर प्रदेश के जगदम्बिका पाल और रीता बहुगुणा, मध्यप्रदेश के ज्योतिरादित्य सिंधिया, महाराष्ट्र के अशोक चव्हाण और मिलिंद देवड़ा, आंध्र प्रदेश के किरण कुमार रेड्डी, कर्नाटक के एसएम कृष्णा, इनमें कई कांग्रेस नेता अपने अपने प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष या कांग्रेस के मुख्यमंत्री रहे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री और पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष नरसिम्हा राव का पोता एन.वी. सुभाष, पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का पोता विभाकर शास्त्री, कांग्रेस के महासचिव रहे ए.के. एंटनी का बेटा अनिल एंटनी, पूर्व कांग्रेस महासचिव जनार्दन द्विवेदी का बेटा समीर द्विवेदी, कांग्रेस के उपाध्यक्ष और दो दो प्रधानमंत्रियों राजीव गांधी और नरसिंह राव के राजनीतिक सलाहकार रहे जितेन्द्र प्रसाद का बेटा जितिन प्रसाद जब भाजपा का दामन थाम लेते हैं, तो क्या यह नहीं दर्शाता कि वे और उनका परिवार विचारधारा के कारण कांग्रेस के साथ जुड़ा हुआ था, या सत्ता के कारण। जब तक नेहरू परिवार उन्हें सत्ता दिला सकता था, तब तक वे कांग्रेस के साथ थे, जैसे ही उन्हें लगा कि अब नरेंद्र मोदी उन्हें सत्ता दिला सकते हैं, तो वे भाजपा में शामिल हो गए।

मिलिंद देवड़ा और अशोक चव्हाण का अगर लोकसभा का टिकट फाईनल हो जाता तो वे कांग्रेस में रहते, कमलनाथ को अगर राज्यसभा का टिकट मिल जाता, तो वह भाजपा में जाने के बारे में सोचते ही नहीं। दलबदल करके भाजपा में शामिल होने वालों का कोई दीन, ईमान और विचारधारा नहीं है। सत्ता में हिस्सेदारी ही उनका लक्ष्य है। मोदी समर्थकों को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि कांग्रेस से कौन भाजपा में शामिल हो रहा है, उनका मकसद मोदी की विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता है। नरेंद्र मोदी हिंदुत्व की विचारधारा से कोई समझौता नहीं कर रहे, हिन्दुओं के लिए यही काफी है। हाँ भाजपा के पुराने कार्यकर्ताओं को तब जरुर तकलीफ होती है, जब नरेंद्र मोदी भाजपा में शामिल होते ही नारायण राणे, अशोक चव्हाण, आरपीएन सिंह, और ज्योतिरादित्य सिंधिया को राज्यसभा में लाकर मंत्री बना देते हैं, जिनके परिवारों के साथ उन्होंने दशकों तक संघर्ष किया, उन्हें रातों रात उनका नेता बना देते हैं। समाज में यह आम धारणा है कि कांग्रेस या अन्य दलों से भाजपा में शामिल होने वालों को उच्च सदन का सदस्य नहीं बनाना चाहिए, वे चुनाव जीत कर आएं, तभी उन्हें सरकार में शामिल किया जाना चाहिए। वरना लगता है कि मोदी भाजपा को कांग्रेस ही बना रहे हैं, आज वे नेता सत्ता के लिए भाजपा में आए है, कल वे सत्ता के लिए भाजपा छोड़ कर किसी अन्य दल में चले जाएंगे।

चुनावी चंदे में गुमनामी का खेल असंवैधानिक

प्रमोद भार्गव

लोकसभा चुनाव के ठीक पहले सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी समेत सभी राजनीतिक दलों को बड़ा झटका दिया है। डीवाई चंद्रचूड की अध्यक्षता वाली पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने ऐतिहासिक फैसले में दलों को गुमनामी चुनावी चंदा उपलब्ध कराने वाली केंद्र सरकार की निर्वाचन बॉन्ड योजना को असंवैधानिक करार देते हुए रद्द कर दिया है। पीठ ने बॉन्ड की बिक्री पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाते हुए इसे क्रय करने वालों, बॉन्ड का मूल्य और इसे पाने वालों के नाम सार्वजनिक करने का आदेश दिया है। अदालत ने 2018 में वित्त विधेयक-2017 के जरिए लाई गई इस योजना को संविधान के अनुच्छेद 19 (1 ए) के तहत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सूचना के मौलिक अधिकार के संवैधानिक अधिकार का उल्लंघन माना है। 2018 में चुनावी बॉन्ड के जरिए चंदा लेने का कानून बनाए जाने के वक्त दावा किया गया था कि कालेधन पर रोक और भ्रष्टाचार पर लगाम की दृष्टि से राजनीतिक पार्टियां अब केवल निर्वाचन बॉन्ड के जरिए ही चंदा ले सकेंगी। एक मोटे अनुमान के अनुसार देश के लोकसभा और विधानसभा चुनावों पर 50 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा खर्च होते हैं। इस खर्च में बड़ी धनराशि कालाधन और आवारा पूंजी होती है। आर्थिक उदारवाद के बाद यह बीमारी सभी दलों में पनपी है। न्यायालय में प्रस्तुत किए गए निर्वाचन आयोग और एडीआर के आंकड़ों के मुताबिक 2017-18 में योजना शुरूरू होने से जनवरी 2024 तक 16,518.11 करोड़ रुपए के अधिक के निर्वाचन बॉन्ड बिके हैं। यह राशि सभी दलों को उनकी पहुंच और हैसियत के मुताबिक व्यापारियों ने दी है। साफ है, जब बड़े व्यापारिक घरानों से दलों को मोटी धनराशि मिलने लगी, तब से दलों में जनभागीदारी निरंतर घटती चली जा रही है। मसलन कॉर्पोरेट फंडिंग ने ग्रास रूट फंडिंग का काम खत्म कर दिया है। इस वजह से दलों में जहां आंतरिक लोकतंत्र समाप्त हुआ, वहीं आम आदमी से दूरियां भी बढ़ती चली गईं। दल आम कार्यकर्ताओं की बजाय धनबलियों को उम्मीदवार बनाने लग गए।

यहां हुई विपक्षी गठबंधन में सबसे बड़ी चूक

आशीष तिवारी

विपक्षी दलों के सबसे बड़े गठबंधन समूह इंडिया गठबंधन में यूं ही टूट नहीं पड़ी है। दरअसल इस गठबंधन के बिखरने की असली वजह में एक सबसे बड़ी गलती सामने आ रही है। गठबंधन में शामिल राजनीतिक दलों के कई कद्दावर नेताओं का कहना है कि सीट बंटवारे वाले मामले पर इंडिया ब्लॉक के प्रमुख दल कांग्रेस की ओर से सबसे ज्यादा लापरवाहियां बरती गईं। नतीजा हुआ कि क्षेत्रीय दल सीटों के बंटवारे की घोषणा का इंतजार करते रहे और चुनाव नजदीक आते देख धीरे-धीरे या तो पाला बदलते रहे या अलग होकर सियासी मैदान में अकेले उतर पड़े।

केंद्र की एनडीए सरकार को आगामी लोकसभा चुनाव में चुनौती देने के लिए देश की सभी प्रमुख राजनीतिक पार्टियों ने एक बड़े गठबंधन समूह इंडिया का गठन किया। इस गठबंधन में अलग-अलग राज्यों के 26 दल शामिल हुए। गठबंधन में शामिल एक प्रमुख राजनीतिक दल से ताल्लुक रखने वाले वरिष्ठ नेता कहते हैं कि गठबंधन की नींव भारतीय जनता पार्टी से लड़ने के लिए रखी गई थी। यह लड़ाई मिलकर ही लड़ी जानी थी। लेकिन पिछले साल जून से लेकर अब तक गठबंधन के मुख्य घटक दल कांग्रेस की ओर से सीटों को लेकर कोई फैसला ही नहीं लिया जा सका। पार्टी के उक्त वरिष्ठ नेता कहते हैं कि जब हमें लड़ाई लड़नी है, तो यह तय होना चाहिए कि गठबंधन में शामिल घटक दल राज्यों में किस तरीके से चुनाव लड़ेंगे। सीटों के बंटवारे को लेकर लगातार हर बैठक में आवाज उठाई जाती रही। लेकिन कुछ भी ठोस परिणाम नहीं निकल सका।

गठबंधन में शामिल सियासी दल के उक्त वरिष्ठ नेता कहते हैं कि इस स्थिति में क्षेत्रीय दल मैदान में मजबूती के साथ आगे बढ़ रहे हैं। यह जरूरी है कि अब वह कांग्रेस का इंतजार न करें और अपने तरीके से चुनावी मैदान में उतरें। सियासी जानकारों का भी मानना है कि जून में हुई गठबंधन की पहली बैठक के बाद से लेकर लगातार हो रही बैठकों में सीटों के बंटवारे पर कोई फैसला नहीं लिया गया। गठबंधन में शामिल राजनीतिक दलों से जुड़े नेताओं का मानना है कि अगर सीटों के बंटवारे पर ही फैसला हो जाता, तो शायद गठबंधन की मजबूती भी बनी रहती और चुनाव में उसके आधार पर बड़ी लड़ाई भी लड़ी जाती। लेकिन इस मामले में हुई बड़ी चूक और लापरवाही पर गठबंधन के दल एक-एक कर अलग होते रहे। सियासी जानकार भी मानते हैं कि गठबंधन के कमजोर पड़ने के कई प्रमुख कारण नजर आ रहे हैं।

हाल में ही इंडिया गठबंधन से अलग होकर सियासी मैदान में अकेले ताल ठोंकने वाली पार्टी से जुड़े एक वरिष्ठ नेता कहते हैं कि कांग्रेस तो अपने सियासी जनाधार को बढ़ाने के लिए न्याय यात्रा निकाल रही है। लेकिन गठबंधन में शामिल अन्य सियासी दलों के लिए मझधार की स्थिति पैदा हो गई। उनका कहना है कि अगर वह अलग होकर चुनावी मैदान में ताल नहीं ठोंकते तो क्या करते। पिछले साल हुए विधानसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस पार्टी ने अपना लंबा वक्त गठबंधन की रणनीति को मजबूत करने की बजाय चुनाव में लगाया। उनका कहना है कि राष्ट्रीय पार्टी होने के नाते कांग्रेस को विधानसभा चुनाव पर पूरा फोकस करना जरूरी भी था, लेकिन जो दल उन विधानसभा चुनाव में हिस्सेदारी नहीं कर रहे थे, वह किस बात के लिए इंतजार करते रहे। सिर्फ इसलिए कि इन विधानसभा चुनावों से कांग्रेस खाली हो, तो गठबंधन पर ध्यान दें। यह परिस्थितियां गठबंधन में शामिल छोटे-छोटे दलों के लिए बड़ी असहज हो गई।

राजनीतिक विश्लेषक और वरिष्ठ पत्रकार रूपिंदर चहल कहते हैं कि कई जगह पर सियासी गणित तालमेल नहीं खा रही थी इसलिए गठबंधन कमजोर हुआ। इसके अलावा वह कहते हैं कि आपसी गठबंधन के बाद भी सियासी दलों में सामंजस्य न के बराबर दिखा। गठबंधन में शामिल सियासी दल से जुड़े एक वरिष्ठ नेता बताते हैं कि पटना से लेकर मुंबई और बेंगलुरु से लेकर दिल्ली में गठबंधन की बैठकों में जिन मुद्दों पर सियासी रणनीति बनाने की बात हुई, वह असल में कभी गंभीरता से आगे बढ़े ही नहीं। वह कहते हैं कि ऐसा नहीं है इसको लेकर प्रमुख घटक दल कांग्रेस के साथ बातचीत नहीं हुई। लेकिन जिन मुद्दों पर चर्चा होनी थी, उसे छोड़कर सिर्फ बैठकें होती रहीं। उनका मानना है कि अगर एक महत्वपूर्ण बिंदु यानि सीट शेयरिंग पर शुरुआती दौर में ही फैसला हो जाता, तो संभव है गठबंधन की मजबूती बरकरार रहती।

कमल दल में क्यों समाना चाहते हैं कमलनाथ?

समीर चौगांवकर

कमलनाथ के कमलदल में समाहित होने की खबरें सिर्फ अफवाह नहीं हैं। इसमें सच्चाई है और सौदेबाजी भी जारी है। सवाल यह है कि आखिरकार ऐसा क्या हुआ कि कांग्रेस में 50 साल का राजनीतिक जीवन और उम्र के 77 साल पूरे कर चुके कमलनाथ उम्र के अंतिम पड़ाव में भाजपा में आना चाहते हैं? वर्तमान में कांग्रेस की राष्ट्रीय और मध्य प्रदेश की राजनीति को देखें तो कमलनाथ के लिए कोई ज्यादा जगह नहीं बची है। कमलनाथ के करीबी नेताओं का कहना है कि कमलनाथ की नाराजगी सोनिया से नहीं राहुल गांधी से रही है। कमलनाथ की कांग्रेस से नाराजगी की जो वजह सामने आ रही है वह यह कि मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस को उम्मीद थी कि कमलनाथ पार्टी के लिए पैसा खर्च करेंगे। अपने उद्योगपति मित्रों से आर्थिक मदद भी उपलब्ध कराएंगे लेकिन कमलनाथ ने न खुद पार्टी फंड में पैसा दिया और न ही मित्रों से मदद उपलब्ध कराई।

कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे और राहुल गांधी कमलनाथ की इस बात से भी नाराज थे कि इंडिया गठबंधन की मध्य प्रदेश चुनाव के समय भोपाल में होने वाली रैली कमलनाथ ने निरस्त करवा दी थी। मध्य प्रदेश चुनाव के दौरान कमलनाथ का टिकट के प्रार्थी से यह कहने का बयान वायरल होना कि जाओ दिग्विजय सिंह के कपडे फाड़ो, ने भी मध्यप्रदेश कांग्रेस की गुटबाजी को सामने ला दिया था। कमलनाथ की अपनी शिकायतें भी पार्टी हाईकमान से थी। मध्यप्रदेश चुनाव में टिकट वितरण में दिग्विजय सिंह की दखंलदाजी के बाद भी हार का ठीकरा सिर्फ उनके सिर फूटने से वह नाराज हैं। कमलनाथ इस बात से भी नाराज हैं कि उनकी जगह जीतू पटवारी को मध्यप्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष्र नियुक्त कर दिया गया लेकिन उनसे राय नहीं ली गई। कमलनाथ इस बात से भी असहज थे कि विपक्ष का नेता बनने की उनकी मंशा को नरजअंदाज कर पार्टी ने उमंग धिंगार को विपक्ष का नेता बना दिया।

मध्यप्रदेश की राजनीति में सबकुछ गंवा चुके कमलनााथ इस बात की उम्मीद कर रहे थे कि पार्टी उन्हे मध्य प्रदेश से राज्यसभा भेजने का प्रस्ताव देगी लेकिन पार्टी ने कमलनाथ को ना ही राज्यसभा भेजना उचित समझा और न ही राज्यसभा किसे भेजना है, इस संबंध में उनकी राय ली। दिग्विजय के बेहद करीबी ग्वालियर के अशोक सिंह को राज्यसभा भेजकर कमलनाथ की नाराजगी को बढ़ा दिया। लेकिन सिर्फ इन्हीं कारणों को कमलनाथ के भाजपा के करीब आने का प्रमुख कारण मानना ठीक नहीं है। भाजपा और कमलनाथ के बीच बढ़ती करीबी के कुछ और भी कारण हैं जिन्हें जानना और समझना जरूरी है। कमलनाथ को कमल के करीब ले जाने का एक कारण सिख दंगो में कमलनाथ की भूमिका पर आगामी 23 अप्रैल को आनेवाली एसआईटी की रिपोर्ट है। 1984 में हुए सिख विरोधी दंगो में कमलनाथ के खिलाफ कार्रवाई की मांग करने वाली याचिका पर कोर्ट ने एसआईटी से स्टेटस रिपोर्ट मांगी है।

कमलनाथ के भाजपा की ओर कदम बढ़ाने का दूसरा प्रमुख कारण 354 करोड़ की बैंक धोखाधड़ी के मामले को लेकर ईडी का शिंकजा कमलनाथ के भांजे रतुल पुरी और कमलनाथ के परिवार के सदस्यों पर कस रहा है। गौरतलब है कि कमलनाथ परिवार के सदस्यो के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय ने 2020 में प्रिवेंशन आफ मनी लॉन्ड्रिग एक्ट के तहत मामला दर्ज कर कमलनाथ के भांजे को गिरफ्तार किया था। इस मामले में कमलनाथ की बहन नीता, बहनोई दीपक पुरी और कमलनाथ के बेटे नकुलनाथ की भूमिका की जांच सीबीआई और ईडी कर रही है। कमलनाथ के बेटे नकुलनाथ को इस बारे में नोटिस भी जारी हो चुका है। कमलनाथ को अपने बेटे नकुलनाथ को जांच एजेंसियों से बचाने के अलावा सांसद बेटे के राजनीतिक भविष्य को भी सुरक्षित करना है। कमलनाथ इस बात को समझते हैं कि उनके बगैर नकुलनाथ की कांग्रेस में एक सांसद से ज्यादा हैसियत नहीं रहेगी। मोदी लहर में 2024 के चुनाव में नकुलनाथ की जीत आसान भी नहीं है। 2019 में छिंदवाड़ा जैसी सुरक्षित सीट से नकुलनाथ सिर्फ 40 हजार वोट से जीते थे। कमलनाथ को साथ लाकर भाजपा सिर्फ छिंदवाड़ा सीट पर फोकस नहीं कर रही है। भाजपा का आकलन है कि छिंदवाडा सीट तो मिलेगी ही, विधानसभा में भी कांग्रेस के 66 विधायकों में से 15 से ज्यादा विधायक भाजपा के साथ आ जाएंगे। छिंदवाडा जिले के सभी 6 कांग्रेसी विधायक भी भाजपा के खेमें में कमलनाथ के साथ जाएंगे। कमलनाथ के साथ आने से कांग्रेस का मजबूत गढ़ छिंदवाड़ा भी ढह जाएगा। कमलनाथ के साथ मुरैना महापौर शारदा सोलंकी, ग्वालियर महापौर शोभा सिकरवार, रीवा महापौर अजय मिश्रा, और छिंदवाड़ा महापौर विक्रम अहाके भी भाजपा में जा सकते हैं। कमलनाथ को लेकर इतने फायदे में रहने के बाद भी भाजपा के लिए कमलनाथ को लेकर दुविधा बनी हुई है। संघ का एक बड़ा वर्ग कमलनाथ के खिलाफ है। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी कमलनाथ को लेकर विरोध कर रहे हैं और शिवराज के विरोध की ताकत कमलनाथ के धुर विरोधी रहे ज्योतिरादित्य सिंधिया भी बढ़ा रहे हैं। सिंधिया कमलनाथ की एंट्री को रोकने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं।

कमलनाथ को लेकर सिख नेता भी अपनी नाराजगी से केन्द्रीय नेतृत्व को अवगत करा चुके हैं। भाजपा कमलनाथ को लेने से पहले इस बात का भी आकलन कर रही है कि कहीं दिल्ली और पंजाब में इसका खामियाजा ना भुगतना पड़े। इस बात की संभावना भी है कि भाजपा बीच का रास्ता निकालते हुए अभी सिर्फ कमलनाथ के बेटे नकुलनाथ को पार्टी में शामिल करे। कमलनाथ कांग्रेस में बने रहे। लोकसभा चुनाव के बाद कमलनाथ को किसी राज्य का राज्यपाल बनाकर एडजस्ट किया जा सकता है। भाजपा कमलनाथ को पार्टी में लाने से पहले हर पहलू पर गंभीरता से विचार कर रही है। कमलनाथ भी उम्र के इस पड़ाव पर कांग्रेस छोड़ने की पूरी कीमत वसूल करना चाहते है। भाजपा और कमलनाथ के अपने अपने स्वार्थ और मजबूरी है। दोनों एक दूसरे को तौल रहे हैं। दोनों तराजू का पलड़ा अपनी ओर ज्यादा झुका देखना चाहते हैं। इसलिए कमलनाथ और भाजपा में सौदेबाजी की बातचीत जारी है। यह सौदा किसे फायदे पहुंचाता है किसे मंहगा साबित होता है यह आने वाला समय बताएगा लेकिन यह तय है कि कमलनाथ की राजनीति का कांग्रेस में अंत अब करीब है।

लोकतंत्र पर ही बोझ हैं निष्क्रिय रहने वाले सांसद

राजकुमार सिंह

नेता अक्सर बोलने के लिए ही जाने जाते हैं। कुछ तो बड़बोलेपन के लिए भी चर्चित रहते हैं। ऐसे में आपको यह जान कर हैरत होगी कि 17 वीं लोकसभा में नौ माननीय सांसद ऐसे रहे, जिनका मौन पांच साल के कार्यकाल में भी नहीं टूट पाया। इनमें फिल्मी परदे पर दहाड़नेवाले वे हीरो भी शामिल हैं, जिनके डायलॉग सालों बाद भी मौके-बेमौके दोहराए जाते हैं।

18वीं लोकसभा के चुनाव अप्रैल-मई में संभावित हैं, पर 17 वीं लोकसभा का अंतिम सत्र समाप्त हो चुका है। पांच साल का कार्यकाल समाप्त होने पर लोकसभा और उसके माननीय सदस्यों के कामकाज की बाबत उपलब्ध आंकड़ों से यह खुलासा हुआ है कि नौ सांसदों ने सदन में मौन तोड़े बिना ही अपना कार्यकाल पूरा कर लिया। जाहिर है, उनके इस आचरण से उन्हें संसद के लिए चुननेवाले लाखों मतदाता खुद को छला हुआ महसूस कर रहे होंगे, जिन्होंने उम्मीद की थी कि उनके सांसद न सिर्फ निर्वाचन क्षेत्र से जुड़े सवाल उठाएंगे, बल्कि देश और समाज की दृष्टि से महत्वपूर्ण संसदीय चर्चाओं में भी भाग लेंगे। बेशक ये 'मौनी' सांसद किसी दल विशेष के नहीं हैं, पर यह आंकड़ा चौंकानेवाला है कि इनमें सबसे ज्यादा छह उस भाजपा के हैं, जिसके नेता भाषण कला में माहिर माने जाते हैं। दूसरे नंबर पर तेजतर्रार नेत्री एवं पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस है, जिसके दो सांसदों ने अपने कार्यकाल के दौरान एक भी सवाल नहीं पूछा। नौवें सांसद मायावती की बसपा के अतुल राय हैं, जो उत्तर प्रदेश के घोसी निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित हुए, पर एक मामले में सजा काटते हुए उनका ज्यादातर समय जेल में ही गुजरा। पांच साल के कार्यकाल में एक भी सवाल न पूछनेवाले भाजपा सांसदों में सबसे दिलचस्प मामला फिल्म अभिनेता से राजनेता बने सनी देओल का है। वह पंजाब के गुरदासपुर से सांसद हैं। वैसे यह जानना भी दिलचस्प होगा कि 17 वीं लोकसभा में भाजपा के दो सांसद भी ऐसे रहे, जो एक दिन भी सदन की कार्यवाही से अनुपस्थित नहीं रहे। ये हैं- भगीरथ चौधरी और मोहन मांडवी। राजनीतिक दल अपने निष्ठावान नेताओं को नजरअंदाज कर ऐसे सेलिब्रिटीज को उनकी लोकप्रियता भुनाने के लिए ही टिकट देते हैं। ये सेलिब्रिटीज भी अपनी लोकप्रियता भुना कर सत्ता गलियारों में प्रवेश को लालायित रहते हैं, पर इससे राजनीति और लोकतंत्र को क्या हासिल होता है—इस पर कम-से-कम मतदाताओं को अवश्य चिंतन-मनन करना चाहिए। संसदीय लोकतंत्र को इस तरह मखौल बनाना और बनते देखना, दोनों ही दुर्भाग्यपूर्ण हैं।

हर साल इस दिन सूर्यदेव खुद करेंगे श्रीराम का अभिषेक, दोपहर को दमकेगा प्रभु का मुख

अयोध्या नगरी में 22 जनवरी 2024 को भगवान श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम भव्य और धूमधाम से संपन्न हुआ। श्री राम के प्राण प्रतिष्ठा के लिए अयोध्या नगरी को त्रेतायुग की तर्ज पर सजाया गया। वहीं भगवान श्रीराम मंदिर को बेहद भव्य तरीके से बनाया गया है। मंदिर खुलने और प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम पूरा होने के बाद इस श्रद्धालुओं के लिए खोल दिया गया है। इसके साथ ही मंदिर में स्थापित श्रीराम की मूर्ति को खास तरीके से बनाया गया है। जानकारी के मुताबिक हर साल रामनवमी के मौके पर स्वयं सूर्यदेव श्रीराम का अभिषेक करेंगे।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक रामलला के विग्रह की लंबाई और स्थापना स्थल की ऊंचाई का ध्यान अंतरिक्ष वैज्ञानिकों की सलाह पर बनाया गया है। जिसके चलते हर साल चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि के लिए श्रीराम के मुख पर सूर्य देव की किरणें दोपहर 12ः00 बजे पड़ेंगी।

मूर्तिकार योगीराज ने किया मूर्ति का चयन

भगवान श्री रामलला के 5 वर्षीय मूर्ति का चयन करने के बाद प्राण-प्रतिष्ठा का कार्यक्रम किया जा चुका है। मूर्तिकार योगीराज अरुण द्वारा प्रभु श्रीराम की मूर्ति बनाई गई है। यह मूर्ति श्याम वर्ण की और रामलला के विग्रह की ऊंचाई 51 इंच है। बाल स्वरूप भगवान श्रीराम के एक हाथ में धनुष और तीर और मुख पर सुंदर मुस्कान सुशोभित है।

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा

काशी के विद्वान गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ द्वारा 22 जनवरी 2024 को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का समय निकाला गया है। 22 जनवरी को अभिजीत मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठा की पूजा संपन्न की गई।

घर में महाभारत रखना अशुभ क्यों माना गया जबकि गीता शुभ है, जानें इसके पीछे का कारण

धर्म और अधर्म के बीच लड़ा गया महाभारत का युद्ध हर इंसान को सिखाता है कि उसे जीवन में किन गलतियों को करने से बचना हैं। हिंदू धर्म का पवित्र ग्रंथ गीता भी महाभारत का ही भाग है, हालांकि इसे पवित्र माना और प्रेरणा देने वाला ग्रंथ माना जाता है और इसका पाठ भी किया जाता है। जबकि महाभारत को घर में रखना या फिर पढ़ना अच्छा नहीं माना जाता है। बता दें कि, महाभारत को पांचवा वेद भी माना गया है, आइए आपको बताते है इसका कारण।

हो सकते हैं ये परिणाम

हिंदू मान्यताओं के अनुसार गीता और रामायण की पवित्र ग्रंथ माना गया है, जबकि महाभारत को अशुभ माना जाता है क्योंकि इसे रखने या पढ़ने से घर में नकारात्मकता आती है। घर में कलह-क्लेश देखने को मिलते है। वहीं अगर आप महाभारत का पाठ करते हैं तो परिवार के सदस्यों के बीच दूरियां आने लगती है। इसके साथ ही परिवार में भुरी भावनाएं उत्पन्न हो जाती है।

ये चीजें रखने से होती है परेशानी

इतना ही नहीं, महाभारत से जुड़ी कोई भी चीज रखने से या पढ़ने से ही व्यक्ति को परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता, बल्कि युद्ध के प्रीतक जैसे- तस्वीर या रथ आदि को भी शुभ नहीं माना जाता है। इससे मनुष्य के मानसिक सेहत पर भी बुरा असर करता है और घर में लड़ाई-झगड़ें होने लगते है।

मंदिर में कर सकते हैं पाठ

महाभारत को घर में रखना अशुभ माना जाता है। अगर आपको महाभारत का पाठ करना है तो आप मंदिर में जाकर वहां महाभारत का पाठ कर सकते हैं या आप किसी खाली स्थान पर भी कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि महाभारत के पाठ को कभी भी पूरी नहीं पढ़ना चाहिए, इसके लिए आप एक पृष्ठ को छोड़कर पढ़ सकते हैं।

सागर पार करने के लिए जो सेतु बना था, वह इतना पर्याप्त नहीं था कि उस पर संपूर्ण वानर सेना चल पाती

भगवान श्रीराम जी कितने दयालु हैं, इस बात का अनुमान, इसी बात से लगाया जा सकता है, कि वे क्रिया को नहीं, अपितु भाव को ही प्रधानता देते हैं। आप ने सेवा भक्ति में कोई नेम कर्म अथवा विधि विधान का पालन किया भी है, या नहीं, इसका बहुत बड़ा महत्व नहीं है। जैसे भक्त शबरी श्रीराम जी के समक्ष बैठ कर ही उन्हें जूठे बेर खिला रही हैं। लेकिन श्रीराम जी एक पल के लिए भी भक्त शबरी को यह नहीं कह रहे, कि 'हे शबरी! यह तुम कैसा महापाप कर रही हो। मैं भगवान हूँ! और मेरे सामने बैठ कर ही, जब तुम मुझे जूठे बेर खिलाने का दुस्साहस कर सकती हो, तो मेरी पीठ पीछे तुम क्या करती होगी?' कारण बिलकुल स्पष्ट है, कि श्रीराम जी तो यह देख रहे हैं, कि मेरी आराधना करने वाली भक्त शबरी ने अपनी और से अथक प्रयास तो किया ही है। हाँ उस प्रयास में हो सकता है कि क्रिया कर्म का श्रेष्ठ स्तर न होकर, निम्न स्तर हो। लेकिन तब भी मैं उसके प्रयास का सम्मान करूँगा। फिर सबसे बड़ी बात यह है कि शबरी के प्रयास के पीछे भाव ही इतना श्रेष्ठ था कि क्रिया का महत्व ही नहीं रह जाता। मैं तो भाव का ही भूखा हूँ। मुझे भाव अगर प्रिय न होता, तो मैं निषादराज के यहाँ एक पेड़ के छत्र तले उसका अतिथ्य स्वीकार न करता।

श्रीराम जी से एक प्रश्नकर्ता ने प्रश्न किया, मान लीजिए कि कोई व्यक्ति के मन में आपके प्रति भक्ति भाव ही न हो। वह आपका भजन इसलिए ही कर रहा हो, कि उसे धन प्राप्त हो जाये, अथवा उसका स्वास्थ्य ठीक रहे, या फिर उसके परिवार पर कोई आपदा न आये। तो क्या ऐसे में भी उसे आपके भजन का फल मिलेगा?

तब श्रीराम जी के भावों को गोस्वामी जी ने बड़े सुंदर ढंग से व्यक्त किया है-

'भायँ कुभायँ अनख आलस हूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।'

अर्थात अगर आप भजन अच्छे भाव से और बड़े प्रेम में डूब कर कर रहे हैं। या फिर ऐसा भी हो सकता है, कि आपका भाव अच्छा न भी हो। कभी कभार ऐसा भी हो सकता है, कि आप क्रोध में हों। क्योंकि आप ने देखा, कि इतनी पूजा पाठ करने के पश्चात भी आपको सफलता नहीं मिली, तो आप प्रभु के प्रति गुस्सा रख कर माला फेर रहे हों। या फिर ऐसा भी हो सकता है, कि आपको गहन आलस्य ने घेर रखा हो। आपका मन बिलकुल भी नहीं कर रहा हो, कि आप पूजा में बैठें, लेकिन बेमन होने के पश्चात भी आप पूजा में बैठे। तो क्या इन समस्त प्रसंगों में आप के किये गए भक्ति प्रयासों का कोई फल नहीं मिलेगा? अगर आप सच में निराशाजनक भाव में हैं, तो निराशा छोड़ प्रसन्न हो जायें। क्योंकि प्रभु का नाम स्मरण किसी भी परिस्थिति में किया जाये, उसका फल तो मिलना ही मिलना है।

उदाहरणत: एक मजदूर के काम करने का समय सुबह नौ बजे से लेकर सायं पांच बजे तक है। वह अन्य मजदूरों की भाँति ही अपने समय अनुसार आता है, और समय पर वापिस चला जाता है। काम भी अन्य मजदूरों की भाँति, उतना ही करता है, जितना कि उसका मालिक देता है। लेकिन एक पहलू उसके साथ यह रहता है, कि उसका मन उस मजदूरी में रमता नहीं है। उसे अपने काम से कोई लगाव नहीं रहता है। लेकिन तब भी वह जैसे-तैसे अपना काम निपटा ही देता है। ऐसे में ऐसा तो नहीं है न, कि मालिक उसको कम पगार देगा। मालिक ने देखा, कि मजदूर ठीक समय पर आता है, ठीक समय पर जाता है। उतना काम भी कर देता है, जितना उसे दिया जाता है, तो पूरी पगार नहीं देने का तो कोई तुक ही नहीं बनता है। ठीक इसी प्रकार से, अगर कोई व्यक्ति समय से समस्त पूजा पाठ इत्यादि संपन्न कर लेता है, लेकिन आलस्य, क्रोध या बेमन से करता है, तो ऐसा नहीं कि प्रभु उसे फल नहीं देंगे। निश्चित ही उसे भी उतना ही फल मिलेगा, जितना कि अन्य प्रभु भक्तों को मिलता है। रही बात, कि अगर पूजा-पाठ या नेम धर्म में, कुछ आगे पीछे भी हो जाये, तो श्रीराम जी ऐसे हैं, कि उन्हें कुछ भी आपत्तिजनक लगता ही नहीं। श्रीराम जी कहते हैं, 'तुम कुछ करो तो सही। मुझे अपनी कृपा करने के लिए कुछ आधार तो दो। फिर देखो मैं कैसे कृपा करता हूँ। सागर पार करने के लिए जो सेतु बना था, वह इतना पर्याप्त नहीं था, कि उस पर संपूर्ण वानर सेना चल कर पार कर जाती। वह सेतु उबड़ खाबड़ भी था, और संकरा भी था। लेकिन जैसे ही हमने उस सेतु पर अपने चरण रखे, तभी सभी जलचर जीव हमारे दर्शन करने हेतु, आपस में जुड़ कर जमा हो गये। उनकी पीठ से पीठ मिलती गई, और उनकी पीठ से ही, एक विशाल सेतु का विस्तार हो गया।

गुप्त नवरात्रिः इन उपायों द्वारा पाएं 9 दिनों का फल

पंचांग के अनुसार 10 फरवरी 2024 से माघ माह की गुप्त नवरात्रि की शुरुआत हो गई थी और आज 18 फरवरी को इसका समापन हो गया है। अन्य नवरात्रि की तुलना में ये नवरात्रि काफी अलग होती हैं। इस दौरान गुप्त तरीके से महाविद्याओं की पूजा की जाती हैं। इस वजह से इन्हें गुप्त नवरात्रि के नाम से जाना जाता है। वैसे तो गुप्त नवरात्रि के दौरान गृहस्थ जीवन वालों को मां दुर्गा की सामान्य तौर पर पूजा करनी चाहिए लेकिन ज्योतिष शास्त्र में कुछ खास उपाय ऐसे बताएं हैं जिन्हें अगर गुप्त तरीके से कर लिया जाए तो मनचाहा वरदान मिलता है और इसके अलावा गुप्त नवरात्रि के आखिरी दिन ये उपाय करने से पूरे 10 दिनों की पूजा का फल प्राप्त होगा। तो चलिए जानते हैं कौन से हैं वो उपाय।

गुप्त तरीके से करें ये काम

आज रात के समय मां की प्रतिमा के आगे घी का दीपक जलाएं। इसके बाद नौ बताशे लें और हर बताशे पर दो लौंग रखने के बाद मां दुर्गा को अर्पित कर दें। अगर ये उपाय गुप्त तरीके से किया जाए तो दोगुना फल प्राप्त होता है। ऐसा करने से आर्थिक संकट और परेशानियों से छुटकारा मिलता है।

कमल का फूल

आज नवरात्रि के अंतिम दिन कमल का फूल घर लेकर आएं और मां को अर्पित करें। मां को कमल का फूल बहुत प्रिय है यदि कोई अंत के दिन व्यक्ति ऐसा करता है उसका जीवन धन-सम्पदा से भर जाता है।

राहु-केतु के दोष से पाएं छुटकारा

आज के दिन इस मंत्र का जाप करने से पूरे 10 दिनों की पूजा का फल प्राप्त होता है और कुंडली में राहु-केतु के दोष से भी छुटकारा मिलता है।

इस दिन से मथुरा में शुरु होगी 40 दिन की होली, बांके बिहारी में उड़ेगा रंग-गुलाल

बृज की होली का इंतजार कई महीनों से हर किसी को रहता है। मथुरा की होली विश्वप्रसिद्ध है इसे देखने के लिए देश ही नहीं बल्कि दुनिया के भर से कई लोग शमिल होते है। बृज की होली की खास बात है कि यह 40 दिवसीय का रंग उत्सव है। मथुरा की होली में उल्लास देखने को मिलता है, बसंत पंचमी से इसकी शुरुआत हो जाती है और यह रंग उत्सव 40 दिन चलता है। 14 फरवरी दिन बधुवार को बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर ठाकुर बांके बिहारी महाराज अबीर-गुलाल उड़ाकर बृज के विश्वप्रसिद्ध 40 दिवसीय होली उत्सव का आगाज करेंगे। इसके लिए मथुरा के बांके बिहारी मंदिर में तैयारियां जोरो शोरो पर चल रही है। मंदिर के सेवायत और इतिहासकर आचार्य प्रहलाद वल्लभ गोस्वमी ने बताया बसंती रंग में ठाकुर जी का श्रृंगार किया जाएगा।

14 फरवरी बुधवार को बसंत पंचमी के दिन बांके बिहारी मंदिर में ठाकुर बांके बिहारी का बसंती रंग से श्रृंगार किया जाएगा। उन्हें बसंती रंग यानि पीले वस्त्र पहनाए जाएंगे इसके साथ ही रंग बिरंगे फूलो और गहनों से सजाया जाएगा।

उसके बाद बांके बिहारी जी को गुलाल अर्पित किया जाएगा। ठाकुर जी को पंच मेवा युक्त केसरिया मोहनभोग लगाया जाएगा। बृज की होली 40 दिवसीय का रंगो का उत्सव है इस मौके पर मंदिरों की सजावाट जोरो शोरो से हो रही है। बसंत पंचमी के दिन ठाकुर जी को सरसों के फूलों से गुथे हुए गुंजे (माला) पहनाई जाएगी। बांके बिहारी मंदिर को गेंदा समेत सरसों के फूलों से मंदिर को सजाया जाएगा. वहीं मंदिर में सुगंध से भरपूर इत्र का छिडकाव किया जाएगा. इसी के साथ मंदिर में आए सभी श्रद्धालु बांके बिहारी जी पर गुलाल वर्षा कर सकते है।

20 मार्च को रंगीली एकादशी से 24 मार्च पूर्णिमा तक विश्वप्रसिद्ध सरस रंगीली होली का आयोजन होगा। वहीं 25 मार्च को धुलैड़ी के दिन डोलोत्सव का आयोजन होगा. इसके बाद 26 मार्च को ग्रीष्मकालीन सेवाओं का दौर शुरु हो जाएगा। जो भाईदूज तक चलेगा।

भूलकर भी न फेके लड्डू गोपाल के भोग की चढ़ी हुई तुलसी, इस तरह से करें इस्तेमाल

लड्डू गोपाल की पूजा आमतौर पर हिंदु घरों में होती है, ठाकुर जी को घर मे रखने से खुशहाली आती है। वहीं लड्डू गोपाल को रखने के कई सारे नियम होते है। इन नियम का सही तरह से पालन भी किया जाना चाहिए। लड्डू गोपाल के पूजन से लेकर भोग तक तुलसी का बहुत महत्व मना जाता है। भगवान श्रीकृष्ण को तुलसी की मंजरी व तुलसी अधिक प्रिय है, लड्डू गोपाल के भोग में तुलसी जरुर शमिल होती है। इसी तरह से ठाकुर जी को दिन में 4 बार भोग लगाने का खास नियम है। उनके भोग में तुलसी के पत्ते जरुर डाले जाते है। लेकिन भोग लगाने के बाद उन पत्तों का क्या करना चाहिए, आइए आपको बताते हैं।

लड्डू गोपाल के भोग वाली तुलसी को कभी नहीं फेकना चाहिए, इससे आपके ऊपर पाप चढ़ जाएगा। तलुसी को आप इक्ट्ठा करके रख सकते है जिस आप अपने भोजन में बाद में डाल सकते हैं। इसके अलवा आप चढ़े हुए तुलसी के पत्तों को किसी डिब्बे में स्टोर करके रख सकते हैं, फिर जब तुलसी पत्ते न होने पर भगवान को स्नान और भोग लगाने के लिए फिर से इस्तेमाल कर सकते हैं। तुलसी के पत्तों को फेकने के बाजाय आप इस प्रसाद की तरह चबा सकते हैं। इससे आपको काफी लाभ मिलेगा या आप एकादशी के दिन चढ़े हुए तुलसी के पत्तों को दोबारा इस्तेमाल कर सकते हैं।

लड्डू गोपाल के भोग में चढ़ी हुई तुलसी के पत्तों को आप एक लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी में रख सकते हैं। भगवान को चढ़ी हुई तुलसी शुभ फलदायी होती है। इसे लॉकर में रखने से धन में वृद्धि होती है। ऐसा करने से कर्जों से मुक्ति मिल जाती है। अगर आप ने लड्डू गोपाल के भोग में तुलसी की मजरी भी रखी है तो आप उसको इक्ट्ठा करके सुखा लें फिर उसके बाद मिट्टी में उसे डबा दें। अगर मजरी पकी हुई तो आसानी से तुलसी का नया पौधी उग जाएगा। लड्डू गोपाल के भोग में इस्तेमाल में होने वाली तुलसी को आप इक्ट्ठा करके इसे पर्स में रख सकते हैं। इससे आपको कभी धन की कमी नहीं होगी और आर्थिक व्यवस्था भी मजबूत होगी।

22 फरवरी को है गुरु पुष्य नक्षत्र, जानें इसका महत्व

पुष्य नक्षत्र को नक्षत्रों का राजा कहा गया है। ऐसे में गुरुवार के दिन पुष्य योग होना सोने पर सुहागा जैसा माना जाता है। इस साल 22 फरवरी 2024 को गुरु पुष्य नक्षत्र रहेगा। इस दिन सोना-चांदी, भूमि, वाहन आदि चीजों की खरीदारी करने से लंबे समय तक उसमें सफलता और समृद्धि मिलती है।

गुरु पुष्य नक्षत्र शुभ समय - गुरु पुष्य नक्षत्र की शुरुआत 22 फरवरी को सूर्योदय से होगी और समाप्ति शाम 04 बजकर 43 मिनट पर होगी। इस दिन सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि योग,सौभाग्य और शोभन योग का संयोग भी बन रहा है।

पुष्य नक्षत्र का महत्व- सत्ताइस नक्षत्रों में पुष्य आठवां नक्षत्र है। इस नक्षत्र के उदय होने पर शुभ कार्य करना बहुत ही शुभ माना जाता है। सभी नक्षत्रों में इसे सबसे अच्छा माना जाता है। पुष्य नक्षत्र के दौरान चंद्रमा कर्क राशि में स्थित होता है। बारह राशियों में एकमात्र कर्क राशि का स्वामी चंद्रमा है। इसके अलावा चंद्रमा अन्य किसी राशि का स्वामी नहीं है। चंद्रमा धन का देवता है। इसलिए पुष्य नक्षत्र को धन के लिए अत्यन्त पवित्र माना जाता है। इसलिए सोना, चांदी और नए सामानों की खरीदारी के लिए पुष्य नक्षत्र को सबसे पवित्र माना जाता है। इसमें विवाह को छोड़कर सभी कार्य किए जा सकते हैं। इस शुभ योग में शुरू किया गया कारोबार खूब फलता फूलता है।

गुरु पुष्य नक्षत्र में करें ये काम - यह नक्षत्र स्थायी है जो लोग इस नक्षत्र के दौरान कोई भी चीज खरीदते हैं। उस वस्तु का अस्तित्व लंबे समय तक के लिए बना रहता है। शास्त्रों के अनुसार गुरु पुष्य योग में पारद लक्ष्मी घर में स्थापित करना शुभ माना गया है, इससे बरकत का वास होता है। धन की कमी दूर होती है। गुरु पुष्य नक्षत्र पर गुरु बृहस्पति और शनि ग्रह का अधिपत रहता है गुरु बृहस्पति का शुभ आशीर्वाद पाने के लिए उनसे संबंधित चीजें खरीद सकते हैं, जैसे की पीतल के पात्र, पीले रंग के वस्त्र, सोने के आभूषण आदि। पुष्य नक्षत्र में मंत्र दीक्षा, यज्ञ अनुष्ठान, उच्च शिक्षा ग्रहण करना,आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, भूमि क्रय-विक्रय, और वेद पाठ आरंभ करना श्रेष्ठ माना जाता है।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

लोकसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान 9 मार्च के बाद संभव

नईदिल्ली। भारतीय चुनाव आयोग 9 मार्च के बाद लोकसभा चुनाव की तारीख की घोषणा कर सकता है। सूत्रों ने इस बात की जानकारी दी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि पोल पैनल के अधिकारी अंतिम जांच के लिए राज्यों की ओर जा रहे हैं और 2024 का चुनाव कैलेंडर 2019 के समान हो सकता है। पिछले आम चुनावों में तारीखों की घोषणा 10 मार्च, 2019 को की गई थी और मतदान 11 अप्रैल से 19 मई के बीच सात चरणों में हुआ था। जैसा कि देश लोकसभा चुनावों के साथ-साथ कुछ राज्यों में विधानसभा चुनावों के लिए तैयार है, ईसीआई के अधिकारियों की एक टीम इन दिनों राज्यों के दौरे पर जा रही है। सूत्रों के हवाले से कहा गया है कि जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा स्थिति और बलों की उपलब्धता की जांच के लिए प्रतिनिधियों के 8-9 मार्च को सरकारी अधिकारियों से मिलने की उम्मीद है। 12-13 मार्च को वे जमीनी स्थिति का विश्लेषण करने के लिए फिर से जम्मू-कश्मीर का दौरा करेंगे।

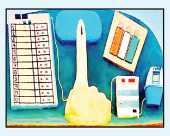

अमेठी और रायबरेली की उपेक्षा कर रही मोदी सरकार : खड़गे

लखनऊ। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भाजपा पर उत्तर प्रदेश में अमेठी और रायबरेली के विकास की उपेक्षा करने का आरोप लगाया। खड़गे पार्टी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान उत्तर प्रदेश के अमेठी में एक सार्वजनिक सभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के कार्यकाल में अमेठी में करोड़ों रुपये की परियोजनाएं स्वीकृत हुईं लेकिन उनमें से ज्यादातर लंबित रहीं। मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि परियोजनाएं अभी भी अधूरी क्यों हैं। वे अमेठी और रायबरेली के लिए काम नहीं करना चाहते। उन्होंने उन परियोजनाओं को ख़त्म कर दिया है जो अमेठी और रायबरेली के लिए थीं। खड़गे ने साफ तौर पर कहा कि भाजपा रायबरेली और अमेठी के लोगों के साथ दुश्मनी का बीज बोने की साजिश कर रही है। उन्होंने प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के अबकी बार, 400 पार के नारे की भी आलोचना की, जिसमें भविष्यवाणी की गई कि भाजपा आगामी चुनावों में 100 सीटों से आगे नहीं बढ़ेगी।

नकुलनाथ की उम्मीदवारी पर कांग्रेस की आई प्रतिक्रिया

भोपाल। कमलनाथ के भाजपा से हाथ मिलाने की अफवाहों के बीच कांग्रेस ने मंगलवार को उनके गढ़ छिंदवाड़ा से उनके बेटे नकुलनाथ की उम्मीदवारी पर बड़ी टिप्पणी की। कांग्रेस महासचिव जितेंद्र सिंह, जो कथित तौर पर पार्टी के विधायकों का मूड जानने के लिए मध्य प्रदेश का दौरा कर रहे हैं, ने कहा कि वह एक मजबूत उम्मीदवार हैं। सिंह ने यह भी संकेत दिया कि नकुलनाथ पार्टी के उम्मीदवार हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि वह वहां (छिंदवाड़ा) से मजबूत उम्मीदवार हैं और निश्चित रूप से चुनाव लड़ेंगे। कमल नाथ के कांग्रेस छोड़ने की खबरों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सिंह ने दावा किया कि अफवाहें भाजपा द्वारा फैलाई गई हैं। उन्होंने कहा कि ऐसा कुछ भी नहीं है। ये सभी अफवाहें (कमलनाथ के कांग्रेस छोड़ने की) भाजपा द्वारा फैलाई गई हैं। नकुलनाथ छिंदवाड़ा से मौजूदा सांसद हैं। वह मध्य प्रदेश से एकमात्र कांग्रेस सांसद हैं।

तेजस्वी बिहार में 10 दिन की जन विश्वास यात्रा पर निकले

पटना। राष्ट्रीय जनता दल के नेता तेजस्वी यादव मंगलवार को बिहार के तूफानी दौरे पर निकले हैं। इस दौरान उनके 11 दिनों के भीतर राज्य के सभी 38 जिलों को कवर करने की संभावना है। जन विश्वास यात्रा नामक एक जन संपर्क कार्यक्रम, जिसका उद्देश्य सार्वजनिक विश्वास जीतना है। यादव ने मुजफ्फरपुर से दौरे की शुरुआत की। मोतिहारी, जहां पूर्वी चंपारण जिले का मुख्यालय है, वहां रात्रि विश्राम के लिए पहुंचने से पहले उनका सीतामढी और शिवहर में दो और सार्वजनिक बैठकों को संबोधित करने का कार्यक्रम है। दौरे की शुरुआत की पूर्व संध्या पर, यादव सोमवार देर शाम फेसबुक पर लाइव हुए जब उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को पुराने जमाने का नेता कहा, जो अपनी कुर्सी खुद ही छोड़ देंगे तो बेहतर होगा। जन विश्वास यात्रा की शुरुआत से पहले राजद नेता तेजस्वी यादव ने अपने आवास पर पूजा की। उन्होंने कहा कि हम जनता के बीच जा रहे हैं। जन विश्वास यात्रा आज से शुरू होने जा रही है।

अखिलेश से पूरी तरह अलग हुए स्वामी प्रसाद मौर्य के रास्ते

लखनऊ। स्वामी प्रसाद मौर्य ने मंगलवार को समाजवादी पार्टी से अपना इस्तीफा दे दिया। उत्तर प्रदेश के पूर्व कैबिनेट मंत्री और प्रमुख ओबीसी नेता स्वामी प्रसाद मौर्य 2022 में समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए थे और फाजिलनगर से विधानसभा चुनाव लड़े थे लेकिन असफल रहे। मौर्य ने पिछले हफ्ते पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव पद से इस्तीफा दे दिया था और नेतृत्व पर उनके साथ भेदभाव करने और उनकी टिप्पणियों पर उनका बचाव नहीं करने का आरोप लगाया था। मौर्य ने रामचरितमानस और अयोध्या मंदिर प्रतिष्ठा समारोह पर विवादित बयान दिया था। एमएलसी पद भी उन्होंने छोड़ दिया है। मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहा कि मैं स्वच्छ राजनीति में विश्वास करता हूं।अलग होने के पीछे का कारण वैचारिक मतभेद है। मेरे अखिलेश यादव और समाजवादी पार्टी के साथ वैचारिक मतभेद रहे हैं। मैंने अखिलेश यादव को देखा, वह समाजवादी विचारधारा के खिलाफ जा रहे हैं।

विकास की राह में रोड़ा थी अनुच्छेद 370, प्रधानमंत्री बोले-

हम विकसित जम्मू-कश्मीर बनाकर रहेंगे : मोदी

श्रीनगर। राज्य में कई विकास परियोजनाओं की शुरुआत करने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज का दिन जम्मू-कश्मीर के लिए एक उल्लेखनीय है। जम्मू में 32,000 करोड़ रुपये की परियोजनाओं की शुरुआत करने के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने कहा जम्मू कश्मीर में परियोजनाएं क्षेत्र के समग्र विकास को बढ़ावा देंगी। उन्होंने कहा कि जम्मू कश्मीर में यह पहला अवसर है कि सरकार लोगों के द्वार पर पहुंची है, यह मोदी की गारंटी है कि लगातार ऐसा होता रहेगा। उन्होंने कहा कि ऐसी सरकार जिसकी प्राथमिकता केवल एक परिवार का कल्याण है, वह आम जनता के कल्याण की नहीं सोच सकती। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि विकसित भारत का मतलब है विकसित जम्मू-कश्मीर।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पिछले 10 वर्षों में भारत में रिकॉर्ड संख्या में स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय स्थापित हुए; अकेले जम्मू कश्मीर में 50 नये डिग्री कॉलेज स्थापित किये गये। उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 370 जम्मू-कश्मीर के विकास में मुख्य बाधा थी, भाजपा सरकार ने इसे निरस्त कर दिया। उन्होंने कहा कि अब हमने विकसित जम्मू-कश्मीर का संकल्प लिया है। मुझे आप पर विश्वास है कि हम विकसित जम्मू-कश्मीर बनाकर रहेंगे। 70-70 साल से अधूरे आपके सपने आने वाले कुछ ही वर्षों में मोदी पूरे करके देगा।

मोदी ने कहा कि एक वो दिन भी थे, जब जम्मू-कश्मीर से सिर्फ निराशा की खबरें आती थीं। बम, बंदूक, अपहरण, अलगाव... ऐसी ही बातें जम्मू-कश्मीर का दुर्भाग्य बना दी गई थीं। लेकिन आज जम्मू-कश्मीर विकसित होने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर बहुत दशकों तक परिवारवाद की राजनीति का शिकार रहा है। परिवारवाद की राजनीति करने वालों ने हमेशा सिर्फ अपना स्वार्थ देखा है, आपके हितों की चिंता नहीं की है। परिवारवाद की राजनीति का सबसे ज्यादा अगर कोई नुकसान उठाता है, तो हमारे युवा उठाते हैं।

नरेंद्र मोदी ने कहा कि जो सरकारें सिर्फ एक परिवार को आगे बढ़ाने में जुटी रहती हैं, वो सरकारें अपने राज्य के दूसरे युवाओं का भविष्य ताक पर रख देती हैं। ऐसी परिवारवादी सरकारें युवाओं के लिए योजनाएं बनाने पर

भी प्राथमिकता नहीं देती। सिर्फ अपने परिवार के बारे में सोचने वाले लोग कभी आपके परिवार की चिंता नहीं करेंगे। मुझे खुशी है कि जम्मू-कश्मीर को इस परिवार राजनीति से मुक्ति मिल रही है। उन्होंने कहा कि नया भारत अपनी वर्तमान पीढ़ी को आधुनिक शिक्षा देने के लिए ज्यादा से ज्यादा खर्च कर रहा है। बीते 10 साल में देश में रिकॉर्ड संख्या में स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटीज का निर्माण हुआ है।

नरेंद्र मोदी ने कहा कि 370 के बाद 370 होना चाहिए! संविधान के अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के बाद, मैं आप सभी से आगामी चुनावों में भाजापा को 370 (सीटें) और एनडीए को 400+ सीटें देने का आग्रह करता हूं। उन्होंने कहा कि आज हम एक नया जम्मू-कश्मीर बनते हुए देख रहे हैं। प्रदेश के विकास में सबसे बड़ी दीवार अनुच्छेद-370 की थी, इस दीवार को भाजपा सरकार ने हटा दिया है। अब जम्मू कश्मीर संतुलित विकास की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि मैंने सुना है, इसी हफ्ते 370 को लेकर कोई फिल्म आने वाली है। पूरे देश में आपकी जय जयकार होने वाली है। अच्छा है, लोगों को सही जानकारी मिलेगी।

प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में हम पूरे देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे : राजनाथ सिंह

लखनऊ। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वैश्विक नेताओं की आकाशगंगा में सबसे चमकीला सितारा हैं और अपने अद्वितीय दृष्टिकोण के कारण दूसरों से अलग हैं। सिंह ने 'उत्तर प्रदेश ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट' के दौरान प्राप्त निवेश प्रस्तावों के लिए लखनऊ में चौथे भूमि पूजन समारोह के उद्घाटन कार्यक्रम में कहा कि पूरा भारत प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में प्रगति कर रहा है। उन्होंने कहा, अन्य जन प्रतिनिधि संकटों, समस्याओं या तात्कालिक लाभ से परे देखने में असमर्थ हैं, जबकि प्रधानमंत्री मोदी की दूरदर्शिता उन्हें अवसरों, समाधानों और दीर्घकालिक परिणामों को देखने में सक्षम बनाती है। लखनऊ से सांसद राजनाथ सिंह ने कहा, पिछले सात वर्षों में उत्तर प्रदेश में निवेश के अनुकूल माहौल बनाने में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रयासों के परिणामस्वरूप निवेश में वर्तमान वृद्धि हुई है। यह सिर्फ शुरुआत है। उन्होंने यह विश्वास भी जताया कि उत्तर प्रदेश विकास के नये आयाम स्थापित करेगा। सिंह ने कहा, प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में हम सामूहिक रूप से राज्य और पूरे देश को वैश्विक मंच पर नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। उन्होंने कहा, एक समय था जब जन प्रतिनिधियों और उद्योगपतियों के बीच बैठकों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता था। उद्योगपतियों से मिलना-जुलना किसी भी जन प्रतिनिधि के लिए राजनीतिक जोखिम से कम नहीं माना जाता था। भाजपा नेता ने कहा, ऐसा माना जाता था कि राजनीतिक नेताओं और उद्योगपतियों के बीच साझेदारी देश के विकास के लिए अच्छी नहीं है। किसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि राजनीतिक नेता और उद्योगपति साफ इरादों से काम करेंगे तो देश आगे बढ़ेगा। सिंह ने कहा, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे तो देश ने देखा कि कैसे उन्होंने उद्योगपतियों के साथ मिलकर गुजरात में परिवर्तनकारी बदलाव लाए। इस बदलाव की खुशबू न केवल पूरे भारत में फैली बल्कि विश्व स्तर पर भी दूर-दूर तक पहुंची।

लोकसभा चुनाव : इंडी गठबंधन को एक और बड़ा झटका

यूपी में अलग हुए कांग्रेस और सपा के रास्ते!

लखनऊ। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी (सपा) के बीच बहुप्रतीक्षित गठबंधन टूट गया है। सूत्रों ने इस बात की जानकारी दी है। सोमवार देर रात हुई बातचीत में रुकावट मुख्य रूप से मुरादाबाद मंडल में तीन महत्वपूर्ण सीटों के आवंटन पर असहमति के कारण थी। यह तब हुआ जब सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने यह स्पष्ट कर दिया कि उनकी पार्टी राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा में तब तक भाग नहीं लेगी जब तक कि कांग्रेस के साथ सीट-बंटवारे के समझौते को अंतिम रूप नहीं दिया जाता। समाजवादी पार्टी का दावा है कि कांग्रेस बार-बार अपनी लिस्ट बदल रही है। उधर, कांग्रेस का कहना है कि सपा ने जो सत्रह सीटें दी हैं, उनमें से वह पांच से छह सीटें कांग्रेस के सिंबल पर अपने उम्मीदवार उतारना चाहती है।

लंबी चर्चाओं और अधिकांश सीटों पर आम सहमति तक पहुंचने के लिए दोनों पक्षों की स्पष्ट इच्छा के बावजूद, वार्ता में मुरादाबाद के संबंध में एक दुर्गम बाधा उत्पन्न हुई, और कोई भी पक्ष पीछे हटने को तैयार नहीं था। कांग्रेस ने समाजवादी पार्टी से बिजनोर सीट भी मांगी थी, लेकिन सपा मुरादाबाद या बिजनोर सीट देने को तैयार नहीं थी, जिससे गतिरोध पैदा हो गया और अंततः संभावित गठबंधन पटरी से उतर गया। अखिलेश यादव की पार्टी ने सोमवार को विवादास्पद सीटों को छोड़कर, कांग्रेस को 17 लोकसभा सीटों की अंतिम पेशकश की थी। इसने पहले सबसे पुरानी पार्टी को 11 सीटों की पेशकश की थी। सूत्रों ने बताया कि जिन सीटों पर सहमति बनी है उनमें अमेठी, रायबरेली, वाराणसी, प्रयागराज, देवरिया, बांसगांव, महाराजगंज, बाराबंकी, कानपुर, झांसी, मथुरा, फतेहपुर सीकरी, गाजियाबाद, बुलंदशहर, हाथरस, सहारनपुर जैसे हाई-प्रोफाइल निर्वाचन क्षेत्र शामिल हैं। हालाँकि, बलिया, मुरादाबाद और बिजनौर को देने से सपा का इंकार गठबंधन तोड़ने वाला साबित हुआ। सूत्रों के

मुताबिक, समाजवादी पार्टी ने 17 उम्मीदवारों की जो सूची भेजी थी, उसमें कांग्रेस कुछ बदलाव चाहती थी। हालांकि, यूपी की क्षेत्रीय पार्टी किसी भी बदलाव के पक्ष में नहीं है। कांग्रेस को मुरादाबाद, सहारनपुर, बिजनौर, मेरठ, अमरोहा और लखनऊ चाहिए लेकिन समाजवादी पार्टी इसके लिए तैयार नहीं है।

मानहानि के मामले में राहुल गांधी को मिली जमानत

कांग्रेस नेता राहुल गांधी को मानहानी केस में जमानत मिल गई। उन्होंने कोर्ट से कहा कि वे इस मामले में निर्दोष हैं। बता दें कि उन्हें सुल्तानपुर की अदालत ने तलब किया था। कांग्रेस नेता राहुल गांधी को 2018 में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को हत्या के आरोपी के रूप में संदर्भित करने के लिए मानहानि मामले में उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर की एक विशेष अदालत ने मंगलवार को जमानत दे दी। राहुल गांधी को 25,000 रुपये की जमानत राशि और इतनी ही राशि के निजी मुचलके पर जमानत दी गई। उन्होंने अपनी टिप्पणी में किसी भी गलत काम से इनकार करते हुए अदालत में खुद को निर्दोष बताया। यह मामला 2018 के कर्नाटक विधानसभा चुनावों के दौरान बेंगलुरु में गांधी द्वारा आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन से उपजा है, जहां उन्होंने कथित तौर पर शाह के बारे में आपत्तिजनक टिप्पणियां की थीं।

खेल
प्रमुख समाचार

चौथे टेस्ट में भारत के खिलाफ गेंदबाजी कर सकते हैं बेन स्टोक्स

नईदिल्ली। भारत के खिलाफ लगातार दो टेस्ट मैच में शिकस्त ने इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स को गेंदबाजी में जल्द वापसी पर विचार करने के लिए मजबूर कर दिया है। वहीं इंग्लैंड टीम के मुख्य कोच ब्रेंडन मैकुलम ने स्वीकार किया है कि यह एक अच्छा संकेत है लेकिन वे नहीं चाहते कि यह ऑलराउंडर अनावश्यक रूप से जल्दबाजी करें। अब भी घुटने की सर्जरी से उबर रहे स्टोक्स ने पिछले साल जून में दूसरे एशेज टेस्ट के बाद से गेंदबाजी नहीं की है।

मैकुलम के हवाले से सोमवार को 'ईएसपीएनक्रिकइंफो' ने कहा, ''यह अच्छा है कि वह उस स्थिति में पहुंच रहा है जहां उसे लगता है कि वह गेंदबाजी कर सकता है। लेकिन बेन चतुर है, वह काफी चतुर है। वह तब तक गेंदबाजी नहीं करेगा जब तक उसे नहीं लगता कि वह वैध रूप से गेंदबाजी करने में सक्षम है। समस्या तब होगी जब वह गेंदबाजी स्पैल शुरू करेगा और फिर उसे खत्म नहीं कर पाएगा। इसलिए हम देखेंगे कि क्या होता है।''

ब्रेंडन मैकुलम ने आगे कहा कि, हमें देखना होगा कि खतरा कहां है और उसे इससे दूर करने की कोशिश करनी होगी। लेकिन यह एक अच्छा संकेत है।'' राजकोट टेस्ट से पहले स्टोक्स ने कहा था कि उन्होंने अपने फिजियोथेरेपिस्ट से वादा किया था कि वह मौजूदा श्रृंखला में गेंदबाजी नहीं करेंगे। लेकिन रविवार को तीसरे टेस्ट में 434 रन की हार के बाद जब उनसे पूछा गया कि क्या वह अपनी ऑलराउंडर की भूमिका दोबारा निभाएंगे तो स्टोक्स ने कहा, ''मैं हां नहीं कह रहा हूं, मैं ना भी नहीं कह रहा हूं। उन्होंने कहा, ''मैं ज्यादातर चीजों के बारे में हमेशा बहुत आशावादी रहता हूं। मेडिकल टीम के साथ विस्तृत बातचीत होगी कि मुझ पर काम का कितना बोझ है जिससे कि मुझे कोई बड़ा खतरा नहीं हो।''

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

सेंसेक्स 73 हजार के पार, निफ्टी ऑल टाइम हाई लेवल पर

नईदिल्ली। भारतीय शेयर बाजार में तेजी का सिलसिला जारी है मंगलवार को शुरूआती गिरावट के उबरने के बाद लगातार छठे ट्रेडिंग सेशन में स्टॉक मार्केट बढ़त के साथ क्लोज हुई। इंडेक्स में हैवी वेटेज रखने वाले एचडीएफसी बैंक समेत अन्य बैंकिंग शेयरों में तेजी और निफ्टी-50 के नए ऑल टाइम हाई लेवल पर पहुंचने के चलते बाजार ग्रीन कलर में बंद हुए। तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स आज पिछले बंद भाव 72,708.16 के मुकाबले मामूली बढ़त के साथ 72,727.87 अंक पर खुला। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 72,510.24 अंक के लौ और 73,130.69 के हाईएस्ट लेवल तक गया। अंत में यह 0.48 प्रतिशत या 349.24 अंक बढ़कर 73,057.40 पर बंद हुआ। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 भी नयी ऊंचाई पर पहुंच गया। 50 कंपनियों वाला निफ़्टी आज 0.34 प्रतिशत या 74.70 अंक की बढ़त के साथ 22,196.95 पर बंद हुआ, जो इसका ऑल टाइम हाई लेवल है।

विभोर स्टील ट्यूब्स के आईपीओ ने निवेशकों को किया मालामाल

नईदिल्ली। विभोर स्टील ट्यूब्स के आईपीओ की शेयर बाजार में मंगलवार को ब्लॉकबस्टर एंट्री हुई। हृस्श्व पर विभोर स्टील का शेयर 425 रुपये पर लिस्ट हुआ, जो 151 रुपये के इश्यू प्राइस के मुकाबले 181.5 प्रतिशत ज्यादा है। वहीं, बीएसई पर विभोर स्टील ट्यूब्स का शेयर शानदार रिटर्न के साथ 421 रुपये पर लिस्ट हुआ जो अपने इश्यू प्राइस या प्राइस बैंड की तुलना में 178.81 प्रतिशत ज्यादा है। बता दें कि एक्सपर्ट्स ने विभोर स्टील ट्यूब्स के आईपीओ के 260 से 280 रुपये प्रति शेयर पर लिस्ट होने का अनुमान जताया था। विभोर स्टील ट्यूब्स आईपीओ को सब्सक्रिप्शन के तीन दिन जबरदस्त रिस्पांस मिला था। बीएसई के आंकड़ों के मुताबिक, आखिरी दिन विभोर स्टील ट्यूब्स आईपीओ का सब्सक्रिप्शन 298.86 गुना बुक हुआ था।

सोनी और जी एंटरटेनमेंट के बीच डील में नया मोड़!

नईदिल्ली। ज़ी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज और सोनी ग्रुप 10 बिलियन डॉलर की मर्जर डील को पूरा करने के लिए एक बार फिर बातचीत कर रहे हैं। दोनों कंपनियों ने पिछले 15 दिनों में मुंबई में कई बैठकें की हैं। इससे पहले सोनी ने ज़ी एंटरटेनमेंट के साथ अपनी भारतीय कंपनी के 10 बिलियन डॉलर के मर्जर समझौते की कुछ 'फाइनेंशियल शर्तों' को पूरा करने में विफल रहने का हवाला देते हुए सौदा रद्द कर दिया था। रिपोर्ट के अनुसार, सोनी के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी पुनीत गोयनका ने सोनी की इस मांग पर सहमति व्यक्त की है कि वह मर्जर के बाद बनने वाली इकाई के सीईओ नहीं बनेंगे। हालांकि, जापान की कंपनी ने कहा है कि गोयनका मर्जर के बाद बनने वाली इकाई के लिए सबसे अच्छे सलाहकार हो सकते हैं। रिपोर्ट के अनुसार, ज़ी को अगले 24 से 48 घंटों में सोनी को बताना होगा कि क्या वह नियम और शर्तों को मानने के लिए तैयार है या नहीं।

प्याज के निर्यात पर प्रतिबंध 31 मार्च तक जारी रहेगा

नईदिल्ली। प्याज के निर्यात पर प्रतिबंध पहले से घोषित समय सीमा 31 मार्च तक जारी रहेगा। सरकार की कीमतों को नियंत्रण में रखने और घरेलू उपलब्धता सुनिश्चित करने की कोशिश जारी है। एक शीर्ष अधिकारी ने मंगलवार को यह जानकारी दी। सरकार ने आठ दिसंबर 2023 को 31 मार्च तक प्याज के निर्यात पर रोक लगा दी थी। उपभोक्ता मामलों के सचिव रोहित कुमार सिंह ने कहा, ''प्याज निर्यात पर प्रतिबंध नहीं हटाया गया है। यह जारी है। मौजूदा स्थिति में कोई बदलाव नहीं है।'' उन्होंने कहा कि सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता घरेलू उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर प्याज की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित कराना है। निर्यात प्रतिबंध हटाने की खबरों के बीच देश के सबसे बड़े थोक प्याज बाजार लासलगांव में 19 फरवरी को थोक प्याज की कीमतें 40.62 प्रतिशत बढ़कर 1,800 रुपये प्रति क्विंटल हो गईं।

यूपी ग्लोबल इन्वेस्टर्स सम्मिट की सफलता ने दुनिया का ध्यान आकर्षित किया

उमेश चतुर्वेदी

पिछले साल बारह फरवरी को उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में आयोजित यूपी ग्लोबल इन्वेस्टर्स सम्मिट को गैरभाजपा दलों ने गंभीरता से नहीं लिया था...विपक्षी दलों ने इसकी सफलता पर सवाल उठाए थे। लेकिन इस आयोजन के एक साल बीतने के बाद जो आंकड़े सामने आए हैं, उससे पता चलता है कि सम्मेलन का आयोजन उत्तर प्रदेश की आर्थिक सेहत की दिशा में कारगर साबित हुआ है। सिर्फ एक साल की छोटी अवधि में ही उत्तर प्रदेश में करीब 10 लाख करोड़ रुपये का अनुमानित निवेश प्रस्ताव आया है। जिसके जरिए उम्मीद की जा रही है कि राज्य में करीब चौदह हजार योजनाएं लागू की जा सकेंगी, जिनके जरिए करीब साढ़े तैंतीस लाख रोजगार पैदा होंगे। 19 फरवरी, 2024 को राजधानी लखनऊ आयोजित होने जा रहे ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह यानीजीबीसी को इसी दिशा में बड़ा प्रयास माना जा रहा है। उत्तर प्रदेश सरकार को अनुमान है कि इस आयोजन में तीन हजार से प्रतिभागी शामिल होंगे, जिनमें उद्योगपति, जानीमानी कंपनियां, विदेशी निवेशक, राजनयिक और दूसरे जाने-माने लोग होंगे।

उद्योगपति और कारोबारी तभी किसी राज्य में अपनी रकम लगाने का जोखिम उठाते हैं, जब उनका उस राज्य या माटी पर भरोसा होता है। यह भरोसा आता है, राज्य की कानून व्यवस्था बेहतर बनने की वजह से। उत्तर प्रदेश की छवि कभी अराजक राज्य के तौर पर रही। लेकिन कहना न होगा कि योगी सरकार ने जिस तरह कानून व्यवस्था के मोर्चे को दुरुस्त किया है, उससे राज्य में कानून का शासन स्थापित है। अराजकता और गुंडागर्दी पर लगाम है। राज्य कभी दंगों के लिए भी कुख्यात था, लेकिन अब उत्तर

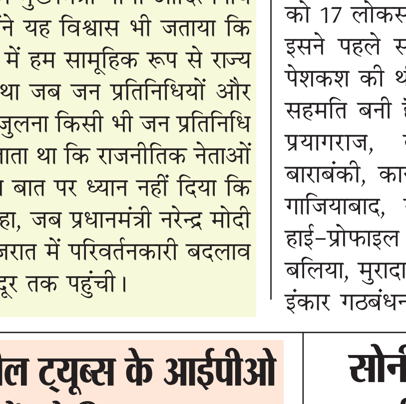

प्रदेश सांप्रदायिक दंगों से दूर है। कहना न होगा कि निवेशक के लिए राज्य बेहतर माहौल मुहैया कराने में कामयाब रहा है। इसमें दो राय नहीं कि निवेशक वहीं निवेश करना चाहता है, जहां उसे आराम से कारोबार और उत्पादन करने दिया जाए। भारतीय जनता पार्टी के दूसरे शासन काल में उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था काबू में है। यही वजह है कि कभी बीमारू राज्यों में शामिल उत्तर प्रदेश में अब निवेशक आने से हिचक नहीं रहे हैं।

राज्य सरकार का दावा है चौथे ग्राउंड ब्रेंकिंग समारोह में जुटने वाले उद्योगपति राज्य में बड़ा निवेश करने वाले हैं। राज्य सरकार के आंकड़ों पर भरोसा करें तो राज्य में हीरानंदानी समूह के साथ सिफी टेक्नॉलाजी, वीएएलएस डेवलेपर्स, एसटीटी ग्लोबल और जैक्सन लि.समूचे राज्य में डेटा सेंटर स्थापित करने जा रहे हैं।

इसी तरह वाहन उत्पादक कंपनियां अशोक लीलैंड और यामाहा भी उत्तर प्रदेश में कई जगह अपने उत्पादन केंद्र शुरू करने की तैयारी में हैं। राज्य की बिजली व्यवस्था दुरुस्त हो, निवेशकों को भरपूर बिजली मिले, इसके लिए राज्य सरकार ऊर्जा के तीनों स्रोतों, थर्मल, जल विद्युत और सौर ऊर्जा में निजी और सार्वजनिक-दोनों क्षेत्रों की कंपनियों को आमंत्रित किया है। राज्य सरकार का दावा है कि एनटीपीसी के साथ ही ग्रीनको ग्रुप, टोरेंट पावर, एसीएमई ग्रुप, जेएसडब्ल्यू एनर्जी पीएसपी सिक्स और टिस्को राज्य में कई तरह की ऊर्जा परियोजनाएं लगाने जा रही हैं। एम थ्री एम इंडिया, आईएनजीकेए, द हाउस ऑफ अभिनंदन लोढ़ा और गोदरेज प्रॉपर्टीज ने राज्य के आवासीय परिदृश्य को बदलने की तैयारी में हैं तो राज्य में हथियार निर्माण उद्योग, सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री, हॉस्पिटैलिटी आदि में भी भारी निवेश आ रहा है। राज्य सरकार ने अपने पहले कार्यकाल में साल 2018 में पहली बार यूपी इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन किया था। जिसमें करीब 4.28 लाख करोड़ रुपये के निवेश पर हस्ताक्षर हुए थे। इसके बाद जुलाई-2018 और जुलाई-2019 में ग्राउंड ब्रेकिंग कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिनसे करीब 130 करोड़ के निवेश प्रस्ताव आए। जिनके जरिए 290 परियोजनाएं राज्य में स्थापित हो चुकी हैं।

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

मोदी की गारंटी
विष्णु का सुशासन

छत्तीसगढ़ शासन

हमने बनाया है
हम ही संवारेंगे

त्वरित निर्णय के 2 माह

अन्नदाताओं के लिए

- 13 लाख किसानों को धान के बकाया बोनस की राशि 3716 करोड़ रुपए तत्काल जारी करने का निर्णय
- किसानों से प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान खरीदी का निर्णय
- 'कृषक उन्नति योजना' के तहत 10,000 करोड़ रुपये का प्रावधान

ग्रामीणों के लिए

- 50 लाख ग्रामीण परिवारों को निःशुल्क नल कनेक्शन 4,500 करोड़ रुपये का प्रावधान

गरीबों के लिए

- 69.92 लाख गरीब परिवारों को पांच वर्षों तक निःशुल्क राशन प्रदाय का निर्णय
- प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 18 लाख घरों के निर्माण के लिए 8,369 करोड़ रुपये का प्रावधान
- 'दीनदयाल उपाध्याय भूमिहीन कृषि मजदूर योजना' में भूमिहीन कृषि मजदूरों को 10,000 रुपये वार्षिक सहायता का निर्णय

महिलाओं के लिए

- 'महतारी वंदन योजना' के तहत महिलाओं को प्रतिमाह 1000 रुपए की दर से वार्षिक 12,000 रुपए आर्थिक सहायता का निर्णय

युवाओं के लिए

- पीएससी परीक्षा घोटाले की सीबीआई जांच का निर्णय
- युवा स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए छत्तीसगढ़ उद्यम क्रांति योजना लागू करने का निर्णय
- पुलिस विभाग सहित विभिन्न शासकीय भर्तियों में युवाओं को निर्धारित आयु सीमा में 5 वर्षों की छूट का निर्णय

सभी छत्तीसगढ़वासियों के लिए

- अयोध्या यात्रा के लिए निःशुल्क 'रामलला दर्शन योजना' लागू करने का निर्णय

आदिवासियों के लिए

- तेंदूपत्ता संग्राहकों को 4,000 रुपये प्रति मानक बोरा से बढ़ाकर 5,500 रुपये प्रति मानक बोरा भुगतान का निर्णय

छत्तीसगढ़ के त्वरित विकास के लिए

- कटघोरा से डोंगरगढ़ रेल लाइन निर्माण के लिए 300 करोड़ रुपए का प्रावधान

सामान्य परिवारों के लिए

- प्रति माह 400 यूनिट तक आधे दाम पर बिजली प्रदाय का निर्णय

भ्रष्टाचार निवारण के लिए

- शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन की निगरानी के लिए 'अटल मॉनिटरिंग पोर्टल' की स्थापना का निर्णय
- कोल परिवहन की पारदर्शी प्रक्रिया के लिए ऑनलाइन परमिट व्यवस्था लागू करने का निर्णय

छत्तीसगढ़ी संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के लिए

- छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के शहर राजिम के वैभव को फिर से स्थापित करने के लिए राजिम कुंभ (कल्प) का निर्णय

सरल, निर्भीक
निर्णायक नेतृत्व

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

संवाद- 39721/133

सबका साथ-सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास

Visit us : ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.